RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 मई 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 मई-01 जून 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 04
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

- संघ प्रमुखों का प्रवास
- अक्षय तृतीया पारणा
- अभिमोक्षम् शिविर
- समता भवन उद्घाटन
- संथारा सहित पंडितमरण
- श्रद्धांजलि सभा

संघ शिखर सदस्य



श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067



श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238



श्री रिद्धुकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161



श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289



श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222



श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972



स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427



समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469



स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472



श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109



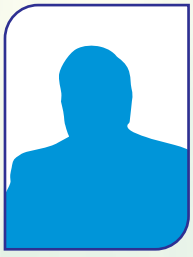
श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237



श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134



श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966



गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441



श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

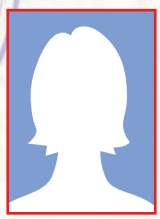
संघ महाप्रभावक सदस्य


श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830


श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618


श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443


स्व. श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535


स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत


श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544


श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624


श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590


स्व. श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376


श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697


श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559


श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353


श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813


श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732


श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002


श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715


श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606


श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

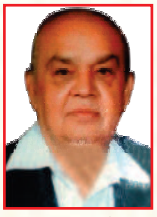

श्रीमती संतोषदेवी मोदी
भिलाई
MID No. 135692


श्री कमलजी बैद
मुंबई
MID No. 141022


श्री विजयजी (कमलादेवी)
गोलछा–बीकानेर
MID No. 127729


श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

चतुर्थ चरण


श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512


स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647


श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280


श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिलकुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्रीमती मनोरमा देवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्रीमती गुलाब देवी भंसाली-गंगाशहर * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव

भव्यातिभव्य
दीक्षा महोत्सव निवेदन

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में दिनांक **9 जून 2024** को **बेगूँ, जिला चित्तौड़गढ़** की पावन धरा पर भव्य जैन भागवती दीक्षा प्रसंग होना संभावित है। सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं एवं स्थानीय संघों से करबद्ध निवेदन है कि इस अवसर पर सपरिवार एवं ससंघ पधारकर दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर कर्मनिर्जरा के अद्भुत प्रसंग का लाभ लेवें। इस पावन अवसर पर पधारने से आपको अत्र विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

संपर्क सूत्र	9414733769 7023400590 9460163421	आवास-निवास व्यवस्था	9414730547 9001859020

निवेदक

बेगूँ (चित्तौड़गढ़ (राज.)

* श्री साधुमार्गी जैन संघ
* समता युवा संघ
* समता महिला मंडल
* समता बहू मंडल

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।



शिखर महोत्सव 2024

आचार्य श्री रामेश पावन वर्षावास प्रसंग

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता,
व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर
श्री राजेश मुनि जी म.सा

आदि ठाणा के पावन वर्षावास – 2024 का प्रसंग रखे जाने वाले
समस्त आगारों सहित भीलवाड़ा संघ को प्राप्त हुआ है ।

सभी सम्मानित श्रावक–श्राविकाओं व संघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर संघ एवं परिवार सहित पधारकर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

स्थानक – श्री महावीर सेवा समिति, अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा
प्रवचन स्थल – रा.प्रा.वि. धांधोलाई, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा

संयोजक	कार्यालय प्रमुख	चौका व्यवस्था	आवास-निवास व्यवस्था
94141-15394	95719-90108	94141-15624 94605-76530	95713-90108

निवेदक

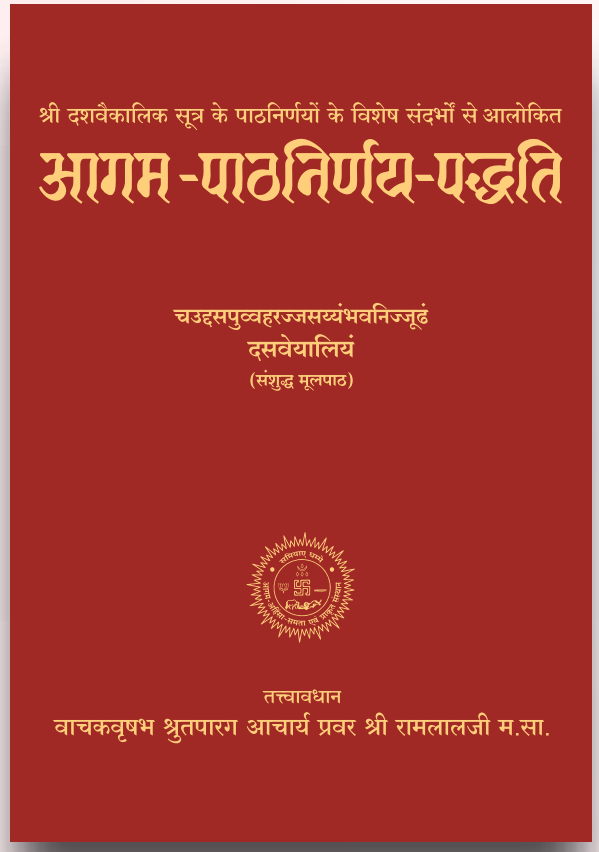
श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा

* समता युवा संघ * समता महिला मंडल * समता बहू मंडल *

आगम व तत्त्व संबंधी पुस्तक

समग्र अध्ययन के अनंतर अनुभूति हुई कि जैन शासन में आगमों की धरोहर को बचाने की तड़प रखने वाले महामुनि एवं महासाध्वियाँ विद्यमान हैं। स्वयं आचार्यश्री जी इस महत्कार्य को निर्देशित कर रहे हैं। इस कारण इस कार्य में गहनता एवं परिपक्वता भी प्रविष्ट हुई है। आगमों की पाठशुद्धि के लिए समय-समय पर प्रयास हुए हैं, सब प्रयासों के सत्परिणाम भी आए हैं, मगर आपका प्रयास अधिक व्यापक, वैज्ञानिकतापूर्ण, संपूर्णता सूचक एवं विश्वसनीय प्रतीत हुआ।

-बहुश्रुत श्री जय मुनि जी म.सा.



पुस्तक का नाम : **आगम-पाठनिर्णय-पद्धति**

तत्त्वावधान : **वाचकवृषभ श्रुतपारग आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा.**

प्रकाशक : **आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर**

मूल्य : **₹2,100/-**

पृष्ठ : **213**

विवरण : इस शोध ग्रंथ में वर्षों की निरंतर गहन शोध के अनंतर आगमों के शुद्ध पाठों का व्याकरण, छंद, कोष, आयुर्वेदिक साहित्य, बौद्ध साहित्य इत्यादि विभिन्न संदर्भों के माध्यम से निर्णय कैसे किया जा सकता है, उसकी पद्धति का वर्णन किया गया है और साथ ही उस पद्धति को विशेष स्पष्ट करने हेतु श्री दशवैकालिक सूत्र के पाठों को संदर्भ रूप में स्वीकार कर उसके आधार से एक अनुपम विचारणा प्रस्तुत की गई है।

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 11
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 13
गुरुचरण विहार..... 14
विविध समाचार..... 43
विविध भेंट मार्फत..... 50
विनम्र श्रद्धांजलि..... 55
भक्ति रस : ऐतिहासिक शिविर अभिमोक्षम्..... 58
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 60
विहार सूची..... 64

सुविचार

आत्मा

ज्ञान दर्शन चारित्र, तप वीर्य उपयोग।
इनसे जो होता युक्त, आत्मा कहलाता है।।
वृद्ध न युवक होता, नहीं नारी नर होता।
लघु नहीं दीर्घ नहीं, निज-पर ज्ञाता है।।
शरीर अगर नाव, आत्मा नाविक मानो।
नाविक कुशल गर, तट मिल जाता है।।
वीर कहे गौतम से, आत्मा को पहचानो।
होता नहीं कभी नाश, नित्य कहलाता है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिंतन

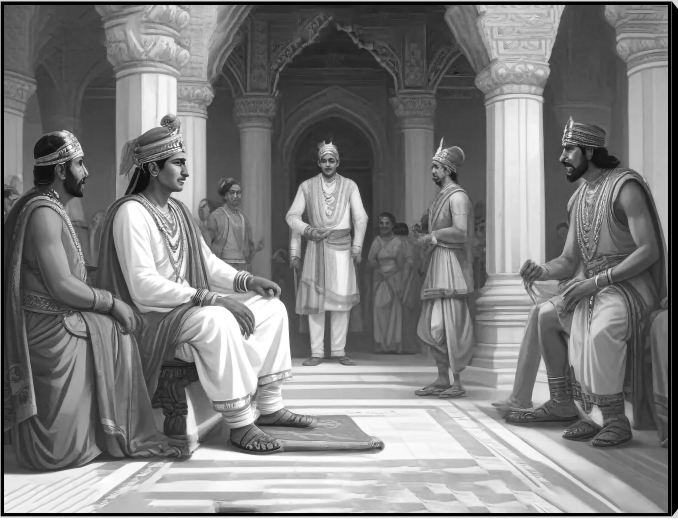
अनुभूति का महासागर : आत्म मस्ती

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

नशा एक मस्ती है। व्यक्ति अपना सर्वनाश करके भी मस्त रह सकता है। यह नशे की मस्ती से जाना जा सकता है। यह मस्ती मूर्च्छा रूप है। मूर्च्छित-अचेतन में रहते हुए व्यक्ति को दुःख का वेदन नहीं होता पर वह दुःख से मुक्त नहीं है। मूर्च्छितावस्था की मस्ती कई प्रकार की है। शराब, भांग, गांजा, चरस आदि से उत्पन्न मस्ती तो मूर्च्छना की प्रतीक है ही। इससे भिन्न धन, बल, सत्तादि से उत्पन्न मस्ती भी नशे का प्रतीक है। धन का नशा भी व्यक्ति पर गहरा छाया रहता है। बल, रूप, ऐश्वर्यादि में मस्त रहने वालों की भी कमी नहीं है। ये सारी मस्तियाँ चैतन्य को धूमिल किंवा मूर्च्छित करने वाली हैं। इन सबसे भिन्न एक मस्ती और भी है, जो चैतन्य की जाग्रतावस्था में प्रकट होती है। उसमें मस्त बना साधक व्यक्ति अपने हाल में मस्त रहता है। दुनिया में क्या हो रहा है, उससे उसे कोई लेना-देना नहीं होता। वह स्वयं में लीन रहता है। यह मस्ती मूर्च्छा नहीं, अपितु जागरण है। मूर्च्छा से उत्पन्न मस्ती यथार्थ में मस्ती नहीं है। वह बेहोशी है। चैतन्य की जागरण से उत्पन्न मस्ती में अंतर नाद आंदोलित हो व्यक्त होने लगता है- '**एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसण संजुत्तो**, और **मैं तो रमता योगी राम, मेरा क्या दुनिया से काम, अब हम अमर भये ना मरेंगे या कारण मिथ्यात दियो तज क्यों कर देह धरेंगे, हम तो अमर भये ना मरेंगे।** वस्तुतः वह मस्ती आत्म-रमण की मस्ती होती है। वह भक्ति की मस्ती होती है। उसके विषय में जानना हो तो मीरा से पूछो, मृगावती से पूछो कि उसे उस मस्ती से क्या मिला? उसे आत्मिक नशे की संज्ञा दे भी दें तो यह नशा, नाश का द्वार नहीं अपितु आत्म-उद्धार का द्वार है। नशा शब्द वर्तमान में जिस रूप में प्रयुक्त होता है, उस दृष्टि से इस मस्ती को नशे की संज्ञा देना शायद ठीक नहीं होगा। पर हाँ, यह मस्ती आत्म-मस्ती है, बेहोशी वाली नहीं है। बेहोशी की मस्ती अनुभवहीन है, जबकि यह मस्ती अनुभूति का महासागर है।

फाल्गुन शुक्ल 6, सोमवार, 14.03.2016

साभार- आरोह



धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

कुण्डिनपुर में

29-30 अप्रैल 2024 अंक से आगे....

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

शिशुपाल- ''हाँ, ठीक है। अच्छा, अब मैं जुलूस की तैयारी कराता हूँ।''

''हाँ, आप तैयारी कराइए।'' कहकर रुक्म अपने महल में आ गया। उसके मन में रुक्मिणी को किस प्रकार समझाया जाए इसके लिए उथल-पुथल चल रही थी। उसने अपनी माता से कहा कि अभी अपने महल के नीचे से वर सहित बारात निकलेगी। आप रुक्मिणी को गोखड़े से वर का दर्शन कराएँ और बारात दिखाएँ। शायद वर और बारात देखकर रुक्मिणी का विचार बदल जाए। रुक्म की माता ने रुक्म की बात के लिए स्वीकारोक्ति दी।

उधर रुक्मिणी के हृदय में अपार चिंता हो रही थी। वह विचारमग्न थी कि मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा कैसे होगी? पापी शिशुपाल बारात लेकर आ गया है। भाई और माता मेरा विवाह उसके साथ बलात् करने को उतारू हैं और मैं अकेली असहाय और अबला हूँ। यद्यपि मैंने जिन्हें अपना पति माना है, उन श्रीकृष्ण को मेरी रक्षा करनी चाहिए, परंतु वे द्वारका में बैठे हैं। मेरे प्रेम और मुझ पर आई हुई विपत्ति की उन्हें खबर है भी या नहीं? नारद जी मुझमें श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम तो उत्पन्न कर गए, परंतु फिर उन्होंने भी मेरी खबर नहीं ली। न जाने क्या होना है? मैं इसी शरीर में श्रीकृष्ण से मिल सकूँगी या मुझे अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए यह शरीर त्यागना पड़ेगा? हे नाथ! हे द्वारकाधीश! क्या आप मेरी रक्षा नहीं करेंगे? क्या मैं इस शरीर में रहती हुई आपके दर्शन नहीं कर सकूँगी?

इस प्रकार विचारती हुई रुक्मिणी अपनी आँखों से आँसू की बूँदें टपकाने लगी। उसे धैर्य देने वाला भी कोई नहीं था। रुक्मिणी की मर्मपीड़ा सुनने-समझने वाली केवल बुआ ही थी, परंतु वह भी रुक्म के भय से प्रकट में रुक्मिणी की कोई सहायता नहीं कर पाती थी। फिर भी समय-समय पर वह रुक्मिणी को धैर्य बँधाया करती।

बुआ रुक्मिणी को समझाने लगी- ''रुक्मिणी! तू इस प्रकार क्यों घबराती है? जरा धैर्य तो रख। अभी तो विवाह में कई दिन बाकी हैं। इतने समय में क्या नहीं हो सकता? तेरा कृष्णप्रेम यदि सच्चा है तो वह श्रीकृष्ण को आकर्षित किए बिना कदापि नहीं रह सकता। तू यह मत समझ कि वे श्रीकृष्ण दूर हैं इसलिए मेरी सहायता नहीं कर सकेंगे। उनका गरुड़ध्वज रथ बात ही बात में उनको कहीं से कहीं पहुँचा सकता है। उन्हें तेरे प्रेम और तेरी प्रतिज्ञा की खबर नहीं हो यह भी नहीं हो सकता। नारद जी ने केवल तेरे में ही कृष्णप्रेम उत्पन्न नहीं किया है, किंतु अवश्य ही श्रीकृष्ण में भी तेरे प्रति प्रेम उत्पन्न किया होगा। शिशुपाल बारात लेकर आएगा यह भी वे जानते होंगे। उनसे कोई बात

छिपी नहीं होगी। ऐसा होते हुए भी वे अब तक क्यों नहीं आए या उनकी ओर से किसी प्रकार का संदेश भी क्यों नहीं आया, यह मैं नहीं कह सकती। सच्ची बात तो यह है कि तेरी ओर से भी तो उनके पास किसी प्रकार का संदेश नहीं पहुँचा है। तेरे प्रेम को जानते हुए भी तेरी ओर से संदेश के बिना व्यवहार की पूर्ति नहीं होती और वे महापुरुष लोक व्यवहार की अवहेलना कैसे कर सकते हैं? इसलिए मैं समझती हूँ कि तेरी ओर से कृष्ण के पास प्रेम प्रार्थना जानी चाहिए।''

बुआ के आश्वासन से रुक्मिणी को कुछ धैर्य हुआ। वह बुआ की अंतिम बात पर विचार करने लगी। इतने में ही शिशुपाल की बारात धूमधाम से राजमहल के पास आई। बारात में हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सुसज्जित थे और व्यवस्थित रूप से क्रमवार चल रहे थे। शिशुपाल एक अत्यंत सजे हुए हाथी पर बैठा था। उसके ऊपर छत्र लगा हुआ था और चँवर डोल रहे थे।

राजपरिवार तथा नगर की स्त्रियाँ छतों पर चढ़कर बारात देखने लगीं और बारात व शिशुपाल को देखकर रुक्मिणी के भाग्य की सराहना करने लगीं। रुक्मिणी की माता भी बारात और शिशुपाल को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। वह रुक्म की प्रशंसा करती हुई कहने लगी कि रुक्म के प्रयत्न से ही यह बारात आई है और रुक्मिणी को ऐसा वर मिला है। नहीं तो ग्वालों की बारात आती और ग्वाला ही रुक्मिणी का वर होता। उसने रुक्मिणी की सखियों को आज्ञा दी कि रुक्मिणी को बुला लाओ, जिससे वह भी यह सुंदर बारात देखकर नेत्र सफल कर ले।

आज्ञानुसार रुक्मिणी की सखियाँ रुक्मिणी को बुलाने गईं। यद्यपि वे रुक्मिणी का विचार जानती थी, फिर भी प्रयत्न करना और रुक्मिणी की माता की आज्ञा मानना उनके लिए आवश्यक था। वे रुक्मिणी के पास जाकर उससे कहने लगीं- ''बहन रुक्मिणी! तू अभी तक मुरझाई हुई ही है। कहीं चंद्र के उदय होने पर भी कुमुदिनी मुरझाई हुई रहती है? उठ, जल्दी उठ, जरा देख तो सही कि महल के नीचे कैसी बारात आई है! हमने तो आज तक ऐसी विशाल और अनुपम बारात नहीं देखी है, न सुनी है। बारात के मध्य हाथी पर विराजमान चँवर-छत्र से सुशोभित महाराज शिशुपाल को देखकर सब लोग तुम्हारे भाग्य की सराहना कर रहे हैं और तुम इस प्रकार उदास हो। लो उठो, चलो, महारानी जी तुम्हें बुला रही हैं। विलंब मत करो, नहीं तो बारात आगे बढ़ जाएगी और फिर भली प्रकार नहीं देख सकोगी।''

सखियों की बात के उत्तर में रुक्मिणी कहने लगी- ''सखियो! क्या तुम निपट ही बुद्धिहीन हो। मैं तुम्हें अपना निश्चय सुना चुकी, फिर भी तुम इस प्रकार की बातें कर रही हो? तुम चंद्र और कुमुदिनी का उदाहरण तो दे रही हो, परंतु क्या यह नहीं समझती कि चंद्रोदय होने पर कुमुदिनी आप ही विकसित हो उठती है, किसी की प्रेरणा की प्रतीक्षा नहीं करती। प्रेरणा तो तभी करनी पड़ती है, जब किसी तारे को चंद्र बताकर उसके लिए कुमुदिनी को विकसित करने की इच्छा हो, परंतु प्रेरणा करने पर भी तारे के लिए कुमुदिनी विकसित नहीं होती और चंद्र के लिए आप ही विकसित हो जाती है। मेरा चंद्र अभी उदय नहीं हुआ है। जब वह उदय होगा, तब कुमुदिनी की तरह मैं भी आप ही विकसित हो जाऊँगी, उदास नहीं रहूँगी। तुम जाओ। मैं कहीं नहीं चलूँगी। यह बारात तो क्या, यदि स्वयं इंद्र भी दुलहा बना हुआ हो और देवता लोग बाराती हों तो भी मैं वह बारात इस स्थिति में कदापि नहीं देखूँगी। यह बारात तो किसी कन्या के अधिकारों का हरण करने के लिए सजाई गई है।''

रुक्मिणी का उत्तर सुनकर सखियाँ वहाँ से चली गईं। उन्होंने पूर्वानुभव के कारण रुक्मिणी से अधिक कुछ कहना उचित नहीं समझा। रुक्मिणी ने जो उत्तर दिया वह रुक्मिणी की सखियों ने रुक्मिणी की माता को कह दिया। रुक्मिणी की माता दौड़ी हुई रुक्मिणी के पास आई और कहने लगी- ''रुक्मिणी! तू बड़ी हठीली हो गई है। चल, जरा देख तो सही कि कैसी निराली बारात है। उस बारात के मध्य चंदेरीराज

ऐसे शोभायमान हो रहे हैं, जैसे तारागण के मध्य चंद्र। स्वर्णाभूषण से अलंकृत श्याम हाथी पर चँवर-छत्र के नीचे बैठे हुए चंद्र की तरह शोभा दे रहे हैं। संसार में न तो ऐसा सुंदर दूसरा पुरुष है और न ही इस प्रकार की बारात किसी के यहाँ आई होगी। तूने तेल नहीं चढ़वाया तो न सही और तुझे विवाह नहीं करना है तो मत कर, परंतु चलकर एक बार नेत्रों का सुख तो ले ले। वर और बारात को तो देख ले। बारात देखने के लिए लोग दूर-दूर से आए हैं और तू यहाँ रहती हुई भी बारात देखने से क्यों वंचित रहती है? चल उठ।''

माता की बातें रुक्मिणी को बहुत कर्णकटुक प्रतीत हो रही थी। वह इन बातों को अनिच्छापूर्वक सुन रही थी। माता की बात समाप्त होने पर रुक्मिणी कहने लगी- ''माता! तुम मुझे किसका मुँह दिखाना चाहती हो? वह भी किसलिए? इसलिए कि मैं उसे पसंद कर लूँ? उसे अपना पति बनाना स्वीकार कर लूँ? माता! तुम्हारे मुख से इस प्रकार की बातें शोभा नहीं देतीं। मैं अपना विचार आपको पहले ही सुना चुकी हूँ। मेरे वर श्रीकृष्ण हैं। मैं पति रूप में तो श्रीकृष्ण को ही देखूँगी। किसी दूसरे का मुँह पति बनाने की इच्छा से कदापि नहीं देख सकती। शिशुपाल चाहे सुंदर हो, रत्नाभूषण पहने हो, राजाओं के साथ हो तथा हाथी पर चढ़कर आया हो, तब भी मैं उसका स्वागत नहीं कर सकती और श्रीकृष्ण चाहे काले हों, कंबल ही ओढ़े हों, दीन-दुखियों के साथ हों तथा पैदल ही हों, तब भी मैं उनका स्वागत करूँगी। उनके लिए आँखों के पाँवड़े बिछा दूँगी। उन्हें अपने हृदय मंदिर में ठहराऊँगी। माता! मुझे शिशुपाल से किसी प्रकार का द्वेष नहीं है। संसार में अनेक पुरुष हैं, मैं किसी से द्वेष मानकर उसकी निंदा करूँ भी क्यों? मैं शिशुपाल की निंदा नहीं करती, परंतु वह मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरा पति बनने के लिए आया है। एक कन्या पर अत्याचार करना चाहता है। कन्या के अधिकारों को पददलित करना चाहता है। कन्याओं को अपने भोग की वस्तु मानकर उन्हें पशु या जड़ की तरह समझता है। अपने सुख के लिए उनका जीवन नष्ट करना चाहता है। इसलिए मेरे लिए वह धिक्कार का पात्र है। मैं उसे कुत्ते और कौवे के समान ही मानती हूँ, जो दूसरों का जूठा खाने के लिए लालायित रहता है। मेरे हृदय को श्रीकृष्ण ने जूठा कर दिया है और यह बात उसे मालूम भी हो चुकी है, फिर भी वह कुत्ते और कौवे की तरह निर्लज्ज बनकर उसे लेने के लिए आया है। उसे यह बात विस्मृत नहीं होनी चाहिए कि अनेक प्रयत्न करने पर भी कौआ राजहंसिनी को अपनी पत्नी बनाने में सफलता नहीं पा सकता। अनेक कष्टों में पड़ने पर भी राजहंसिनी अपने को कौवे के समर्पित नहीं कर सकती। पतिव्रता की भी यही बात है। पतिव्रता स्त्री भी प्राण रहते किसी दूसरे पुरुष को पति रूप में कदापि स्वीकार नहीं कर सकती। मैंने श्रीकृष्ण को अपना पति बना लिया है। यदि वे शरीर से न भी मिलें तो मेरे हृदय में तो बसे ही हैं। मैं अपना जीवन उन्हीं के नाम पर व्यतीत कर दूँगी, लेकिन इस जन्म में तो दूसरा पति कदापि स्वीकार नहीं करूँगी। माता जिस मुख से अमृत पीया, उसी मुख से विष कैसे पी सकती हूँ? जिस मुख से श्रीकृष्ण को पति कहा, उसी मुख से दूसरे को पति कैसे कह सकती हूँ? एक को पति मानकर फिर दूसरे की ओर मन ललचाना गंगाजल तजकर गटर का जल पीने के समान है। कौन मूर्ख गंगाजल छोड़कर गटर का जल पीएगा? जिसने गंगाजल पी लिया उसे गटर का जल कब अच्छा लग सकता है? जो हाथी पर बैठा हुआ है, उसे गधे की सवारी कब पसंद आ सकती है? इसी प्रकार जो श्रीकृष्ण की पत्नी बन चुकी है, उसे शिशुपाल की पत्नी बनना कब अच्छा लग सकता है? कदाचित् मैंने ऐसा किया भी अर्थात् श्रीकृष्ण को पति मानने के पश्चात् शिशुपाल को पति मान लिया तो मेरी गणना किन स्त्रियों में होगी? क्या फिर मैं पतिव्रता रह सकती हूँ? क्या मेरा कृत्य आर्यबाला के लिए शोभनीय होगा? फिर आप एक कुलटा स्त्री की माता नहीं कहलाएँगी?

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 अप्रैल 2024 अंक से आगे....

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मतिज्ञान

प्र.2476 क्षिप्रग्राही और अक्षिप्रग्राही मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर एक काल में एक या अनेक पदार्थों को शीघ्र जानना क्षिप्रग्राही और विलंब से जानना अक्षिप्रग्राही है।

प्र.2477 निश्रितग्राही (आधार से जानना) मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर गंध से फूल का ज्ञान होना निश्रितग्राही मतिज्ञान है।

प्र.2478 अनिश्रितग्राही (अनुमान से, स्वरूप से जानना) मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर अनिश्रितग्राही मतिज्ञान को इस दृष्टांत से समझा जा सकता है। जैसे- बुढ़िया के हाथ से मटका टूटने पर निमित्तज्ञ ने अनुमान लगाया कि जिस प्रकार मटके की मिट्टी, मिट्टी में ही मिल गई, उसी प्रकार वर्षों पूर्व परदेश गया हुआ पुत्र उसे शीघ्र मिल जाएगा।

प्र.2479 संदिग्धग्राही और असंदिग्धग्राही मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर शंकायुक्त ज्ञान संदिग्धग्राही व निश्चित रूप से जानना असंदिग्धग्राही है।

प्र.2480 ध्रुवग्राही और अध्रुवग्राही मतिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर सदा ही बहु आदि रूप से जानना ध्रुवग्राही और कभी बहु आदि रूप से और कभी अबहु आदि रूप से जानना अध्रुवग्राही है।

प्र.2481 बहु, बहुविध आदि उपर्युक्त 12 बोलों में विशिष्ट क्षयोपशम के बोल कौन-से हैं?

उत्तर बहु, बहुविध, क्षिप्रग्राही, अनिश्रितग्राही, असंदिग्ध और ध्रुवग्राही - ये छह बोल मति ज्ञानावरणीय कर्म के विशिष्ट क्षयोपशम, उपयोग की एकाग्रता और अभ्यास आदि असाधारण अंतरंग कारण से होते हैं। शेष छह बोल मति ज्ञानावरणीय कर्म के मंद क्षयोपशम, उपयोग की विक्षिप्तता और अनभ्यस्तता से होते हैं।

प्र.2482 क्या अभ्यास से भी क्षयोपशम को बढ़ाया जा सकता है?

उत्तर हाँ, बढ़ाया जा सकता है।

प्र.2483 मति अज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर मति ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के साथ मिथ्यात्व मोहनीय का उदय हो तो जीव मति अज्ञानी कहलाता है अर्थात् मिथ्यादृष्टि

की मति को मति अज्ञान कहते हैं।

प्र.2484 क्या मति अज्ञानी भी 'औत्पत्तिकी' बुद्धि संपन्न होते हैं?

उत्तर हाँ, किंतु इनका बोध मोक्ष के हेतुभूत नहीं होता है, इसलिए ये अपनी बुद्धि का प्रयोग भौतिकता (पुद्गलों) के लिए ही करते हैं। मति अज्ञान के भी 340 + 1 = 341 भेद होते हैं।

श्रुतज्ञान

प्र.2485 श्रुतज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर श्रुतज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के कारण पढ़ने या सुनने से जो शब्दज्ञान होता है, उसे श्रुतज्ञान कहते हैं। बृहत्कल्प भाष्य गाथा 1154 में श्रुतज्ञान को तीसरा नेत्र कहा है।

प्र.2486 श्रुतज्ञान को सूत्र रूप में कौन गूँथते हैं?

उत्तर गणधर गूँथते हैं।

प्र.2487 गणधर किसे कहते हैं?

उत्तर जिन महापुरुषों को तीर्थ प्रवर्तन काल में अहिंसा, संयम, तप इन तीन शब्दों से समस्त चरणकरणानुयोग (5 महाव्रतादि आचार) और समस्त धर्मकथानुयोग का क्षयोपशम हो जाता है एवं उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य इन तीन पदों से समस्त द्रव्यानुयोग और गणितानुयोग का क्षयोपशम हो जाता है, तदनंतर वे इसे शास्त्र रूप में गूँथते हैं, उन्हें गणधर कहते हैं।

प्र.2488 'द्रव्य श्रुत' व 'भाव श्रुत' किसे कहते हैं?

उत्तर पढ़ना, सुनना, लिखना रूप अक्षर ज्ञान 'द्रव्य श्रुत' हैं और शब्दों के अर्थ (भाव) को समझना 'भाव श्रुत' है। अभवी और मिथ्यादृष्टि के भी द्रव्य और भाव श्रुत होता है, किंतु मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय के कारण वे मिथ्यादृष्टि कहलाते हैं।

प्र.2489 सभी जीवों के मति श्रुतज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम क्यों रहता है?

उत्तर इन दोनों कर्मों और दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम न हो तो जीव 'उपयोग गुण' रहित हो जाएगा, जो संभव नहीं है, क्योंकि कोई भी द्रव्य अपना स्वभाव नहीं छोड़ता है।

प्र.2490 एकेंद्रियों का श्रुतअज्ञान किस रूप में रहता है?

उत्तर सोए हुए या मूर्छित प्राणी के श्रुतज्ञान के समान इनमें अव्यक्त श्रुतअज्ञान होता है। जैसे- जब वे क्षुधा का अनुभव करते हैं तब 'मुझे भूख लगी है'। यों अंतरंग शब्द उल्लेख रूप श्रुतअज्ञान होता है।

प्र.2491 श्रुतज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर श्रुतज्ञान के 14 भेद हैं। यथा- अक्षर श्रुत, अनक्षर श्रुत, संज्ञी श्रुत, असंज्ञी श्रुत, सम्यक् श्रुत, मिथ्या श्रुत, सादि श्रुत, अनादि श्रुत, सपर्यवसित श्रुत, अपर्यवसित श्रुत, गमिक श्रुत, अगमिक श्रुत, अंग प्रविष्ट श्रुत और अंग बाह्य श्रुत।

प्र.2492 अक्षर श्रुत और अनक्षर श्रुत किसे कहते हैं?

उत्तर
1. 'अ, आ' आदि अक्षर श्रुत हैं। यह 5 इंद्रिय व मन से होता है। जैसे- मन में गुरु का विचार करने से गुरु शब्द का बोध होता है।
2. श्वास लेना, खाँसना, छींकना, डकार लेना आदि शाब्दिक क्रियाएँ अनक्षर श्रुत हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में बड़ी दीक्षाएँ, अक्षय तृतीया पारणा, अभिमोक्षम् शिविर आदि के भव्य आयोजन। आचार्य भगवन् ने सान्निध्यरत संतों सहित चौथपुरा, बोजुंदा, सैंथी सहित चित्तौड़ के अनेक उपनगरों को अपनी चरणरज से पावन किया। विभिन्न स्थानों पर हुई विहार यात्रा में मार्ग के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर जनों का हुजूम दर्शनों हेतु उमड़ा।
- साधुमार्गी इतिहास में प्रथम बार आयोजित अभिमोक्षम् शिविर का 10 मई को चित्तौड़गढ़ में भव्य आगाज। शिविर हेतु 2000 से अधिक बालक-बालिकाओं का चित्तौड़गढ़ आगमन। बाल एवं युवा पीढ़ी नैतिकता व आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत हो जीवन उन्नयन की ओर बढ़ रही।
- अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर 105 वर्षीतप आराधकों ने इक्षुरस से पारणा किया। तप अनुमोदनार्थ हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। अनेक तपस्वियों ने वर्षीतप जारी रखने के प्रत्याख्यान लिए। धमतरी में भी हुआ वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन। शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में 41 वर्षीतप आराधकों ने इक्षुरस से पारणा किया। सभी तपस्वियों का एक अलग कार्यक्रम में अभिनंदन।
- अभिमोक्षम् शिविर में नानेश पी.जी. मेमोरियल हॉस्पिटल, पिपलिया कलां द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन। शिविर में वार्ड एवं ऑक्सीजन गाड़ी, ई.सी.जी., एम.आर.आई., एक्स-रे, खून व अन्य जाँचों सहित अनेक सेवाएँ उपलब्ध करवाई गईं।
- नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशिष्या श्री जी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदर्शना श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) का प्रसंग सैंथी में संपन्न। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर ने महती कृपा कर सान्निध्य प्रदान किया। एक अलग कार्यक्रम में वीर माता-पिता व परिजनों का सम्मान किया गया।
- संथारा साधिका 95 वर्षीय साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने राम गुरु शासन में अब तक का सबसे बड़ा संथारा भदेसर में किया। आपश्री जी का 66 दिवसीय संथारा 13 मई को पूर्ण हुआ। इसी दिन भव्य डोल यात्रा पश्चात् अंतिम संस्कार में परिजनों एवं संघ प्रमुखों ने मुखाग्नि दी।
- साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा. का कानोड़ में 20 मई को महाप्रयाण। 21 मई को पंचायती नोहरा से डोल यात्रा निकाली गई। परिजनों एवं संघ प्रमुखों ने मुखाग्नि दी।
- मुमुक्षु भाई ज्ञानेंद्र जी बाफना, भोपालगढ़, मुमुक्षु बहन सुश्री तन्वी जी खिमेसरा, धुलिया, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षगण तथा लंदन से पधारी सिद्धि जी बोलिया सहित देश के अनेक स्थानों से आगत हजारों श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर जीवन उत्कर्ष हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- लूणकरणसर में 12 मई को समता भवन का उद्घाटन संघ प्रमुखों के करकमलों से संपन्न।

हर प्रवृत्ति आत्महित में होनी चाहिए - आचार्य भगवन्

संयम जीवन सरलता का जीवन है - उपाध्याय प्रवर

तप संयम की जय-जयकार। राम गुरु की जय-जयकार।।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा, अक्षय तृतीया पारणा संपन्न, अभिमोक्षम् शिविर एवं उन्नयन शिविर का आगाज, संस्कार क्रांति अभियान जारी

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का पंडितमरण

चौथपुरा, सैंथी जैन स्थानक, मीरानगर, नानेश-रामेश समता भवन, चित्तौड़गढ़।

युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान् आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में धर्म, तप व संस्कार क्रांति की अलख जग रही है। नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा सैंथी में संपन्न हुई। बाल, युवा पीढ़ी में नैतिकता, आध्यात्मिकता का अद्भुत जागरण अभिमोक्षम् शिविर के माध्यम से हो रहा है। इसमें 2000 से अधिक बाल-युवा अपने जीवन को सुसंस्कारित कर रहे हैं। अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर वर्षीतप आराधकों ने महापुरुषों से नई ऊर्जा प्राप्त की। कई तपस्वी भाई-बहनों ने आगे भी वर्षीतप करने का संकल्प लिया।

साधुमार्गी संघ के इतिहास में पहली बार आयोजित विशाल अभिमोक्षम् शिविर का आयोजन शिविरार्थियों के लिए समयबद्धता और अनुशासन के साथ चल रहा है। मानव सेवा के क्षेत्र में नानेश पी.जी. मेमोरियल हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन जारी है।

निष्काम भक्ति ही सफलता का सूत्र

1 मई 2024, चौथपुरा। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का सावा से चौथपुरा पदार्पण हुआ। गगनभेदी जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में अमृतवाणी श्रवण हेतु श्रावक-श्राविकाओं एवं गुरुभक्तों की उपस्थित बड़ी संख्या में रही। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिनके पास मन जैसी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं, वह भक्त कहलाता है। स्व के अस्तित्व का सर्वथा लोप किया जाए। इस तरह जो शिष्य गुरु के मन में अपने मन का विलीनीकरण कर दे, वही गुरुभक्त कहलाता है।

आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगल पाठ फरमाया। विभिन्न क्षेत्रों से आगत श्रद्धालु गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। व्यसनमुक्ति सहित भिन्न-भिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

राजकीय विद्यालय में मंगल प्रवेश

2 मई 2024, बोजुंदा। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर आदि ठाणा का चौथपुरा से बोजुंदा की दिशा में विहार हुआ। मार्गवर्ती क्षेत्रों में मार्ग के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर जनों ने गुरुदर्शन कर अपना जीवन धन्य बनाया। जय-जयकारों की मधुर ध्वनि के मध्य आपश्री जी का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बोजुंदा में मंगल पदार्पण हुआ।

दोपहर में उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा का कार्यक्रम हुआ। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने जिज्ञासाओं का समाधान किया। शासन दीपक श्री राजन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा ने शांति भवन, सैंथी में पधारकर उपस्थित जनसमुदाय को प्रवचन की अमृतधारा से पावन किया।

दो नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा संपन्न

हर क्रिया, साधना सिर्फ आत्महित के लिए हो – आचार्य श्री रामेश

संयम जीवन सरलता, निष्कपटता का मार्ग है – उपाध्याय प्रवर

3 मई 2024, शांति भवन, सैंथी। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का बोजुंदा ग्राम से विहार कर शांति भवन, सैंथी, चित्तौड़गढ़ में जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। '**भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछें सुख और साता**', '**कथनी करनी एक समान, जय गुरु नाना जय गुरु राम**' आदि नारों से संपूर्ण माहौल गूँज उठा।

आज नवदीक्षिता साध्वी श्री रामशिष्या श्री जी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदर्शना श्री जी म.सा. की बड़ी दीक्षा के प्रसंग पर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**सभी प्रवृत्तियों में केंद्र बिंदु आत्महित ही होना चाहिए। यह दृष्टिकोण बन गया तो हमारे कदम गलत दिशा में नहीं बढ़ेंगे। स्वार्थ की भावना हमारे उच्च विचारों को दबोच लेती है। जो कार्य हमें नहीं करना चाहिए वो कार्य स्वार्थ बुद्धि हमसे करवा लेती है। सहन करना कायरता नहीं है। प्रतिकूलता में भी मन में विपरीत विचार नहीं आने चाहिए। प्रतिकार करने से शक्ति घटती है और कर्मबंध की स्थिति बनती है। स्वयं को नियंत्रित रखना होगा। आत्महित की दृष्टि सामने रखनी होगी। हमारी शक्ति आत्महित में लगे तो आत्मा द्रुतगति से मोक्ष की दिशा में बढ़ती है। क्रोध के समय अपने आपको शांत रखें।**''

प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**मोक्ष प्राप्ति का**

सबसे सरल मार्ग संयम ही है। यह मार्ग सीधा मुक्ति की ओर ले जाने वाला है। जो सहज है, सरल है, निष्कपट है, जिसमें लुकाव-छिपाव नहीं है, जो प्रकृति के समीप है, जो नैसर्गिक है, जो कृत्रिमता से बचा हुआ है, ऐसे व्यक्ति शीघ्रातिशीघ्र लक्ष्य प्राप्त करते हैं। संयम जीवन सरलता का जीवन है। दीक्षा का प्रसंग सरलता को परिष्कृत करने का है। दीक्षा सरलता को शोभायमान करने का प्रसंग है। विभिन्न पापकारी योगों का त्याग दीक्षा के दिन होता है। उसके बाद छः काय जीवों का ज्ञान होने पर पापों से निवृत्ति होती है। बड़ी दीक्षा में पाँच महाव्रतों पर आरोहण कराया जाता है। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह न करने, न कराने, न उसकी अनुमति देने का प्रत्याख्यान होता है। जीवनभर रात्रि भोजन त्याग का संकल्प लिया जाता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह में शक्ति को लगाया जाता है। कठोर प्रतिज्ञाओं को धारण कराया जाता है। मन अनावश्यक दाव-पेचों में नहीं उलझता। जीवन को सरल व सहज बनाएँ। जिनेश्वर देवों के इस मार्ग को हम भी अपनाएँगे तो जीवन सफल होगा।''

शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज जो भी किया जा रहा है, उस लाइफ स्टाइल से हम कितने भवों में मोक्ष जाएँगे, यह विचार करना होगा। आसक्ति रहित जीवन से कल्याण होगा। क्रोध नहीं कर समभाव में रहना होगा।

उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने बड़ी दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए दोनों नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं को संपूर्ण हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह व रात्रि भोजन का त्याग करवाकर मन, वचन, काया से महाव्रतों में आरोहण कराया।

नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं ने अपने संकल्प-पत्र का वाचन करते हुए फरमाया कि हम सभी नियमों, सिद्धांतों का निष्ठापूर्वक आचार्य भगवन् के निर्देशानुसार पालन करेंगे। आपने हमको संसार रूपी कीचड़ से बाहर निकालकर संयम में आगे बढ़ाया है। आपकी कृपा से कषायों व इंद्रियों पर विजय से सिद्ध-मुक्त बनें यही भावना है।

संघ मंत्री ने आज के प्रसंग को स्वर्णिम अवसर बताते हुए आचार्य भगवन् से अधिकाधिक विराजने की विनती की। महेश नाहटा ने महापुरुषों व वीर परिवारों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। 12 एकासना, 12 आयंबिल, 12 उपवास सहित विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान भाई-बहनों ने ग्रहण किए। समता बहू मंडल ने मंगल गीत प्रस्तुत किया। सभी संप्रदाय के लोगों ने आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ लिया।

एक अलग कार्यक्रम में वीर माता-पिता विजय जी-सुनीता जी बाफना, निफाड़ एवं दिनेश जी-जयश्री जी कोटड़िया, नंदुरबार का चित्तौड़गढ़ संघ की ओर से स्वागत-बहुमान किया गया।

दोपहर में श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध कराया एवं जिज्ञासाओं का सुंदर आगमिक आधार पर समाधान दिया। आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ श्रवण कराया। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन, वंदन व सेवा का लाभ मुमुक्षु ज्ञानेंद्र जी बाफना, भोपालगढ़, मुमुक्षु तन्वी जी खिमेसरा, धुलिया ने लिया। महापुरुषों ने मुमुक्षुओं को आत्महित की शिक्षा दी।

परमात्मा की भक्ति से दूर होते दुःख, दुर्भाग्य

4 मई 2024, वर्धमान जैन स्थानक भवन, मीरानगर, चित्तौड़गढ़। युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना के पश्चात् सैंथी के शांति भवन से विहार हुआ। जन-जन आपके दर्शनों हेतु मार्ग के दोनों ओर लालायित खड़े नजर आए। हर कोई आपकी कठोर संयम साधना एवं जैन धर्म के उच्चतर अहिंसा नियमों को जानकर आश्चर्यचकित हो गया। अपूर्व जय-जयकारों के साथ आपश्री जी का अपने सान्निध्यवर्ती शिष्यों सहित श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन, मीरानगर, चित्तौड़गढ़ में जय-

जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

मंगल प्रवेश पश्चात् आयोजित धर्मसभा में धर्मपिपासु गुरुभक्तों को भगवान महावीर की अमृतदेशना से पावन करते हुए शास्त्रज्ञ तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**विमलनाथ भगवान का दर्शन दुःख और दुर्भाग्य को दूर करने वाला होता है। जो दुःख हमें मिलता है वह हम स्वयं ही पैदा करते हैं। अकुशल मन के द्वारा हमने दुःख को पैदा किया है। पाप कर्मों को बांधते समय हमें अंदर से बहुत हर्ष होता है, परंतु जब वे कर्म उदय में आते हैं तो हमें बहुत पछतावा होता है कि हमसे यह क्या हो गया! दुनिया में रहने वाले अधिकांश लोग दुःख का संग्रह करते हैं। पाप करते समय अंदर से आवाज आती है कि यह सही नहीं है, परन्तु किसी के कहने पर हम खुद के मन की बात को दबा देतें हैं। इसी को अकुशल मन कहा गया है। हमारे मन का मालिक हमें बनना चाहिए, लेकिन हम मन के मालिक नहीं होने से मन अशांत रहता है। यदि हमारी चर्याएँ साधु के अनुकूल नहीं होगी तो साधु की उपासना हम कैसे करेंगे? मरने के बाद तो सभी शांत हो जाते हैं, लेकिन जीवन के दौरान शांत रहना चाहिए। मन की शांति के लिए सामायिक साधना करनी होगी।**''

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो गुरु में परमात्मा को नहीं देख सकता वो परमात्मा में भी परमात्मा को नहीं देख सकता। जिन लोगों को हम अपना आदर्श मानते हैं तो हम उनकी ही तरह बन जाते हैं। हमारा देखने का नजरिया कैसा है इस पर विचार करना होगा। महापुरुषों के दर्शन मात्र से अशुभ कर्म नष्ट हो जाया करते हैं। आज हमारी संस्कृति समाप्त हो विकृति शुरू हो रही है। इस पर गंभीरता से विचार करना होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भाव अगर अच्छे नहीं होंगे तो गुरु की भक्ति नहीं होगी। भाव नहीं बिगड़ना चाहिए। भाव बिगड़ गए तो भव बिगड़ जाएँगे। किसी भी व्यक्ति के प्रति नफरत के भाव न हो। आपश्री जी ने भाव गीतिका '**रोम रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा**' प्रस्तुत कर संपूर्ण वातावरण को राममय बना दिया।

महेश नाहटा एवं स्थानीय गुरुभक्तों ने त्यागी महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन धन्य बनाने का आग्रह किया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, सकल जैन समाज ने महापुरुषों के सान्निध्य का लाभ लिया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने कल्पमर्यादा का विस्तृत विवेचन फरमाया।

मन को साधने के लिए आहार सादा व सात्विक हो

5 मई 2024, आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन, चित्तौड़गढ़। मीरानगर स्थानक में प्रभु एवं गुरु समर्पित प्रार्थना से भक्ति पश्चात् प्रशांतमना आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का विहार हुआ। मार्ग के दोनों ओर व मुख्य चौराहों पर भावाभिनंदन, वंदन-नमन हेतु जैन-जैनेतर भाई-बहन उत्साहित हो रहे थे। गुरुवर के दर्शन कर सभी ने अपना जीवन धन्य बनाया। संपूर्ण मार्ग विविध जयघोषों से गूंज रहा था। पूरा वातावरण धर्ममय हो गया। आपश्री जी का किला रोड स्थित आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में मंगलमय प्रवेश हुआ।

यहाँ पर आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति विशिष्ट गुणों से ओत-प्रोत लग रही थी। सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी ज्ञान विचक्षणा से उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए धर्मदेशना में फरमाया कि ''**जीवन निर्वाह हेतु आहार, वस्त्र, मकान की आवश्यकता को मान्यता दी गई है। आहार सादा व सात्विक होना**

चाहिए। क्षुधा शांति के लिए आहार आवश्यक है। शरीर निरोग रहे, यही मुख्य आधार है। शरीर की लज्जा के संबंध में वस्त्र एवं जीवन की सुरक्षा के लिए मकान की आवश्यकता है। इन सभी बातों में भावना यही होनी चाहिए कि –

''सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए।।''

अतिथि खाली ना जाए। हमारा ध्येय क्या है, विचार करें। भगवान महावीर ने फरमाया है कि साधु क्षुधा वेदनीय सहन करने में सक्षम नहीं हो तो आहार की इच्छा करनी चाहिए। ऐसा आहार करें जो क्षुधा को शांत करने में समर्थ हो। शरीर बल बनाए रखने के लिए भोजन जरूरी है। भोजन की पौष्टिकता महत्त्वपूर्ण है। आहार किसलिए बनाया गया, किसने बनाया, कैसे बनाया, किन विचारों के साथ बनाया, आाहर की गुणवत्ता आदि इसी आधार पर होती है। अभिमन्यु ने विचारों से समझ लिया कि युद्ध की विधि क्या है। बचना कैसे है। माता की आँखें संतान के लिए वात्सल्यभरी होती हैं। भोजन बनाने का स्थान हो या भोजन ग्रहण करने का स्थान, ऐसा स्थान क्रोध रहित होना चाहिए। धर्म-ध्यान का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। परिवार के सदस्य एक साथ धर्म-ध्यान करते हैं तो महत्त्व और बढ़ जाता है। कोविड की स्थिति में वैराग्य भाव आना चाहिए था। कर्मबंधन की अधिकता होने से संयम का भाव पैदा नहीं होता। आरंभ, परिग्रह त्यागने के भाव रहेंगे, अल्पारंभ के भाव रहेंगे तभी शांत भावों में रह पाएँगे। 'धर्म सुना तो क्या सुना' इस भाव से लाभ प्रकट होना चाहिए। आनंद श्रावक ने धर्म सुना और नियम कर लिया कि अब व्यापार में पूँजी नहीं बढ़ाना। जो भी लाभ हो उसे पूँजी में नहीं जोड़ना। लाभ को सदुपयोग से खर्च करना है। दुःख के कारणों को समझना होगा। आहार शुद्धि महत्त्वपूर्ण है। आहार की शुद्धता व गवेषणा का महत्त्व समझें। चित्तौड़गढ़ की पुण्यवानी है कि साधु-संतों का पदार्पण हुआ है। धर्म लाभ लेने का अवसर है। अधिक से अधिक धर्म धारण कर जीवन को सफल बनाएँ यही भावना भावें।''

साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**प्रभु वचनों को धारो**' भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो गुरु वचनों पर विचार करे, सोच-समझकर निर्णय करे उसके लिए समर्पणा महत्त्वपूर्ण है। समर्पणा होने पर गलत विचार नहीं आते, सोच गलत नहीं होती। अयोध्या में राजसी ठाठ से जीवन बिताने वाले राजकुमार राम को राजा दशरथ की आज्ञा से 14 वर्ष का वनवास मिला तो उन्होंने बिना कोई प्रश्न किए जंगल की ओर प्रस्थान कर दिया। यह आज्ञा पालन का अनुपम उदाहरण है। नाना गुरु की स्पष्ट छवि राम गुरु में दिखती है। केवल चेहरा ही वैसा नहीं, जीवन भी वैसा ही है। हमें आचार्य प्रवर के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। '**निर्मल जल सा मन है जिनका, सागर वर गंभीरा है**' गीत के गान से सभी भावविभोर हो गए।

शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने नियम-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी। संघ के राष्ट्रीय मंत्री ने कहा कि लगभग 20 वर्षों बाद आचार्य श्री रामेश का पदार्पण इस क्षेत्र में हुआ है। मेवाड़ अंचल की ओर से आचार्य प्रवर की कृपा हेतु अहोभाव व्यक्त करते हुए आपश्री जी के उत्तम स्वास्थ्य हेतु मंगलकामना व्यक्त करता हूँ।

महेश नाहटा ने कहा कि युवाचार्य बनने के पश्चात् 392 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का सान्निध्य मिल रहा है। भदेसर में 95 वर्षीय रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा 58वें दिन शांत भावों के साथ गतिमान है। हमें इससे प्रेरणा लेकर अनुमोदना हेतु धर्म-ध्यान की अग्रसर होना चाहिए। आपने 95 नवकार मंत्र जाप का आह्वान किया। समता महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। धर्मसभा के अंत में आचार्य भगवन् ने उपस्थित भक्तों पर कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया।

दोपहर में ज्ञानचर्चा में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी जिज्ञासाओं का आगमिक समाधान प्राप्त किया। नन्हे बालक आरव मेहता ने मम्मी की आज्ञा के बिना टी.वी., मोबाइल नहीं चलाने का प्रत्याख्यान लिया।

धर्मपरायणा प्रेम बाई विजयराज जी मेहता, प्रतापगढ़ के संथारा सहित महाप्रयाण एवं धर्मपरायणा सोसर बाई मारू, भीम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपिस्थत होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

शासन दीपक श्री निर्वाण मुनि जी म.सा., श्री सौरभ मुनि जी म.सा. भींडर, बंबोरा, कानोड़, भदेसर आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुचरणों में पधारे। कु. समीक्षा दिलीप जी हिंगड़, चित्तौड़गढ़ ने छः दिन में प्रतिक्रमण एवं पाँच दिन में दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन कंठस्थ कर अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया।

संयम, वेश परिवर्तन नहीं, अपितु जीवन परिवर्तन है

6 मई 2024, चित्तौड़गढ़। आध्यात्मिक प्रवचन माला की शृंखला में स्थानीय आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने अपने अमृत प्रवचन में फरमाया कि प्रभु महावीर 30 वर्षों तक प्रतिदिन 8 घंटे देशना फरमाते थे। प्रभु ने मोक्ष प्राप्त किया और अन्य जीवों को भी कल्याण का वही मार्ग बताया। सर्वश्रेष्ठ जीवन साधु जीवन ही है। साधु जीवन सबसे सरल एवं तनाव से मुक्त समतामय जीवन है। संसारी मानते हैं कि साधु जीवन कठिन है, लेकिन भगवान की बात ही सही है। भगवान के अनुसार साधु का मार्ग सरलतम मार्ग है। संयममात्र वेश परिवर्तन नहीं अपितु जीवन परिवर्तन है। अपने को समता में बनाए रखना ही संयम है। मिथिला नरेश नमिराजर्षि ने एकत्व भाव से संयम को अपनाया था। एकत्व में समाधान है, बहुत्व में समस्या है। अकेले जगत् में आए थे, अकेले ही जाना पड़ेगा। परिवार, मित्र कोई साथ जाने वाला नहीं है। कर्म साथ रहेंगे। यह शाश्वत सत्य है। दर्द-वेदना स्वयं को सहन करना पड़ता है। कोई भी दर्द को बाँट नहीं सकता। जन्म एवं मरण की वेदना अकेले को ही सहन करनी पड़ती है। गुरु हमें सद्गति का रास्ता बता सकते हैं, परंतु मौत से बचा नहीं सकते। एकमात्र नवकार एवं सद्गुरु ही सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। जीव एकत्व अनुप्रेक्षा नहीं करेगा तब तक जागेगा नहीं। संथारा व आत्महत्या में बहुत अंतर है। संथारे में यह भावना रहती है कि सभी अच्छे से रहें। क्षमायाचना करते हुए देह के प्रति अनासक्ति भाव रहता है। आत्महत्या में अथाह उत्साह से वेदना खत्म हो जाती है। माता-पिता, स्वयं, बहन-भाई, पत्नी, पुत्र-पुत्री में से कौन पहले जाएगा निश्चित नहीं है।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध, मान, माया, लोभ को समाप्त करने से हम मंजिल को प्राप्त कर सकते हैं। संसार से विरक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ें। संसार में रहकर संसार से ऊपर उठें। जल कमलवत् रहें। निवृत्ति मार्ग की ओर आगे बढ़ें।

शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याएँ धर्मसभा में उपस्थित थीं। संघ में अपूर्व उत्साह का वातावरण बना हुआ है।

भदेसर में साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा सजगतापूर्वक शांत भावों के साथ गतिमान रहा। धर्मसभा के अंत में परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा का वर्षण करते हुए गुरुभक्तों को मंगलपाठ श्रवण कराकर पावन किया। उपाध्याय प्रवर ने सभी चारित्रात्माओं को विशेष मार्गदर्शन दिया।

धर्मस्थान निर्भयता सिखाता है

7 मई 2024, चित्तौड़गढ़। प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना में प्रभु भक्ति के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में अपार जनमेदिनी गुरुवचनों को आत्मसात् करने हेतु उपस्थित हुई। आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन

में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कृपानिधान दयानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**संत जीवन सुखी जीवन है। इसका कारण समझना होगा। शारीरिक रूप से गृहस्थ तथा संत की शरीर रचना एक जैसी है। फिर भी संसारी दुःखी और संत सुखी क्यों? इसका मुख्य कारण तृप्ति है। संत तृप्ति का भाव रखते हैं और संसारी सदैव अतृप्त ही रहते हैं। संत को चाह नहीं, अपेक्षा नहीं, आवश्यकता नहीं, लेकिन गृहस्थ की चाह, अपेक्षा, आवश्यकता खत्म ही नहीं होती। संत को आहार मिले तो भी ठीक, नहीं मिले तो तपस्या हो जाएगी। आहार रखा है और गृहस्थ न बहरा पाए तो भी संत को कोई असर नहीं पड़ता। संत जीवन निर्लिप्त जीवन होता है। प्रवचन में, दर्शन में जनता की उपस्थिति कोई मायने नहीं रखती। संत का एकमात्र लक्ष्य कर्मनिर्जरा का होता है। संत को शिकायत नहीं होती। धर्म में किफायत नहीं होती। संत हर हाल में मस्त रहते हैं। जीवन की जटिलताएँ मानव की स्वयं की बनाई हुई हैं। हमारा मन सरल तो सारी समस्याएँ समाप्त और मन सरस तो जीवन में आएगा रस। जीवन नीरस तो रस नहीं आएगा। गन्ने का रस मीठा होता है, लेकिन रोगी को कड़वा लग सकता है। वैसे ही जीवन का रस मधुर होगा, किंतु जीना नहीं आया तो उस रस में मधुरता का स्वाद कैसे जाएगा? आनंदघन जी ध्यान में बैठे थे। अचानक उन्हें भाव आया कि मन नाच उठा, विमल जिन भगवान के दर्शन भावों में हो गए। वे धन्य हो गए। भाव प्रधानता से जीवन सफल हो जाता है। शरीर के दर्शन के साथ विचारों से दर्शन भी महान निर्जरा का कारण हो जाता है। तथारूप श्रमण महान् का नाम गोत्र का स्मरण करने मात्र से ही महान् निर्जरा होती है। संत का परिचय भी पापों का नाश करने वाला है। संत का परिचय ज्ञान से होता है। ईर्या, भाषा, एषणा का ज्ञान ही संत का परिचय है। व्यक्ति की चाल से जीवन की चर्या आंकी जा सकती है। संत के मूल गुण क्रियाएँ हैं। संत परिषद् और एकांत में एक समान होते हैं। कोई अंतर नहीं होता। जैसा बाहर वैसा अंदर। कई प्रवचनों के श्रवण के पश्चात् भी वैराग्य नहीं आता, किंतु किसी बिंदु पर वैराग्य आ जाता है। एक्यूप्रेशर विधि में पॉइंट कहीं दबाते हैं और राहत कहीं और मिलती है। वैसे ही जीवन में सुविचारों से बिंदु कब दब जाए और जीवन परिवर्तन हो जाए। भीतर के जागरण से दुनिया निराली हो जाती है। संसार के प्रति उदासीनता का भाव होना, सच्चे सुख की चाह होना ही वैराग्य है। वैराग्य का पोषण नहीं किया तो ठीक वैसे ही होगा जैसे पौधे का पोषण नहीं किया तो पौधा सूख जाता है। जैसे-जैसे लाभ होता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। लोभ से शांति नहीं मिलती। संयम का आचमन करें। संयम रूपी मीठे जल का पान करें। संयम का लक्ष्य बनेगा तभी जीवन धन्य बनेगा।**'' आपश्री जी के श्रीमुख से जैसे ही '**वैरागी हूँ एक वीर प्रभु की शरण चाहिए**' प्रसृत हुआ, संपूर्ण धर्मसभा भावविभोर हो गई।

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि क्षमावान का जीवन सदैव प्रशंसनीय होता है। बलवान, धनवान, ऐश्वर्यवान सुखी लगते हैं, पर वास्तव में सुखी नहीं होते। साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा ने भजन '**धन्य-धन्य महावीर की वाणी**' प्रस्तुत कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। महेश नाहटा एवं स्थानीय संघ महामंत्री ने सभा का संयोजन करते हुए सभी का स्वागत किया। उपस्थित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने 5-5 सामायिक का नियम लिया। भदेसर में साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का 60वें दिवस पर 60-60 नवकार मंत्र जाप की प्रेरणा की गई। पक्खी पर्व पर सायंकालीन प्रतिक्रमण का नियम अनेक जनों ने लिया। आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ फरमाया।

दोपहर में ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में अनेक जिज्ञासुओं ने भाग लेकर अपनी जिज्ञासाओं का आगमिक समाधान प्राप्त किया। विवेकानंद सीनियर सेकंडरी स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्ति का शुभ संकल्प लिया।

संसार असार है, संयम सुख का मार्ग है

8 मई 2024, चित्तौड़गढ़। भोर की पावन बेला में मधुर स्वर लहरी के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगममर्मज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि **''दुःख की पहचान तब तक नहीं हो पाएगी जब तक हम दुःख से नहीं बच पाएँगे। यह पता नहीं कि दुःख क्या है। धन-संपदा बढ़ने से सुख बढ़ेगा ऐसा संसारी मानते हैं, लेकिन सुख बढ़ता नहीं, केवल दुःख ही बढ़ता है। तृष्णा बढ़ती रहती है। ज्यादा से ज्यादा प्राप्त करना चाहते हैं। इससे दुःखी होते रहते हैं। सारी जिंदगी भागदौड़ की और जाते समय राम नाम सत्य। सोचते कुछ और करते कुछ तो मंजिल कैसे मिलेगी। धन की ध्वनि रोम-रोम में हो तो धर्म की ध्वनि कैसे निकलेगी। आनंद श्रावक, कामदेव श्रावक, शालिभद्र, सेठ धन्ना, सेठ सुदर्शन के यहाँ धन की कमी नहीं थी, लेकिन उनकी रग-रग से धर्म की ध्वनि निकलती थी। धर्म ही उनको सुहाता था।** 'बोए बीज बबूल का तो आम कहाँ से होए' **आशा रखते हैं कि आम मिलेगा, लेकिन बीज बबूल का है तो क्या होगा? ऐसे ही धन-धन करेंगे तो धर्म कैसे होगा? सुखी होने का मंत्र त्याग ही है। पकड़ है तब तक भारीपन रहेगा। भारीपन हटाना है, शांत रहना है तो त्याग महत्त्वपूर्ण है। जीवन का कल्याण कैसे हो? आत्मकल्याण का भाव होगा तो ही उत्थान का भाव आएगा। विचारधारा बदलनी होगी। जैसे ही शुभ विचार आए मन में उन्हें उच्चारित करना चाहिए और उसी दिशा में पुरुषार्थ करना चाहिए। पीड़ा से आराम के लिए दवाई ली, लेकिन बीमारी ठीक नहीं हो पाई। मूल बीमारी ठीक करनी होगी। क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी बीमारी ठीक करनी होगी और मोह कम करना होगा तभी मूल बीमारी दूर हो पाएगी। बीमारी का इलाज महत्त्वपूर्ण है। अस्थायी पीड़ा दूर करने से बीमारी दूर नहीं होगी। वैसे ही आत्मकल्याण के लिए कषायों को हटाना होगा। पहले लोग सफेद बाल आते ही सावधान हो जाया करते थे। संसारी जीव समस्याओं का प्रबंध करते हैं, लेकिन समस्या समाप्त करने का उपाय नहीं करते। अनेक स्वाध्यायी हैं, जिन्हें विचार भी आता होगा कि संसार छोड़ना है, लेकिन क्रियान्वयन नहीं हो पाता। संसार असार है, संयम सुख का द्वार है। शुभ विचार मन में आने के बाद वाणी में लाइए। धार्मिक जाप भावनात्मक संबंध जोड़कर करें तो प्रशांत रस बनेगा जो सफलता दिलाएगा। रात्रि विश्राम के समय अच्छे विचारों के साथ नींद में प्रवेश करना चाहिए। सोने से पहले धार्मिक विचार रहें तो नींद अच्छी जाएगी। जिंदगी बहुत छोटी है, किंतु कीमती है। सही तरीके से जीना आना चाहिए। धर्म की गहराई में उतरेंगे तो सफलता मिल जाएगी। जीवन का लंबा समय निकल गया। अब जो बचा है उसी को संवार लो तो कल्याण होगा।** 'बीती तांही बिसार दे आगे की सुध ले' **जो रात्रियाँ गई उन्हें भूल जाओ और अब भी धर्मजागरण कर लो। गजसुकुमाल, अर्जुनमाली धर्म को समझकर आचरण में लाए और कम समय में मोक्ष प्राप्त कर लिया। आत्मा को दुःख से हटाकर सुख में ले जाने का उपदेश सुनकर जीवन में उतारना महत्त्वपूर्ण है। भीतर के दुःख-दारिद्र को हटाएँ और धर्म में पुरुषार्थ लगाएँ। धर्मयुक्त जीवन जीएँगे तो जीवन धन्य बनेगा।''**

प्रवचन के दौरान आचार्य भगवन् के श्रीमुख से भजन '**मैं तो ढूंढ्यों रे सब जग माय, सुखी ना मिलियो एक भी**' एवं '**उठो नर-नारियों जागो, जगाने संत आए हैं**' के बोल सुनकर संपूर्ण सभा भाव-विह्वल हो गई।

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धार्मिक शिविर अभिमोक्षम् के द्वारा ये समझाया जाएगा कि अच्छा इनसान कैसे बनना है, शांतिपूर्ण जीवन कैसे बनेगा। पूरे देश में एक माहौल बना है। 4200 से अधिक रजिस्ट्रेशन

हुए हैं। धार्मिक संस्कार ग्रहण करने के लिए बालक-बालिकाएँ, युवा सभी तत्पर हैं। यह अच्छा संकेत है। माता-पिता भी धार्मिक संस्कार देने के लिए तत्पर हैं। साध्वीवर्याओं ने '**धन धन जिनवाणी, भव्य जीवां ने मुक्ति पहुँचाती**' भजन प्रस्तुत किया।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के 61वें दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न शुभ संकल्प हुए। साध्वीवर्याओं ने सामूहिक गीत '**एक तो पुण्यवानी, दूसरे मीठे वचन**' फरमाया। धर्मसभा के अंत में श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने प्रत्याख्यान करवाए एवं आचार्य भगवन् ने आशीर्वाद स्वरूप मंगलपाठ श्रवण कराया।

धर्मसभा में एकासन, बियासन, उपवास, बेला, तेला के प्रत्याख्यान हुए। सुश्राविका संतोष बाई धूलचंद जी पोखरना, उदयपुर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष गण एवं लंदन से पधारी सिद्धि जी बोलिया सहित अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। सामूहिक एकासन कार्यक्रम में 250 एकासन संपन्न हुए। एक घंटे नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप वर्षीतप आराधकों की तपस्या के उपलक्ष्य में किया गया।

पुण्य होने पर ही धर्माराधना की अनुकूलता रहती है

9 मई 2024, चित्तौड़गढ़। दिन का शुभारंभ मंगलमय हो तो संपूर्ण दिवस एवं क्रमशः संपूर्ण जीवन मंगलमय हो जाता है। इसी कड़ी में प्रातःकालीन मंगल प्रार्थना से उपस्थित गुरुभक्तों ने अपना जीवन धन्य बनाया। तत्पश्चात् आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में आयोजित विशाल प्रवचन सभा में श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का नाम आदिनाथ भगवान भी है। नमिराजा एवं मरु देवी के सुपुत्र ऋषभ के गर्भ में आने से पूर्व माता मरु देवी को शुभ स्वप्न आए। जिनका वर्णन शकेंद्र देव ने बताया कि उनके गर्भ में महापुण्यवान जीव आने वाला है। मरु देवी माता की गोद में आने तक ऋषभ के कारण किसी प्रकार की तकलीफ उन्हें नहीं हुई। ऋषभ किसी को कष्ट नहीं पहुँचाने वाले थे। जन्म होने पर देवताओं ने जन्मोत्सव मनाया। नामकरण देवताओं के राजा इंद्र ने किया। देवता उन्हें खेल खेलाने आते थे। राजा इंद्र के हाथ में एक गन्ना देखकर ऋषभ ने उसे पकड़ने की। गन्ना पकड़ा और खाने लगे। गन्ने को इक्षु भी कहा जाता है। तभी से इक्षु कुल नाम पड़ा और ऋषभ इक्षु कुल के कहलाने लगे। बाद में 22 तीर्थंकर और हुए जो सभी इक्षु कुल के थे। ऋषभ का विवाह सुनंदा तथा सुमंगला से हुआ। उनके 100 पुत्र व दो पुत्रियाँ (ब्राह्मी व सुंदरी) हुई। सुपुत्रों को संपत्ति का प्रबंध सौंपा गया। दोनों पुत्रियों को 64 कलाएँ सिखाई। ब्राह्मी को लेखन/लिपि कार्य सिखाया एवं सुंदरी को गणित सिखाया। ब्राह्मी ने महिला उत्थान का कार्य किया। ऋषभदेव ने असि (अस्त्र-शस्त्र), मसि (लेन-देन व्यापार) एवं कृषि (खेती-बाड़ी) की जानकारी देकर भव्य जीवों को जीवन निर्वाह का तरीका बताया एवं यतनापूर्वक सभी कार्य करने सिखाए। 84 लाख पूर्व वर्षों तक शासन किया। सभी ऋद्धि-सिद्धि के देवता जिनके चरणों में निवास करते थे, ऐसे ऋषभदेव को विचार आया कि 'सुत बंध नर-नार किया है अनंत बार, काम नहीं आवे' और माता को प्रणाम करने गए। माता से निवेदन किया कि दीक्षा लेनी है। संयम मार्ग पर जाना है। माता को विश्वास था पुत्र पर। माता को प्रणाम करके संयम मार्ग पर बढ़ गए। यह विनय का अनुपम उदाहरण था। वर्तमान में कुछ पुत्र डिग्रियाँ प्राप्त करके पिता को कहते हैं कि आप नहीं समझोगे। ऐसा उस समय नहीं था। माता-पिता को प्रणाम करके सभी कार्य पूरे किए जाते थे। पूरा सम्मान दिया जाता था। सभी आज्ञाकारी होते थे। माता-पिता को साता देने वाले संस्कार होते थे। ऋषभ ग्रामानुग्राम पैदल विचरण करके संयम का पालन कर रहे थे। अनेक शिक्षाएँ देते हुए ऋषभ को 365 दिन आहार का योग बना। जनता उन्हें सोना-चाँदी, धन-

धान्य देने को आतुर थी, लेकिन वे नहीं लेते थे। 365 दिन बाद जब प्रासुक गन्ने का रस मिला तब ऋषभदेव का पारणा हुआ। वह दिन अक्षय तृतीया का था। तभी से अक्षय तृतीया का जैन धर्म में अत्यंत महत्त्व माना जाने लगा। अनेक तपस्वी वर्षीतप की तपस्या करते हैं। उनका वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया को होता है। वर्षीतप में लगातार दो वर्ष तक एक दिन उपवास एक दिन पारणा होता है। सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति के बाद यदि धर्माराधना संयम का भाव आता है तो यह पुण्यानुबंधी पुण्य कहलाता है, जहाँ परम सुख की प्राप्ति होती है। संसार स्वेच्छा से छोड़ना चाहिए अन्यथा संसार वाले आपको छोड़ देंगे। जीवन का अंत हो उससे पूर्व संयम में जीना होगा। बाद में सब कुछ अपने आप छोड़ना पड़ेगा।

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संघ में सेवा देने के भाव रखें। मेहमान नहीं स्वयंसेवक बनकर सेवा करें। श्रीसंघ से लेना नहीं, श्रीसंघ की सेवा करना महत्त्वपूर्ण है। धर्म-ध्यान से सेवा में जीवन सजाएँ, जीवन सफल बनाएँ।

तपस्याओं के क्रम में एकासन, उपवास, आयंबिल, बेला, तेला, पोरसी, दो पोरसी आदि के प्रत्याख्यान हुए। चारित्रात्माओं के भी तपस्याएँ गतिमान हैं। धर्मसभा के अंत में आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाकर उपस्थित गुरुभक्तों को आत्मतृप्त किया। दोपहर में एक घंटे नवकार मंत्र जाप तथा सायंकालीन प्रतिक्रमण व ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। इस दौरान संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी सहित अनेक पदाधिकारियों व प्रमुखगणों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के 62वें दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न शुभ संकल्प लोगों ने ग्रहण कर संथारे की अनुमोदना की। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा., साध्वी श्री अक्षयप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरक्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**गुरुवर पधारो हृदय में विराजो**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव, करो तपस्या मिटे समस्या

इक्षुरस से किया पारणा, आख्यातीज महान्,
जय-जय आदिनाथ भगवान।

सुपात्रदान की महिमा है अपरंपार

10 मई 2024। स्थानीय किला रोड स्थित आचार्य श्री नानेश रामेश समता भवन में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आध्यात्मिक योगी आचार्य श्री रामेश ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**ऋषभदेव भगवान को वंदन-नमस्कार करते हुए भक्त भावना करता है कि मेहरबानी हो जाए। मेहरबानी कैसे होगी? भगवान की वीतरागता सभी के लिए समान रूप से प्रवावित हो रही है। उनकी वाणी के अनुसार जीवन जीने की क्षमता पैदा करनी होगी, पात्रता पैदा करनी होगी। पात्र सीधा होगा तो पात्रता हो जाएगी। गोशालक व गौतम स्वामी, भगवान महावीर के समक्ष पहुँचे। गोशालक मेहरबानी को प्राप्त नहीं कर पाया। गौतम स्वामी ने मेहरबानी प्राप्त की, समर्थ बन गए।**''

सुपात्रदान का महत्त्व बताते हुए आगे फरमाया कि ''**सुपात्रदान की महिमा तीनों लोकों में प्रशंसनीय है। देवलोक में भी प्रशंसा होती है। अहोदानम्-अहोदानम् बोला जाता है। देते भावे भावना लेने वाला करे संतोष, ऐसे मंतव्य से सुपात्रदान का महत्त्व बढ़ जाता है। धर्म लाभ होता है। संयम में सहयोगी होता है।**

भगवान ऋषभदेव ने जीवन जीने की कलाएँ सिखाईं। जब जनता को जीवन जीने का तरीका समझ आ

गया तो फिर संग्रह बुद्धि नहीं रखने का बताया। जहाँ संग्रह बुद्धि हो, वहाँ संग्रह होता है। जब तक संग्रह बुद्धि का समाधान नहीं होता, शांति व्याप्त नहीं होती है। संग्रह बुद्धि से भाई-भाई का, रिश्तेदारों, मित्रों के प्रेम का बलिदान हो जाता है। राम व भरत के प्रेम का मार्मिक उदाहरण दिया। उनमें संग्रह बुद्धि नहीं, त्याग था। परोपकार की भावना, त्याग की भावना बढ़ने से संग्रह बुद्धि कम हो जाती है या खत्म हो जाती है।

जनता को संयम का पाठ पढ़ाने के लिए ऋषभ भगवान ने सब कुछ त्यागकर माता मरु देवी से दीक्षा की आज्ञा ली। त्याग मार्ग पर चले। अपने जीवंत आचरण से जनता को पाठ पढ़ाया। ग्रामानुग्राम विचरण के बीच 1 वर्ष तपस्या के बाद पारणा हुआ। श्रेयांस कुमार ने इक्षुरस का पान करवाया। एक बूँद भी नीचे नहीं गिरी। इसीलिए अक्षय तृतीया का महत्त्व माना जाता है। अक्षय साधना के लिए अक्षय तृतीया महान् है। आत्मनिधि स्वयं की निधि है। जिस पर टैक्स नहीं लगता, जिसे चोर चुरा नहीं सकता। धर्म की पूँजी बढ़ती जाती है। भव-भव में साथ जाती है।

भजन '**धर्म की पूँजी कमा ले, कमा ले जीवा**' गीत गाकर धर्मसभा को भावविभोर करते हुए फरमाया कि ''**संयम सीमा में रहते हुए त्यागमय जीवन जीएँ। जीवन धन्य बनेगा। नैतिक व आध्यात्मिक संस्कार निर्माण हेतु बालक-बालिकाओं व युवाओं के लिए 'अभिमोक्षम्' शिविर प्रारंभ हुआ। बालक-बालिकाएँ धर्म-संस्कृति को बनाए रखने में पूरा योगदान देंगे।**''

उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने संबोधित करते हुए फरमाया कि ''**भगवान ऋषभदेव से थोड़ा पहले प्रारंभ हुए युग राजा-प्रजा की व्यवस्था किसी न किसी रूप में शुरू हुई थी, लेकिन गुरु-शिक्ष्य परंपरा नहीं थी। मनुष्यों का जीवन चल रहा था। जरूरत से ज्यादा संसाधन थे। जितनी मांग थी उससे ज्यादा उपलब्धि थी। जो चाहिए वो मिल जाता था। किसी प्रकार की कमी नहीं थी। संग्रह की वृत्ति नहीं थी। जैसे-जैसे असुरक्षा के भाव आने लगे, माँग ज्यादा होने लगी। ऐसी भावना कि हमें मिलेगा कि नहीं। इन विचारधाराओं ने परस्पर कलह को जन्म दिया। समस्या पैदा होती है तो समाधान होता है। अलग से झगड़े होने लगे। कुछ समय तक उन्हें मैनेज करने का प्रयत्न चलता रहा। समय बदल गया। एक समय ऐसा आ गया जब खाने-पीने के भी लाले पड़ने की नौबत आ गई। ऐसे समय में भगवान ऋषभ का जन्म हुआ। उन्हें जन्म के समय ही अवधिज्ञान था। मतलब भूत-भविष्य को जानने की क्षमता प्राप्त थी। उन्हें दो चीजों की आवश्यकता महसूस हुई। मनुष्य शरीर को भोजन नहीं मिलेगा तो परस्पर संघर्ष होगा। समाधान के प्रश्न हुए। गृहस्थ परिवेश में रहते हुए ऋषभ ने खेती-बाड़ी का तरीका बताया। सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र जीवन को शांति देने वाली होती है। दुःखों से मुक्ति कैसे हो? इसलिए स्वयं को स्वनियोजित कर जनता जनार्दन को भी वह मार्ग बताया। '**आचरण में शब्दों से ज्यादा ताकत प्रेरणा के लिए होती है।**' कठिन अवस्थाओं को पार किया। बाद में जीवन के अनुभव प्राप्त हुए, जो राजा की अवस्था में नहीं मिले थे, जो अमीरी-रईसी में नहीं मिले थे, परिवार-समाज में नहीं मिले थे। ऐसे अनुभव जिनके लिए ऐश्वर्य, उनका प्रभाव, उनकी संपत्ति ऋद्धि, उनका शौक आदि अनुभवों के आगे फीके पड़ गए। जैसे चमकते सूर्य के सामने चंद्रमा फीका पड़ जाता है, वैसे ही उनके आत्मज्ञान के अनुभव ने उनके भीतर एक ऐसी अपूर्व शांति का अहसास करवाया जो जीवन में नहीं मिया। ऋषभ ने जीवन के प्रारंभ से ही समाज की बहुत सेवा की थी, मदद की थी। जहाँ-जहाँ लोग अटक जाते, उन्होंने उन बाधाओं को दूर किया। खाने-पीने, रहने-सहने, पढ़ाई-लिखाई सभी बातें बताई, लेकिन जब अलग ही ज्ञान उनके भीतर जाग गया तो उनकी आत्मा को टिमटिमाते तारों को दिखाने की जरूरत महसूस हुई। उन्होंने शारीरिक मदद नहीं ली। उनकी आत्मा समग्र जनसमुदाय को ऐसा मार्ग दिखाने में तत्पर हुई, वह कला सिखाने में तत्पर हुई। जिनका प्रभाव जनमानस में युग-युगांतरों तक एवं भविष्य**

के अनंत काल तक टिका रहे। उनके भावों में वह शक्ति थी, उनका ज्ञान इतना एक्सपर्ट था कि जीव-अजीव का अंतर, जड़ पदार्थों की व्यर्थता, चेतनता का अंतर, उनकी आत्मा में प्रकट हो गया था। भिन्न शब्दों के आचरण से उपदेश होता था। मरु देवी माता उनका सौम्य विरक्त चेहरा देखकर अपनी सोच बदलती थी। जो माता अपने बालक को सब कुछ समझती थी, लेकिन भगवान की वैराग्य मूर्ति अनासक्त भावों की छवि देखकर उसके बंधन टूट गए। अनासक्त त्याग की भावना हो गई।

प्रभु का जीवन त्याग का जीवन बन गया। पहला बड़ा बदलाव था भौतिक ऐश्वर्य को पीठ दिखाकर अध्यात्म के पथ पर चलने का भाव। शुभ भाव धारा प्रवाहित हुई। सत्य ज्ञान समझा। प्रभु द्वारा बताए मार्ग पर जनता बढ़ चली। आजा का दिवस मोक्ष के अभिमुख जाने का दिवस है। संसार की असारना जड़ पदार्थों की तुच्छता को समझने का दिवस है। भौतिक ऐश्वर्य के कचरे को छोड़कर पावन बनने का दिवस है। आचार्य श्री रामेश के उपदेश तीर्थंकर भगवान के बताए मार्ग के अनुसार है। उसी के अनुरूप अपने पुरुषार्थ को जगाएँ।''

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्रद्धा भक्ति का जीवन में बहुत महत्त्व है। संयम शतक में जीवन को संयममय बनाएँ। सभी समर्पणा से सफलता मिलती है। '**श्रद्धा भक्ति से जो भी तेरा ध्यान लगाए**' गीत गाकर धर्मसभा को प्रेरणा दी। तपस्या से बढ़कर संयम मार्ग को आगे बढ़ें, जीवन सफल होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत '**कैसी होती है साधना**' प्रस्तुत किया।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने उपस्थित सभी से प्रार्थना करवाई कि हे गुरुदेव! वह दिन मेरा भी आए जब मैं वर्षीतप की आराधना करूँ। अंत में आचार्य श्री रामेश ने मंगल पाठ सुनाया। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की कृपा से चित्तौड़गढ़ में अनेक धार्मिक कार्यक्रम हो चुके हैं।

सभा का संयोजन करते हुए स्थानीय संघ मंत्री व महेश नाहटा ने चारित्रात्माओं एवं वर्षीतप आराधक भाई-बहनों की तपस्या का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, समता युवा संघ, महिला मंडल, समता बहू मंडल एवं सकल जैन समाज चित्तौड़गढ़ तथा मेवाड़ व देश के अनेक संघों-संस्थानों ने तपस्वियों का स्वागत, अभिनंदन, बहुमान किया।

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे के 63वें दिवस के उपलक्ष्य में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। नवकार मंत्र जाप के प्रत्याख्यान भी हुए। एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़ एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा सभी तपस्वियों का सम्मान किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। सभी 105 तपस्वी भाई-बहनों को इक्षुरस से परिजनों एवं संघों ने पारणा करवाया।

भोजन में जूठा नहीं डालने का संकल्प हजारों भाई-बहनों ने धर्मसभा में लिया। कई भाई-बहनों ने वर्षीतप आगे बढ़ाने हेतु संकल्प लिया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। मेवाड़ सहित देश के कोने-कोने से हजारों श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थीं।

कई वर्षीतप आराधक भाई-बहनों ने 5, 10, 15, 20 से भी अधिक वर्षों से एकांतर तप करके अपनी आत्मा को भाविक कर रहे हैं। 85 वर्षीय ज्ञाना देवी भूरा, देशनोक 23 साल से लगातार एकांतर कर रहे हैं। 78 वर्षीय शिव सिंह जी चौधरी ने भी अपने 8वें वर्षीतप का पारणा किया। खैरागढ़ की सरला बाई सांखला ने अपने 20वें वर्षीतप का पारणा किया।

मन, वचन, काया की व्यर्थ हिंसा से बचें

11 मई 2024। आचार्य श्री नानेश रामेश समता भवन में धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''जहाँ दुःख नहीं है, द्वंद्व नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, ऐसा मोक्ष स्थान सिद्ध क्षेत्र है। प्रश्न यह उठता है कि सुख कैसे प्राप्त करें? जिन्होंने मोक्ष सुख प्राप्त किया, वो कैसे प्राप्त किया? आज ऐसा सुख प्राप्त करना चाहें तो कैसे होगा? राग, क्रोध, अज्ञान एवं मोह दूर कर भगवान के बताए मार्ग पर चलने से मोक्ष सुख प्राप्त किया जा सकता है। मोह विपरीत दिशा में ले जाता है। अज्ञान अर्थात् नहीं जानना। कर्म अनुकूल हों तो सभी सफलताएँ प्राप्त हो जाती हैं। कर्म अनुकूल नहीं हैं तो कोई देवता भी सहयोग नहीं करता है। पुण्य हों तो साता मिलती है। कर्मों को आगे-पीछे करने की ताकत किसी और में नहीं है। कर्मों की अदला-बदली नहीं हो सकती। कर्मों का फल भोगे बिना मुक्ति नहीं होगी। धार्मिक क्षेत्र में या धर्म क्षेत्र में दूध का दूध और पानी का पानी होता है। जिसका मन सदा धर्म में लगा रहता है, उसको देवता भी नमन करते हैं। भावों के आधार पर पुण्य योग से निमित्त फलने वाला हो जाता है। निमित्त पुण्य व पाप के आधार पर फलित होते हैं।**

दुःशासन ने द्रौपदी का चीरहरण किया और पाप कर्म का उपार्जन किया। शकुनि ने जुआ खेलने की प्रेरणा दी, उससे पाप का उपार्जन हुआ। पाप कर्म करके कर्मबंध की स्थिति बन जाती है। पुण्य कर्म करने से पुण्यवानी बँधती है। कोई भी कार्य यतनापूर्ण, विवेकपूर्ण होना चाहिए। दिन के अंत में यह विचार करना चाहिए कि कितने कार्य पाप के हुए हैं, कितना क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष किया। इनके लिए क्षमायाचना करनी चाहिए। क्षमा की भावना पुण्य का अर्जन करने वाली बनेगी। इससे मन प्रसन्न हो जाएगा। क्षमायाचना हेतु मन को सरल बनाना पड़ेगा। मन में सरलता आ गई तो क्षमायाचना में देर नहीं लगती है। मन के धनी व्यक्ति ही साधु जीवन का पालन कर सकते हैं। मन का गरीब आदमी साधु जीवन का पालन नहीं कर सकता। साधु जीवन स्वीकार करना वीरता का पथ है। मगध सम्राट राजा श्रेणिक ने अनाथी मुनि को देखकर प्रश्न किया कि आपको देखकर लगता कि आप राजकुमार हैं, प्रतिष्ठित घराने से हैं। आप मेरे महल में पधारें। आपने दीक्षा क्यों ली? साधु जीवन क्यों स्वीकार किया? अनाथी मुनि ध्यानस्थ थे। उन्होंने ध्यान पूरा होने पर कहा कि राजन्! मैं दीक्षा से पूर्व अनाथ था इसलिए साधु जीवन स्वीकार किया है। राजा ने कहा कि मैं आपका नाथ बनूँगा, आप पधारें। अनाथी मुनि ने कहा कि राजन्! आप स्वयं अनाथ हैं। मेरे नाथ नहीं बन सकते। राजा ने कहा कि मैं मगध का राजा अनाथ कैसे? तब अनाथी मुनि ने कहा कि जो मन के घोड़े को काबू करने में समर्थ नहीं हो, वह अनाथ है। जो अपने स्वार्थ के लिए छह काय के जीवों की हिंसा करे, वो अनाथ है। साधु जीवन में छह काय जीवों की रक्षा होती है। किसी भी निमित्त से साधु जीव की हिंसा नहीं करते।

गृहस्थ जीवन में रहते हुए हिंसा से बच नहीं सकते। 12 व्रतधारी तथा प्रतिमाधारी श्रावकों से भी जीवों की विराधना हो सकती है। हिंसा दो प्रकार की होती है- अर्थ हिंसा तथा अनर्थ हिंसा। किसी प्रयोजन से कार्य करते समय, परिवार चलाने हेतु, शरीर चलाने हेतु हिंसा, प्रयोजन हिंसा या अर्थ हिंसा कहलाती है। लेकिन बिना कारण के हिंसा अनर्थ हिंसा होती है। बिना कारण हिंसा से बचना चाहिए। आनंद श्रावक 40,000 गायों की सेवा करते थे। उसमें हरी घास, कच्चे पानी की व्यवस्था भी होती थी। वो प्रयोजन से हिंसा थी, जिसमें कच्चा पानी तथा हरी घास का प्रयोग होता था। अनर्थ हिंसा नहीं थी। खेती-बाड़ी में होने वाली हिंसा अर्थ हिंसा है। उसमें हिंसा का लक्ष्य नहीं होता। हिंसा का बारीक विश्लेषण है। समझना होगा कि जान-बूझकर अनावश्यक जीवों की

विराधना न करें। गृहस्थ जीवन के कार्यों को लाचारी से करना पड़ता है। अनर्थ हिंसा का त्याग करना चाहिए। अनर्थ हिंसा का बचाव होना चाहिए। निरंतर चिंतन-मनन से पापों से बच सकते हैं। केवल सुनने एवं धार्मिक क्रिया करने मात्र से नहीं, भावों से जुड़ें। प्रत्येक कार्य सावधानीपूर्वक, ज्ञानपूर्वक करेंगे तो सफलता मिलेगी। जिससे साख खराब हो, ऐसा वचन नहीं बोलना चाहिए। झूठ नहीं बोलना चाहिए। मन, वचन, काया के पापों से बचना चाहिए। साधु सजग रहते हैं कि असत्य वचन मुँह से नहीं निकले। श्रावक व्रतों से आराधना करें। जीवन में परिवर्तन आएगा, सुख-संतोष आएगा।''

भजन '**रोज शाम को जीवन खाता खोलो, करो विचार श्रावक तेरा यह आचार**' की कड़ियों से धर्मसभा को आत्मविभोर करते हुए आचार्य भगवन् ने आगे फरमाया कि '''**राग-द्वेष को पतला करो तो पहुँचो निर्वाण**'। **मानव जीवन सृष्टि का राजा जीवन है। जीवन को निर्णयशील बनाकर मोक्ष रूपी रथ पर बढ़ेंगे तो धन्य होंगे।**''

प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन-कुशल मन, काया-कुशल काया, वचन-कुशल वचन; इसी तरह से अकुशल मन, अकुशल काया और अकुशल वचन है। इसमें कुशल मन का मतलब श्रेष्ठ शुभ मन, कुशल काया का मतलब श्रेष्ठ शुभ कुशल काया, कुशल वचन का मतलब श्रेष्ठ शुभ कुशल वचन। और जो पाप कर्मों का बंधन कराए, वो अकुशल मन, अकुशल काया और अकुशल वचन हैं। जीवन में मन कैसा होना चाहिए, उपर्युक्तानुसार समझना चाहिए।

अकुशल मन, वचन, काया की क्रिया में पाप बंध होता है। जैसे शकुनि ने जुआ खेलने को उकसाया। राजा दशरथ ने पानी पीता हिरण समझकर श्रवण कुमार पर शब्द बाण चलाया । ये सब उदाहरण पाप क्रिया वाले हैं।

कुशलानुवेदी कर्म, अकुशलानुवेदी कर्म से जीवन प्रभावित होता है। सजग रहना चाहिए। बाहुबली एक साल तक ध्यानस्थ रहे। गजसुकुमाल ने सिर पर अंगारे रखे। देवकी महारानी ने दान बहराया। यह सब उनका कुशलानुबंधी पुण्य था। हम किसका बंध कर रहे हैं, चिंतन करना होगा। ऐसे श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं तो 2-2 घंटे प्रतिदिन धर्म-ध्यान से कुशलानुबंधी पुण्य करते हैं, उन्हें कुशलक्षेम रहती है। सुख-साता तभी रहती है जब कुशलानुबंधी पुण्य हो। अपने आपको मन, वचन, काया से धर्म में प्रेरित करना। अकुशल कार्यों के लिए प्रेरित करने वाले ज्यादा हैं। अनावश्यक क्रियाओं से बचें। आचार्य भगवन् का प्रवचन जीवन में उतारें, तभी जीवन सफल होगा।

प्रवचन सभा में श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति से शांति मिलती है। प्रार्थना '**ओ पार्श्वनाथ तुम्हारे चरणों में हम सबका वंदन है**' गाते हुए बताया कि जहाँ लाभ होता है वहाँ लोभ बढ़ता है। सबसे बड़ा धन संतोष है। संतोषी सदा सुखी रहते हैं। जीवन में संतोष लाएँ। उदाहरणों के माध्यम से धर्मसभा को संबोधित किया। प्रवचन सभा के अंत में आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान किया।

अभिमोक्षम् शिविर में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, स्थानीय संघ की टीमें सभी इकाइयों के साथ तत्परता से सेवारत हैं। भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के संथारे का 64वाँ दिन सुखसातापूर्वक गतिमान रहा। नवकार महामंत्र जाप, एक गिलास अचित्त पानी प्रयोग, शीलव्रत आदि के प्रत्याख्यान हुए तथा अनेक जनों ने एकासन, बियासन, उपवास, पोरसी, दो पोरसी व्रत नियम ग्रहण किए। अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं, संघों ने धर्मलाभ लिया। अभिरामम्-आनंदम् (खुली पुस्तक परीक्षा) की जानकारी एवं प्रेरणा दी।

दोपहर में ज्ञानचर्चा तथा सायंकाल में प्रतिक्रमण व ज्ञानचर्चा का कार्यक्रम हुआ। देश के अनेक स्थानों से भाई-बहनों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया।

आचार्य नानेश पी.जी. मेमोरियल अस्पताल एवं पी.जी. फॉइल्स लिमिटेड, पिपलिया कलां द्वारा चित्तौड़गढ़

में 10 से 26 मई तक चार चिकित्सकों व पंद्रह अन्य मेडिकल कर्मचारियों सहित अभिमोक्षम् संस्कार शिविर में तीन एंबुलेंस गाड़ियाँ, वार्ड/ऑक्सीजन गाड़ी, डेंटल व लैब फिजियोथेरेपी एक्सपर्ट मशीन, ई.सी.जी., दवाइयों सहित पूर्ण रूप से निःशुल्क सेवाएँ दी जा रही हैं।

आचार्य भगवन् की असीम कृपा से यह चिकित्सालय पिपलिया कलां में पूर्णतया निःशुल्क सेवाएँ दे रहा है, जिसमें ऑपरेशन, दवाइयाँ, एम.आर.आई., सोनोग्राफी, ई.सी.जी., सी.टी. स्कैन, एक्स-रे, खून व मूत्र जाँच इत्यादि शामिल हैं।

धर्म श्रद्धा से होती है इंद्रिय विषयों से आसक्ति दूर

12 मई 2024, आचार्य श्री नानेश रामेश समता भवन, किला रोड, चित्तौड़गढ़। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**भगवान महावीर से प्रश्न पूछा गया कि जीव में श्रद्धा पैदा होने पर उस जीव को क्या लाभ होता है? क्या फायदा होता है? क्या अनुभूति होती है? तो भगवान ने फरमाया कि इंद्रिय विषयों से आसक्ति हटती है। आसक्ति हटने से कर्म बंधन रुकता है, धर्म बढ़ता है। धर्म श्रद्धा से आत्मा का सुख सुरक्षित रहता है और धर्म जीवन का प्राण है।**

जो जीव पाँच इंद्रियों के विषयों में आसक्त होकर जीवन जी रहा था, वह जीव धर्म श्रद्धा से अनासक्त बन जाता है। जैसे-जैसे धर्म श्रद्धा का भाव जीवन में आता है, जीवन में परिवर्तन हो जाता है। धन-संपत्ति, आहार, सुगंध, दुर्गंध के प्रति अनासक्ति का भाव आ जाता है। स्वाद के प्रति भी रुचि हट जाती है। शरीर चलाने के लिए आहार करना है, स्वाद के लिए नहीं। श्रद्धा होने से पूर्व जीव स्वाद के लिए आहार करता है और श्रद्धा के बाद शरीर स्वास्थ्य तथा अन्य की सेवा के लिए आहार करता है। भावों में फर्क आ जाता है। धर्म श्रद्धा से अशुभ कर्मों का बंधन रुक जाता है। भोजन का तरीका समझना चाहिए। भूख से कम खाना चाहिए। पेट खाली रहेगा तो पानी की पर्याप्त जगह रहेगी। वात की बीमारी नहीं बढ़ेगी। ऋतु अनुसार भोजन करना चाहिए। क्या खाना, क्या नहीं खाना, यह ध्यान रखना चाहिए।'' चैत्र से लेकर फाल्गुन तक किस माह क्या आहार वर्जित माना गया है पूर्ण विवरण धर्मसभा में विस्तार से बताया। ठंडी रोटी के फायदे बताते हुए आगे फरमाया कि ''**आहार में ठंडी रोटी के प्रयोग से विटामीन बी-12 की समस्या का समाधान हो सकता है। पुराने समय में ठंडी रोटी दूध के साथ, दही के साथ या घी के साथ खाने का चलन था। वर्तमान में भी अनेक लोग ये आहार करते हैं, जो ब्रेड-बिस्किट से बेहतर है। जानते सभी हैं लेकिन आहार में सावधानी रखने वाले कम हैं। रात्रि में किया गया भोजन पच नहीं पाता, जिससे शरीर में विकार पैदा होते हैं। रात्रिभोजन सभी के लिए निषेध है। प्रतिकूल दिनचर्या से स्वास्थ्य प्रभावित होता है। अनुकूल दिनचर्या से जीवन व्यवस्थित रहता है। इंद्रियों के सुख आत्मा को पतन की ओर ले जाने वाले होते हैं। बड़ा बंगला, बड़ी गाड़ी, फर्नीचर, पसंद का आहार इत्यादि सुख नहीं देते। आहार-पानी जीभ से नीचे उतरने के बाद स्वाद वाले नहीं रहते। थोड़े से स्वाद के लिए कितने कर्मों का बंधन हो जाता है। संसारी प्राणी इंद्रिय सुखों को सुख मानते हैं, जबकि वे वास्तविक सुख नहीं हैं। आहार करते समय स्वयं की थाली में देखना चाहिए, दूसरे की थाली में नजर नहीं डालनी चाहिए। अपने आप में संतुष्ट रहना सुखी जीवन के लिए आवश्यक है। जो मिल गया वह पहन लिया। कपड़ा शरीर की लज्जा के लिए है, दिखावे के लिए नहीं। हार्ट अटैक ब्लॉकेज के कारणों को समझेंगे तो समस्या नहीं होगी। दिखावे से बचना होगा। पाप कर्मों का उपार्जन न हों ऐसी सावधानी रखनी होगी। बालक-बालिकाओं के लिए अभिमोक्षम् शिविर हो रहा है। सभी को चिंतन-मनन करना चाहिए। धर्म श्रद्धा का दायरा विशाल है। धर्म से सुख सुरक्षित रहेगा। धर्म जीवन का प्राण है। विचार करें तो यह जीवन धन्य बनेगा।''**

धर्मसभा में अनेक जनों ने रात्रि भोजन त्याग का प्रत्याख्यान लिया। एकासना, बियासना, उपवास, आयंबिल, तेला, बेला के प्रत्याख्यान भी हुए।

जीवन सरल, भद्रिक व छल-कपट से रहित हो

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारा सीझा

13 मई 2024, चित्तौड़गढ़। संथारा साधिका 95 वर्षीय साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का **66 दिवसीय संथारा** आज प्रातः भदेसर में पूर्ण होने के समाचार ज्ञात होने के पश्चात् गुणानुवाद सभा उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आयोजित की गई। आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में आयोजित इस गुणानुवाद सभा में जन-जन की आस्था के केंद्र आचार्यदेव ने अपनी दिव्य पीयूषवर्षिणी वाणी में फरमाया कि ''**भदेसर में महासती श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने दो माह से ऊपर साधु जीवन की साधना संलेखना-संथारा सहित 95 वर्ष की उम्र में शरीर का मोह व आहार त्याग करके जीवन धन्य बना लिया। आज प्रातः सूचना प्राप्त हुई कि उनका संथारा सीझ गया है। भदेसर में साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के वहाँ विराजने के दौरान संथारा/दीक्षा हेतु संपूर्ण विचार करके संथारा/दीक्षा का प्रसंग बना। महाभाग्यवान को ऐसा अवसर मिलता है। श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का जीवन सरल एवं छल-कपट से रहित था। भद्रिक, स्वस्थ व्यक्ति भी ऐसी भयंकर गर्मी में अस्वस्थ हो जाते हैं। महासती जी ने शरीर से ममत्व भाव हटा आहार त्यागकर संथारा-संलेखना का प्रत्याख्यान लिया। शरीर से संबंध नहीं है, ऐसी सोच से ज्योतिर्मय व आराधक बनते हैं। संलेखना विधि सहित होने पर 3 या 5 या 15 भव में सिद्ध गति/मोक्ष गति की स्थिति बन जाती है। पुद्गल अलग हैं, जीवन अलग है। इसे समझना होगा। ऐसी संथारा साधिका महासती श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि जीवन सरल, भद्रिक हो, छल-कपट से रहित हो। पुद्गल कभी जीवन का अंग नहीं बन सकता। अतिक्रमण करेंगे तो आक्रमण होगा। संथारा-संलेखना की स्थिति यह बोध कराती है कि जीव शुद्ध चेतन आत्मा है। ऐसे विचारों से बुद्धि को तेजस्विता मिलती है। संथारा साधिका जी ने जीवन सफल किया। ऐसे रामकस्तूर श्री जी म.सा. के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन सरल, स्वच्छ, पवित्र करेंगे तो धन्य-धन्य बनेंगे।**'' आचार्य भगवन् ने जैसे ही भजन '**पुद्गल दे दे धक्का मुझको, खूब रूलाया है**' के शब्द उच्चारित किए, संपूर्ण सभा वैराग्य भावों में हिलोरे लेने लगी।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गर्मी की अधिकता, 95 वर्ष की आयु फिर भी मनोरथ पूर्ण करने के भावों के साथ संथारा व दीक्षा लेकर संथारा पूर्ण करने वाले मोहत्यागी, आहारत्यागी महासती श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का आज प्रातः पंडितमरण हो गया। मनोरथ है कि वह दिन धन्य होगा जब आलोचना करके गुरु के समीप प्रतिक्रमण कर अंतर्हृदय से निंदा करके, गर्हा करके, पश्चात्ताप करके व्रतों और मन को निःशल्य बनाना है। राग सबसे ज्यादा शरीर से किया जाता है। सर्दी, गर्मी से शरीर को बचाया, मच्छरों से बचाया, बहुत मेहनत की इस शरीर के लिए, लेकिन मौत आने पर शरीर नहीं बचा पाएँगे। कोई चिकित्सक भी मौत से नहीं बचा पाएगा। शरीर की रक्षा के लिए मच्छरों को मारने हेतु ऑलआउट व इलेक्ट्रिक बेट लाए। मौसम के अनुकूल भोजन शरीर को कराया। बहुत मेहनत व पाप क्रियाएँ करके शरीर की रक्षा करते हैं, पर अंतिम समय आने पर डॉक्टर कहते हैं- भगवान का नाम लो और घर ले जाओ। मौत से कोई बचा नहीं सकता। अतः बारह व्रत में, संयम में देरी क्यों? नियम पालने में देरी क्यों? रोते-रोते नहीं मरना, हँसते-हँसते मृत्यु को महोत्सव बनाना है।

श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी तैयारी ऐसी हो कि मृत्यु महोत्सव बन जाए। मैं कुछ नहीं, मेरा

कुछ नहीं और मुझे कुछ नहीं चाहिए। पंडितमरण की भावना रखें। 95 वर्षीय संथारा साधिका जी ने मृत्यु को महोत्सव बना दिया। केवली प्ररूपित धर्म के निकट रहें।

अंत में धर्मसभा में उपस्थित सभी जनों ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर अपनी भावांजलि अर्पित की। एकासना, उपवास, बियासना आदि तप के प्रत्याख्यान हुए। देश के अनेक स्थानों से श्रद्धालुओं की उपस्थिति गुरु समर्पणा की द्योतक बनी।

अनुकंपा, दया, संवेदनशीलता जैसे गुणों को दें महत्त्व

14 मई 2024, चित्तौड़गढ़। प्रातःकालीन प्रार्थना श्री रामयश मुनि जी म.सा. ने करवाई। तत्पश्चात् समता भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि व्यक्ति जीवन में बहुत सारी आशाएँ रखते हैं। सोचते हैं कि सारी पूरी हो जाएँ। इसी प्रकार आशाएँ बढ़ती जाती है। धर्म-ध्यान, सत्संग, स्वाध्याय, तप-जप, नियम, संयम तो बाद में कर लेंगे। ऐसी सोच के साथ धर्म को टालते रहते हैं। जीवन का पता नहीं कब क्या हो जाए? समय रहते निरंतर धर्म-ध्यान में प्रवृत्त रहना चाहिए। श्रावक-श्राविकाएँ बारह व्रतधारी हों तो साधु-साध्वियों के संयम पालने में सहयोगी बनने का लाभ लेते हैं।

अभिमोक्षम् शिविर में बालक-बालिकाएँ लाभ ले रहे हैं। एकासना, आयंबिल, उपवास, बेला एवं बियासना की तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। धर्मसभा की पूर्णता पर आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। दोपहर में ज्ञानचर्चा एवं रात्रि प्रतिक्रमण व धर्मचर्चा आदि धार्मिक आयोजन हुए।

श्रद्धा भक्ति से बनता है जीवन उच्च

15 मई 2024, चित्तौड़गढ़। प्रातःकालीन धार्मिक क्रियाओं के पश्चात् समता भवन में आयोजित प्रवचन सभा में श्री अटल मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिंदगी की हकीकत जब तक समझ आती है तब तक समय हाथ से निकल जाता है। ठोकर पर ठोकर लगती रहती है। दिमाग में अटकन बनी रहती है। मूल कारण मोहनीय कर्म का बंधन होता है। मोहनीय कर्म रूपी कषाय की सेना में क्रोध, मान, माया, लोभ पीछे लगे रहते हैं। इसी कारण से मोह बढ़ता है। मोहनीय कर्म के बंधन के कारण मोहजाल से निकल नहीं पाते हैं। दुःख का मूल कारण मोहनीय कर्म ही हैं। आत्मशक्ति को पहचानते हुए जीवन में आगे बढ़ें, सत्संग करें और सद्गुरु के समीप रहें। आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के नित नए आयामों के माध्यम से जीवन सजाएँ और जीवन को सफल बनाएँ।

अभिमोक्षम् शिविर पूरी सफलता के साथ गतिमान है। बालक-बालिकाएँ लाभ ले रहे हैं। प्रयास यही है कि भावी पीढ़ी नैतिकता व अध्यात्म से भरपूर जीवन जीने वाली तथा सुख-शांति व संतुष्टि का वातावरण देने वाली हो। धर्मसभा का संयोजन करते हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष ने आगत गुरुभक्तों के लिए आभार व्यक्त किया। विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

धर्मसभा के अंत में आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाकर गुरुभक्तों के जीवन को पावन किया। दोपहर में धर्मचर्चा में आगमसार के रूप में ज्ञानार्जन का अवसर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को प्राप्त हुआ। सायंकालीन प्रतिक्रमण में अति उत्साह के साथ बालकों ने लाभ लिया।

चित्तौड़गढ़ सहित संपूर्ण मेवाड़ एवं देश के अनेक भागों से आने वाले गुरुभक्त इस भीषण गर्मी में महापुरुषों द्वारा अमृतवाणी की वर्षा से आत्मतृप्त हो रहे हैं। चित्तौड़गढ़ में अभिमोक्षम् शिविर, उन्नयन शिविर के पश्चात् 9 जून को बेगूँ में जैन भागवती दीक्षाओं के प्रसंग पर महापुरुषों का पधारना संभावित है।

तपस्या सूची

आजीवन शीलव्रत	दिनेश जी सहलोत-चित्तौड़गढ़, सत्यनारायण जी काकड़ा-चित्तौड़गढ़, रतनलाल जी बोहरा, झंवरीलाल जी नाहर, महेंद्र जी बोहरा-चित्तौड़गढ़, तिलक जी मीना जी मेहता, सुरेश जी बाघमार, प्रभुलाल जी व्यास, दिनेश जी मंजू देवी पोखरना-उदयपुर, रोशनलाल जी सुराणा-सतखंडा, बाबूलाल जी सुशीला देवी पोखरना-बेगूँ, मंगलचंद जी चंदनबाला जी पारख-कलोदा, लैलापद संचेती-मांडोलो स्टेशन
पोरसी	**100 -** रूपा जी चावत
गाथा का स्वाध्याय	**वर्ष में 3 लाख -** पुष्पा जी मुणत-रतलाम (10 तेले व 2000 सामायिक)

-महेश नाहटा

चित्तौड़गढ़ में वर्षीतप पारणा करने वाले तपस्वियों की सूची

1. अनिता जी ओस्तवाल, धरणगाँव
2. कविता जी ओस्तवाल, धरणगाँव
3. सीमा जी ओस्तवाल, धरणगाँव
4. विद्या जी बुरड़, नंदुरबार
5. विनोद जी जैन, नंदुरबार
6. जिनेश जी बुरड़, वाण्याविहीर
7. प्रतिभा जी जैन, वाण्याविहीर
8. संगीता जी जैन, वाण्याविहीर
9. कीर्ति जी बोहरा, वाण्याविहीर
10. पुनम जी बोहरा, वाण्याविहीर
11. कमला बाई मठ्ठा, आवरीमाता
12. पिस्ता देवी सांखला, अहमदाबाद
13. शांति देवी सेठिया, अलाय
14. अलका जी मारू, बड़ीसादड़ी
15. नरेश कुमार जी जैन, बनेड़िया
16. आरती जी नवलखा, बारडोली
17. चंद्रकांता जी बाबेल, ब्यावर
18. जूली जी चौधरी, ब्यावर
19. नवरतन देवी रांका, ब्यावर
20. पद्मावती जी कोठारी, ब्यावर
21. विजयलक्ष्मी जी मोदी, भदेसर
22. दिनेश कुमार जी देसरड़ा, भीलवाड़ा
23. इंद्रा देवी देसरड़या, भीलवाड़ा
24. किरण जी सेठिया, भीलवाड़ा
25. आशा जी रांका, बीकानेर
26. सरिता जी सुराणा, बीकानेर
27. चंद्रकला देवी दफ्तरी, भीनासर
28. प्रेमलता जी जैन, बोहेड़ा
29. जगदीशलाल जी भंडारी, बोहेड़ा
30. कंचन देवी भंडारी, बोहेड़ा
31. कंचन जी भंडारी, बोहेड़ा
32. किशनलाल जी भंडारी, बोहेड़ा
33. लीला देवी जैन, बोरदिया कलां
34. पारस बाई लुणावत, चेन्नई
35. पुष्पा जी समदड़िया, संभाजीनगर
36. अभय कुमार जी बोहरा, चित्तौड़गढ़

37. कोयल देवी पोखरना, नानेशनगर-दाँता
38. आशा जी डागा, दिल्ली
39. कंचन जी आंचलिया, दिल्ली
40. सुशीला जी बाफना, धुले
41. वर्षा जी जैन, धुले
42. रेखा जी भंडारी, गिरवा
43. शांति देवी बोहरा, गुड़ी
44. मंजू देवी चोरड़िया, हरमाड़ा किशनगढ़
45. अंगूरबाला जी जैन, इंदौर
46. सौरम बाई जैन, इंदौर
47. रेखा जी बंबकी, जहाँगीरपुरा
48. आनंद जी जैन, जयपुर
49. राज बाई जैन, जलगाँव
50. ऊषा जी कोठारी, जलगाँव
51. गुणबाला जी बंबोरिया, जावद
52. इंद्रा जी चौधरी, जावद
53. कैलाश जी सांखला, जोधपुर
54. शांति देवी, जोधपुर
55. मीना जी जैन, कांकरोली
56. संपतलाल जी जैन, कांकरोली
57. मधु जी मुरड़िया, कानोड़
58. नीना जी पंवार, कानवन
59. सरला जी सांखला, खैरागढ़
60. निर्मला जी कास्टिया, खजूरी बाजार
61. मीनल जी ढोलकिया, खरियार रोड
62. संगीता जी भंडारी, खिरकिया
63. हस्तीमल जी चंडालिया, मंदसौर
64. शिव सिंह जी चौधरी, मंदसौर
65. विनोद देवी संकलेचा, नागौर
66. शोभा जी आसानी, नागपुर
67. रेणुका जी पावेचा, नामली
68. भावना जी वया, नीमच
69. लता जी बोकड़िया, नीमच
70. कल्पना जी सिंघवी, निम्बाहेड़ा
71. कुसुम देवी पोरवाल, निम्बाहेड़ा
72. मंजू जी सेठिया, निम्बाहेड़ा
73. कैलाश बाई बलाई, निम्बाहेड़ा, बड़ी
74. ज्ञाना देवी भूरा, नोखामंडी
75. आशा देवी जारोली, पलसाना
76. भैरूलाल जी जैन (वीरवाल), पिलानी
77. ललित जी बंबोरिया, पिपलिया मंडी
78. मेघा जी पामेचा, पिपलिया मंडी
79. रीना जी भंडारी, पिपलिया मंडी
80. सुनीता जी बंबोरिया, पिपलिया मंडी
81. विद्या जी जैन, पिपलिया मंडी
82. जसवंत कुँवर जी चिप्पड़, प्रतापगढ़
83. कमलेश जी मालू, प्रतापगढ़
84. मोहन बाई चिप्पड़, प्रतापगढ़
85. सुशीला जी चिप्पड़, प्रतापगढ़
86. अशोक जी कटारिया, रावटी
87. प्रार्थना जी पोखरना, रतलाम
88. सीमा जी सिसोदिया, रतलाम
89. पुष्पा जी मुणत, रतलाम
90. सरोज जी तातेड़, सरदारशहर
91. लता जी सिंघवी, सिकंदराबाद
92. सपना जी सिंघवी, सिकंदराबाद
93. ललिता जी नाहर, सैंथी
94. इंद्रा देवी चोपड़ा, शेरगढ़
95. अनिता देवी संचेती, सिलापथार
96. केसर देवी दुग्गड़, सोमेसर
97. सुमन जी सेठिया, सूरत
98. सुचिता जी श्रीमाल, तेजानगर
99. गजेंद्र जी जैन, उदयपुर
100. मंजूलता जी मोगरा, उदयपुर
101. सुशीला देवी बंबकी, उधना
102. स्नेहलता जी कांठेड़, उज्जैन
103. रेखा देवी गांधी, व्यारा
104. रतनलाल जी अरोड़ा, भीलवाड़ा
105. अंजू देवी अरोड़ा, भीलवाड़ा

धमतरी में अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन

धमतरी, 10 मई 2024। संयम के सजग प्रहरी परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की कृपा से धमतरी में शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन किया गया।

शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने भगवान ऋषभदेव के जीवन चारित्र पर विवेचन फरमाया। श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने भगवान आदिनाथ की हिम्मत की कीमत पर व्याख्या प्रस्तुत की। साध्वी श्री जयप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने पद्य रूप में '**अक्षय तृतीया महोत्सव आया, वर्षीतप का पारणा लाया**' गीत के माध्यम से भाव व्यक्त किए।

साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. ने आदिनाथ भगवान द्वारा बताए गए पुरुषार्थ एवं दान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए आचार्य भगवन् के महान् पुरुषार्थ की महिमा विवेचित की। इस प्रसंग पर समता महिला मंडल द्वारा वंदना पश्चात् भारतीय जैन संघठना, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष, संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, समता बहू मंडल द्वारा सभी 41 तप आराधकों का स्वागत बहुमान किया गया।

संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी एवं मंत्री जी सहित अनेक गणमान्यजनों ने तप अनुमोदना का लाभ लिया। श्री साधुमार्गी जैन संघ अध्यक्ष जी ने इस अवसर को आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा बताते हुए चतुर्विध संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं श्री लक्षित मुनि जी म.सा. के एकांतर तप का दूसरा वर्ष गतिमान होने के उपलक्ष्य में सुख-शांति की पृच्छा व अनुमोदना की।

तपस्वी अभिनंदन कार्यक्रम में सभी तपस्वियों को मुकुट पहनाकर पारणा स्थल पर विराजमान करने के पश्चात् श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ एवं अन्य संस्थाओं द्वारा चाँदी का कलश, चाँदी का सिक्का, अभिनंदन-पत्र एवं माला आदि भेंट कर सम्मानित किया गया। विभिन्न कार्यों के लाभार्थी परिवारों का साधुमार्गी जैन संघ की ओर से प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल, सुधर्म परिवार, पाय ग्रुप का पूर्ण सहयोग रहा। छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं महाराष्ट्र क्षेत्र के विभिन्न संघों के सदस्यगणों ने उपस्थित होकर दर्शन, प्रवचन एवं मांगलिक श्रवण का लाभ उठाते हुए वर्षीतप की अनुमोदना की।

इस अवसर पर 100 पक्की नवकारसी, पोरसी, एकासना, उपवास, स्वाध्याय, संवर, पौषध, रात्रिभोजन त्याग, 500 सामायिक सहित प्रचुर मात्रा में त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

::::::: वर्षीतप आराधकों की सूची :::::::

1. नेहा जी कोटड़िया, खैरागढ़
2. अनिता जी बाफना, लखनपुरी
3. सूरज जी सुराना, राजनांदगाँव
4. पुष्पा जी संचेती, संबलपुर
5. रतन देवी कोठारी, भिलाई
6. चंचल जी पारख, राजनांदगाँव
7. कंचन जी बरड़िया, धमतरी
8. तारा बाई संकलेचा, धमतरी
9. पुष्पा जी बुरड़, धमतरी
10. किरण जी नाहर, धमतरी
11. आशा जी बम्ब, नगरी
12. इंद्रा जी नाहटा, नगरी
13. किरण जी नाहटा, नगरी
14. मधु जी नाहटा, नगरी

15. विनय जी नाहटा, नगरी
16. प्रकाश देवी भूरावत, भंडारा
17. मोहिनी देवी भूरा, भंडारी
18. सीमा देवी पारख, दुर्ग
19. ऊषा जी श्रीश्रीमाल, दुर्ग
20. संगीता जी सांखला, दुर्ग
21. सुमन जी बोथरा, दुर्ग
22. संध्या जी बोथरा, दुर्ग
23. धर्मपाल जी बोथरा, दुर्ग
24. लीला जी पारख, दुर्ग
25. वीणा जी श्रीश्रीमाल, दुर्ग
26. उर्मिला जी सांखला, दुर्ग
27. ज्योति जी सांखला, दुर्ग
28. नीरू जी सांखला, दुर्ग
29. राखी जी सांखला, दुर्ग
30. टीपू बाई बुरड़, दुर्ग
31. सुरभि जी चौरड़िया, रायपुर
32. संध्या जी बाफना, रायपुर
33. रामी देवी संचेती, रायपुर
34. बसंती बाई चौरड़िया, रायपुर
35. किरण जी चौपड़ा, रायपुर
36. ज्योति जी कोचर, रायपुर
37. मन्नू बाई बरड़िया, रायपुर
38. मंजू देवी टाटिया, दल्लीराजहरा
39. समता देवी संचेती, डौंडी
40. रेखा जी गोलछा, नयापारा राजिम
41. सीमा जी गोलछा, राजनांदगाँव

-दीपक बाफना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनयन हेतु सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के वर्तमान गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमित जी बंब का कार्यकाल आसोज सुदी 2 संवत् 2081 तदनुसार दिनांक 4 अक्टूबर 2024, शुक्रवार को पूर्ण होने जा रहा है। आगामी सत्र 2024-26 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के आजीवन सदस्य के नाम आमंत्रित किए जाते हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी युवा सदस्य का नाम मय पता व संपर्क सूत्र नीचे लिखे पते पर प्रेषित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 30 जून 2024 से पूर्व भिजवाने का कष्ट करें।

पता :-

नरेंद्र गांधी, राष्ट्रीय अध्यक्ष – श्री अ.भा.सा. जैन संघ

नीमच रोड, कृषि उपज मंडी के सामने, जावद, जिला- नीमच-458330 (म.प्र.)

Email : narendragandhi2424@gmail.com, Mob. : 9425108224 (WhatsApp)

अभिमोक्षम्
Diving within...

अभिमोक्षम् टाइम्स

- 4500+ रजिस्ट्रेशन
- Golden Book of World Records में दर्ज
- 50 चारित्रात्माओं का सान्निध्य
- 70+ शिक्षकगण
- 600+ कार्यकर्ता देशभर से, जिनमें 200+ स्थानीय कार्यकर्ता शामिल
- 150+ संवर प्रतिदिन
- मोबाइल की मर्यादा सहित अनेक प्रत्याख्यान
- जीवन परिवर्तनकारी कैंप

अभिमोक्षम्
Diving within...

सुसंस्कारों से ही श्रेष्ठ मानव जीवन



सुसंस्कार, अनुशासन, गुरु एवं शासन के प्रति समर्पणा श्रेष्ठ मानव जीवन के आधार हैं। यह ऐसी जन्मघूँटी है जो भौतिकता, विलासिता के दु:खों से आजीवन मुक्त रखती है। यह सार्वभौम सत्य है कि गत कुछ वर्षों में संस्कारों का जितना ह्रास हुआ है और भावी पीढ़ी में जो भयावह प्रभाव देखने को मिल रहा है, उतना नकारात्मक प्रभाव पूर्व में कभी नहीं पड़ा। ऐसी विकट परिस्थिति में संस्कारों एवं अनुशासन का पोषण अतिआवश्यक परिलक्षित हो रहा है।

हमारी भावी पीढ़ी अपने मूल सिद्धांतों से नहीं भटके और स्वतंत्रता की आड़ में स्वच्छंदता में न जकड़े इसी उद्देश्य से श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आराध्य परमागम रहस्यज्ञाता, गुणशील संप्रेरक, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य **उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.** के पावन सान्निध्य में चित्तौड़गढ़ की वीर भूमि पर **'अभिमोक्षम् कैंप'** आयोजित किया गया।

कैंप की विशेषताएँ :– इस 16 दिवसीय अभिमोक्षम् कैंप का शुभारंभ 10 मई को एवं समापन 26 मई 2024 को हुआ। कैंप हेतु रजिस्ट्रेशन का अंबार लग गया। जिन श्रावक-श्राविकाओं को इस कैंप की जानकारी एवं कैंप का उद्देश्य ज्ञात हुआ, उन्होंने अपने बच्चों का रजिस्ट्रेशन इस कैंप हेतु कराने में स्फूर्ति दिखाई तथा अन्यों को भी इस विषय में जानकारी देते हुए प्रोत्साहित करने का सुकार्य किया। सभी के सम्मिलित प्रयासों से कैंप हेतु लगभग 4500 रजिस्ट्रेशन हुए और 2000 से अधिक बच्चों ने कैंप में सहभागिता निभाई। शिविरार्थी बच्चों ने 16 दिन तक सभी आधुनिक सुविधाओं एवं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स (मोबाइल, लैपटॉप, वीडियो गेम, टी.वी.) आदि से दूर रहकर शुद्ध, सात्विक, सहज दिनचर्या एवं जैन सिद्धांतों से ओत-प्रोत अहिंसामय जीवन जीया है। इस दौरान बच्चों ने पूर्ण अनुशासन का पालन करते हुए समय पर उठना, समय पर प्रतिक्रमण, समय पर सोना, समय पर भोजन एवं कुल 8 कालांश में अलग-अलग विषयों पर ज्ञानार्जन कर अपनी दक्षता प्रकट की। इन 8 कालांश में बच्चों ने अध्यात्म, ज्ञान-ध्यान, जीवन जीने की कला, सूत्रों का गहन अध्ययन, जैन धर्म की तलस्पर्शी क्रियाओं के साथ-साथ जैन सिद्धांत बत्तीसी, गति, आरा, श्रावक के 12 व्रतों सहित अन्य विविध विषयों पर तत्त्व ज्ञान प्राप्त किया।

इस अभिमोक्षम् कैंप में बच्चों ने संस्कार निर्माण, जीवन निर्माण के ऐसे विशिष्ट संस्कार ग्रहण किए हैं, जो उनको जीवनभर बुराई, हिंसा, वैमनस्य, परिग्रह, कुव्यसन आदि कुसंस्कारों से बचाकर स्वावलंबी, गुरु समर्पित जीवन जीने की राह प्रशस्त करेंगे।

कैंप में बच्चों को 9 से 13 वर्ष, 13 से 18 वर्ष एवं 18 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में विभाजित कर तीन श्रेणियाँ बनाई गईं। हम सभी जानते हैं कि बाल्यावस्था एवं युवावस्था में ज्ञानार्जन हेतु अलग-अलग शैक्षणिक पद्धतियाँ हैं। छोटे बच्चों को गंभीरता से और बड़े बच्चों को खेल के माध्यम से ज्ञानार्जन कराया जाए तो सार्थक

नहीं हो पाएगा।

प्रतिदिन कैंप की शुरुआत प्रतिक्रमण के साथ होती। तत्पश्चात् व्यक्तित्व विकास (Personality Development) में भविष्य में आने वाली समस्याओं का सामना दृढ़ता से करना, आदर्श मानवीय जीवन का तुलनात्मक अध्ययन के साथ-साथ अनेक अतुलनीय बिंदुओं पर बच्चों ने ऐसे अनछुए प्रश्नों के समाधान प्राप्त किए, जो कहीं न कहीं उनके मन में दबे हुए थे और जिन्हें प्रकट करने में वे शंकित थे। स्वत: मिले इन समाधानों से बच्चों में आत्मविश्वास का स्तर तो बढ़ा ही साथ ही उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि धर्म की छाया सुदृढ़ मानव जीवन के निर्माण हेतु अतिआवश्यक है।

संस्कार एवं अनुशासन, भविष्य, परिवार, समाज, देश एवं संपूर्ण विश्व की मांग हैं। धर्म की राह में प्रथम पायदान के रूप में ऐसे रोचक एवं अनोखे अभिमोक्षम् कैंप से बच्चों ने अपने जीवन को सत्य व संस्कारों की राह पर गतिमान करने का पाथेय प्राप्त किया है। सर्वगुण संपन्न मानव बनने एवं संस्कारों से ओत-प्रोत बनने हेतु बच्चों को मार्गदर्शन देकर एक आदर्श भविष्य की परिकल्पना को साकार करने का यह प्रयास अपने आप में अनूठा है।

'सेवा परमोधर्म:' अर्थात् सेवा सर्वोत्तम धर्म है। इसी वाक्य को सार्थक करते हुए कैंप में सेवा देने वालों की उपस्थिति हर्षित एवं गौरवान्वित करने वाली है। शिविरार्थी बच्चों को सौभाग्य से 50 चारित्रात्माओं ने अध्यापन में सहयोग दिया। इस सेवा कार्य हेतु देश के अनेक भागों से 400 स्वयंसेवकों, 200 स्थानीय स्वयंसेवकों, 70 अध्यापकों ने अपने घर-बार, व्यापार को प्राथमिकता न देते हुए सेवा धर्म को सर्वप्रथम माना है। प्रत्येक कार्य पूर्ण रूपरेखा के साथ टीम बनाकर किया गया। इन स्वयंसेवकों ने बच्चों को ज्ञानार्जन एवं दैनिकचर्या में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए कर्मनिर्जरा का अद्भुत प्रसंग उपस्थित किया है। कहते हैं कि कहने में नहीं करने में विश्वास रखना चाहिए। बस, इसी आदर्श वाक्य को इन सेवाभावी स्वयंसेवकों ने सार्थक किया है। दिन-रात इस भीषण गर्मी में केवल और केवल बच्चों के अध्ययन में रुकावट उत्पन्न नहीं हो इस हेतु स्वयंसेवकों ने अपना सर्वस्व अर्पण करते हुए सेवा को सर्वोपरि रखा तो बच्चों ने भी समय की पाबंदी, अनुशासन एवं शिष्टाचार के साथ जो लघुता भाव दर्शाया है, वह अन्यों के लिए अनुकरणीय है।

इसी क्रम में उन सुलझे हुए, उच्च सोच के धनी, संघ समर्पित, गुरुनिष्ठ, निश्छल अभिभावकों के विश्वास ने इस कैंप की प्रामाणिकता को सिद्ध करने में कोई कमी नहीं रखी है। इन अभिभावकों ने श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ पर अमिट विश्वास व्यक्त करते हुए अपने नन्हे-नन्हे बालकों को 16 दिवस तक अपने से दूर ज्ञानार्जन हेतु भेजकर यह सिद्ध कर दिया है कि **'संघे शक्ति: कलोयुगे'**। संघ के भावी कर्णधारों को इन अभिभावकों की आज्ञा के बिना उच्चता की ओर गतिशील बनाना संभव नहीं था। गर्मी की छुट्टियों में लगभग बच्चों का ध्यान विदेश घूमने, देश के पर्यटन स्थलों पर घूमने, सिनेमा या वाटर पार्क व अन्य भौतिक मनोरंजक स्थलों पर घूमने पर रहता है, लेकिन अपने जीवन को संस्कारों व अनुशासन से पल्लवित-पुष्पित करने हेतु कैंप में उपस्थित होने वाले बच्चों के अभिभावकों की सार्थक सोच हमें तम से प्रकाश की ओर बढ़ने में सहयोग प्रदान कर रही है। इन अभिभावकों ने अपने बच्चों के लिए सुनहरा भविष्य चुनकर उनको संस्कारों की स्वर्ण सौगात प्रदान की है। बच्चों को अच्छे भविष्य की ओर अग्रसर कर इन अभिभावकों ने अपने कर्तव्य का पूर्ण पालन किया है।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. सहित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य हेतु अहोभाव। आपश्री के सरल एवं सटीक मार्गदर्शन

में संघ व समाज जिन ऊँचाइयों को छू रहा है, इससे ज्ञानवान और क्रियावान भविष्य का साकार महसूस कर रहे हैं। शिविरार्थी बालक-बालिकाओं ने जिस आत्मीय भाव से बिना किसी आधुनिक सुविधाओं के इस कैंप को सार्थक करने में मुख्य भूमिका निभाई है और ज्ञानार्जन से अपना जीवन उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर किया है, इस हेतु इनको समस्त संघ की ओर से आत्म-उत्थान का आशीर्वाद। इन शिविरार्थी बच्चों के **माता-पिता एवं परिजनों** को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संघ पर इनके विश्वास को नतमस्तक हो साधुवाद प्रदान करते हैं। अंत में जो इस कैंप की धुरी के रूप में दिन-रात बिना रुके स्व-पर का भेद मिटाते हुए समर्पित भावों से सेवाएँ प्रदान करते रहे उन सभी सम्मानित **कार्यकर्ताओं** को धन्यवाद एवं साधुवाद, जिनके सार्थक प्रयासों के बिना शिविर की सफलता की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इन स्वयंसेवकों की ऊर्जा ने बच्चों के भावी जीवन को उज्ज्वल बनाने में विशेष योगदान दिया है। पुनश्च ऐसे सेवाभावी कार्यकर्ताओं, कार्यालय स्टाफ आदि सभी को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की ओर से बहुत-बहुत साधुवाद-धन्यवाद। जिस संघ में ऐसे स्तंभ कार्यकर्ता हों, उस संघ के विकास रथ की गति को मंद कर पाना किसी के वश की बात नहीं। हमें गर्व हैं ऐसे कार्यकर्ताओं, ऐसे माता-पिता एवं परिजनों व शिविरार्थी बच्चों पर, जो सुखद भविष्य के लिए दृढ़संकल्पित हैं। जिन 2000 बच्चों ने अभिमोक्षम् कैंप में 17 दिन संस्कारों, अनुशासन, धर्म का खजाना प्राप्त किया है, यह खजाना उनके लिए जीवन परिवर्तनकारी सिद्ध होगा।



अरे कवि! बहुत दिनों बाद नजर आए। कहीं घूमने गए थे क्या छुट्टियों में?

नहीं रवि, मैं तो चित्तौड़गढ़ में आयोजित 'अभिमोक्षम् कैंप' में गया था। वहाँ पर मेरी तरह लगभग 2000 बच्चे उस कैंप में शामिल हुए थे।





2000 बच्चे? मतलब इतने दोस्त! बहुत मजा आया होगा?

हाँ, बहुत मजा आया। प्रतिदिन धार्मिक कक्षाएँ, आचार्य भगवन् सहित चारित्रात्माओं के दर्शन, तिविहार सहित ज्ञानार्जन, बहुत ही अलग तरह से मैंने अपनी छुट्टियों का उपयोग किया।





अरे वाह! यह तो सुनने में ही अच्छा लग रहा है। काश! मैं भी ऐसे कैंप का हिस्सा बन पाता।

कलिकाल में संस्कारों का आधार

अभिमोक्षम् शिविर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा चित्तौड़गढ़ की वीर प्रसूता भूमि पर **'अभिमोक्षम् कैंप'** के रूप में एक इतिहास रच दिया गया। शिविरार्थी बालक-बालिकाओं को आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित अनेक चारित्रात्माओं का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। अनुशासन, समय की पाबंदी, प्रतिदिन तिविहार, आपसी सामंजस्य, संयम जीवन से नजदीकी, ज्ञानार्जन का उल्लास, आपसी सहयोग की भावना, नया ज्ञान सीखने की उत्सुकता एवं ज्ञानवान व क्रियावान बनने का प्रयास आदि इस कैंप के प्रमुख आकर्षण रहे। कैंप में संबंध में कुछ मित्रों के मध्य हो रही चर्चा का शब्दांकन कैंप प्रभावना के उद्देश्य से आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे आप कैंप के उद्देश्य पूर्ति का मूल्यांकन कर भविष्य के कर्णधारों हेतु आगामी कैंप के लिए अपनी रूपरेखा बना सकते हैं।



10 से 26 मई तक मैं बहुत व्यस्त रहूँगा। जो भी महत्त्वपूर्ण ऑफिस के काम हैं, वे सब 10 मई से पूर्व ही निपटाने होंगे।



इस बार घूमने जाने के लिए लंबी छुट्टियों की योजना बनाई है क्या?



घूमने नहीं जा रहा हूँ। मैं तो 'अभिमोक्षम् शिविर' में सेवाएँ देने जा रहा हूँ।



मैं कुछ समझा नहीं, शिविर.... सेवा.... छुट्टी....।



चित्तौड़ में 9 वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित बालक-बालिकाओं व युवाओं का एक शिविर लगा है, जिसमें लगभग 2000 बच्चे सम्मिलित हुए। इतने बच्चों की व्यवस्था करने के लिए एक सुदृढ़ टीम की आवश्यकता है। बच्चों को किसी तरह की कोई परेशानी ना हो इस हेतु मैं 15-16 दिन वहाँ सेवाएँ देने जा रहा हूँ।



रजत! बहुत अच्छे विचार है तुम्हारे। तुम आराम से जाओ, ऑफिस का सारा काम मैं संभाल लूँगा।

अभिमोक्षम्
अविस्मरणीय अनुभव

'अभिमोक्षम्' कैंप आपको कैसा लगा? अगर कैंप पुनः होता है तो क्या आप सभी आएँगे?

हमने अपनी अल्पायु में बहुत ही कम अच्छे अवसर प्राप्त किए हैं, उनमें से अभिमोक्षम् कैंप में आना सर्वश्रेष्ठ अवसर लगा। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की कृपा से ऐसा सौभाग्य मिला है। ऐसे कैंप का आयोजन न केवल गर्मी की छुट्टियों में बल्कि सर्दियों व अन्य अवसरों पर होने वाले अवकाश में भी किया जाना चाहिए। हमको ऐसे कैंप के आयोजन का इंतजार रहेगा।

आपने कैंप में क्या सीखा? (सूत्र/अच्छी बातें/जानकारी)

चारित्रात्माओं एवं अध्यापकों द्वारा हमें इतनी सहजता से अध्ययन करवाया गया कि कम समय में ही हमने अनेक सूत्र सीख लिए हैं। अच्छी बातों का तो जैसे पूरा खजाना ही मिल गया है।

'अभिमोक्षम्' कैंप में सबसे अच्छा क्या लगा?

बड़ी संख्या में चारित्रात्माओं का सान्निध्य।

क्या आपने मोबाइल, टी.वी., लैपटॉप की कमी महसूस की?

बिलकुल नहीं, क्योंकि यहाँ की दिनचर्या इतनी व्यवस्थित थी कि मोबाइल आदि की याद ही नहीं आई। यदि हम प्रत्येक कार्य योजना से करें और एक निश्चित दिनचर्या रखें तो निश्चय ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

Good habits जो आप यहाँ से जाने के बाद Follow करेंगे?

प्रात: उठते ही माता-पिता को प्रणाम करना, बड़ों का कहना मानना एवं प्रतिदिन नवकार मंत्र अध्ययन के साथ अन्य ज्ञान-ध्यान सीखना, मोबाइल का उपयोग कम से कम, तिविहार, प्रत्याख्यान करना।

Bad habits जो आप इस कैंप के दौरान छोड़कर जा रहे हैं?

प्रात: देरी से उठना, आलस्य करना, अपना काम दूसरों पर छोड़ना व गुस्सा करना आदि।

आप अपने आप में क्या परिवर्तन महसूस कर रहे हैं?

आपसी सामंजस्य बिठाना तथा कैंप की शुरुआत से ही समय की पाबंदी तथा अनुशासन ने हमारे जीवन में परिवर्तन तो किया ही, साथ ही नई ऊर्जा भी प्रदान की।

'अभिमोक्षम्' कैंप आपको मोक्ष के कितना करीब ले गया?

इसका मूल्यांकन तो हम नहीं कर सकते, लेकिन इतना जरूर कह सकते हैं कि इस कैंप में भागीदारी से हमने जीवन का सही अर्थ जाना है। नहीं तो ऐसे ही इस जीवन को बेकार गँवा देते।

एक ऐसी अविस्मरणीय बात/शिक्षा जो आपने कैंप के दौरान सीखी हो।

कैंप के दौरान बहुत सारी अच्छी बातों से रूबरू हुए हैं। मुख्य रूप से मोबाइल एवं अन्य गैजेट्स से बेकार का लगाव दूर हुआ एवं धोवन पानी के उपयोग से अहिंसा व्रत का पालन कर हम समझ गए कि कोशिश अगर सच्ची हो तो बिना आधुनिक सुख-सुविधाओं के भी खुशहाल जीवन जी सकते हैं।

कैंप के स्थान पर यदि आप घूमने गए होते तो दोनों में से कौनसा अनुभव ज्यादा अच्छा रहता?

घूमना तो केवल मनोरंजन के लिए होता है, लेकिन यहाँ आकर हमने मन-मंथन कर संस्कार व अनुशासन रूपी मक्खन सार रूप में प्राप्त किया है। अत: श्रेष्ठ अनुभव तो कैंप का अनुभव ही है।

कैंप के दौरान संयोजक टीम, शिक्षक आदि के व्यवहार व विशेषताओं के बारे में आपका क्या कहना है?

अपनत्व से भरपूर शिक्षकों व कार्यकर्ताओं ने माता-पिता की तरह हमारा हर पल, हर क्षण ध्यान रखा है। हमें महसूस ही नहीं हुआ कि हम घर से दूर हैं।

'बिना गैजेट्स जीना असंभव है' इस वाक्यांश और अभिमोक्षम् कैंप को आप कैसे कनेक्ट करते हैं?

हम जिन गैजेट्स को, विशेषकर मोबाइल को जीवन का अंग मान चुके थे, उनके बारे में यहाँ आकर पता चला कि मोबाइल सुविधा नहीं अपितु दुविधाओं का भंडार है। हम में से अनेक बच्चों ने दिनभर में मात्र 1 घंटा मोबाइल चलाने का नियम लिया है।

नए लोग, नए स्थान पर आप सभी को Adjust होने में कठिनाई आई या ये सब बहुत सरल था?

कठिनाई तो हर नई जगह पर महसूस होती है, लेकिन यहाँ जो अपनत्व, जो सहयोग मिला उसमें शिकवे-शिकायत का कोई स्थान ही नहीं बचा।

अगले कैंप में यदि आपको कार्यकर्ता बना दिया जाए तो क्या आप सेवा देने को तैयार हैं?

बिलकुल तैयार हैं। जिस तरह स्कूलों में कक्षा मॉनिटर की व्यवस्था होती है, उसी तरह ऐसे कैंप में भी कैंप मॉनिटर होने चाहिए, जिससे कार्यकर्ताओं एवं शिविरार्थियों में सामंजस्य बना रहे।

आज के फैशनपरस्त दौर में ऐसे कैंप की आवश्यकता के बारे में आपका क्या कहना है?

आज के आधुनिक समय में ऐसे कैंप की महत्ता और बढ़ जाती है, लेकिन माता-पिता, अभिभावकों के पास समय नहीं होने से बच्चे किस राह पर जा रहे हैं इसका परिजनों को भान ही नहीं हो पाता। अत: ऐसे कैंप को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

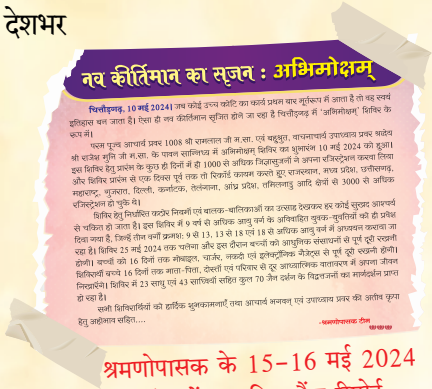
15 दिन एक सात्विक दिनचर्या में आपने स्वयं में क्या बदलाव महसूस किया?

Confidence, आत्मविश्वास, आध्यात्मिकता का स्वरूप जानकर एक नई दिशा प्राप्त की है। स्वयं को ऊर्जान्वित महसूस कर रहे हैं।

अभिमोक्षम् कैंप गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

परम श्रद्धेय, परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 10 मई से 25 मई 2024 तक चित्तौड़गढ़ में आयोजित अभिमोक्षम् कैंप का समापन समारोह 26 मई को आयोजित किया गया। इस समारोह में शिविरार्थी 2000 बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावक व संघ प्रमुखों सहित देशभर से पधारे गुरुभक्तों का विहंगम उपस्थिति हर्षित व संघ एकता का प्रतीक बनी।

कार्यक्रम के दौरान गौरवान्वित करने वाले पल उस समय उपस्थित हुए जब गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड संस्था से पधारे प्रतिनिधि ने इस कैंप को अपने रिकॉर्ड में दर्ज करने की घोषणा करते हुए संघ को **'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड'** प्रदान किया। उस विशेष अवसर पर वहाँ उपस्थित संघ के प्रत्येक सदस्य की आँखों में एक अनोखी चमक परिलक्षित हो रही थी और हर कोई गुरुदेव के संघ उन्नयन हेतु चिंतनशील प्रयासों के लिए अहोभाव व्यक्त कर रहा था।


नव कीर्तिमान का सृजन : अभिमोक्षम्

चित्तौड़गढ़, 10 मई 2024 जब कोई उच्च कोटि का कार्य प्रथम बार सृष्टिरूप में आता है तो वह स्वयं इतिहास बन जाता है। ऐसा ही नव कीर्तिमान सृजित होने जा रहा है चित्तौड़गढ़ में 'अभिमोक्षम्' शिविर के रूप में।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में अभिमोक्षम् शिविर पर श्रुतसंघ 10 मई 2024 को हुआ। इस शिविर हेतु प्रारंभ के कुछ ही दिनों में ही 1000 से अधिक जिज्ञासुजनों ने अपना पंजिकरण करवा लिया और शिविर प्रारंभ से एक दिवस पूर्व तक तो दिनांकों लगभग चलते हुए राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों से 3000 से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके थे।

शिविर हेतु निर्धारित वरदेय नियमों एवं पात्रता-चालिकाओं पर उत्साह देखकर हर कोई सुरुचा आश्चर्य से चकित हो जाता है। इस शिविर में 9 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के अभिरुचित पुत्रक-पुत्रियों को ही प्रवेश दिया जाना है, जिन्हें तीन वर्गों क्रमशः 9 से 13, 13 से 18 एवं 18 से अधिक आयु वर्ग में अध्ययन कराया जा रहा है। शिविर 25 मई 2024 तक चलेगा और इस दौरान बच्चों को आधुनिक संसाधनों से पूर्ण मुक्ति रखनी होगी। बच्चों को 16 दिनों तक मोबाइल, पार्लर, लाइसेंस एवं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से पूर्ण मुक्ति रखनी होगी। शिविरार्थी बच्चे 16 दिनों तक माता-पिता, रोल्स एवं परिवार से दूर आध्यात्मिक वातावरण में अपना जीवन निखारेंगे। शिविर में 23 लाख से अधिक साधिकों सहित कुल 70 जैन दर्शन के विद्वानजनों का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

सभी शिविरार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ तथा आचार्य अनवरत एवं उपाध्याय प्रवर की अतीव कृपा हेतु अहोभाव सहित....

-श्रमणोपासक टीम

श्रमणोपासक के 15-16 मई 2024 अंक में प्रकाशित कैंप रिपोर्ट



अरे कविता! तुम्हारा मोबाइल कहाँ है? पिछले 15 दिन से स्विच ऑफ आ रहा है। आज जाकर ऑन हुआ है।

सरिता, मैं 'अभिमोक्षम् कैंप' में गई थी। वहाँ मोबाइल साथ में रखने की अनुमति नहीं थी।





क्या? तुमने 15 दिन बिना मोबाइल के निकाले हैं। ये कैसे संभव हो सकता है?

पूरा दिन धार्मिक कक्षाओं, एक्टिविटी, प्रतिक्रमण में कब निकल जाता, पता ही नहीं चलता। मोबाइल की तो याद ही नहीं आती।





ऐसे अनोखे कैंप में तुमने तो बहुत कुछ सीखा होगा।

सीखा है और समझा भी है कि धर्म का मार्ग ही सच्चा मार्ग है।



✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

उदयपुर। समीक्षण ध्यान योग शिविर का आयोजन 5 मई को प्रातः फतहसागर की पाल पर संपन्न हुआ, जिसमें लगभग 60 लोगों ने भाग लिया। आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र के संचालक, भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष, योगगुरु डॉ. सत्यनारायण शर्मा एवं अन्य वक्ताओं ने ध्यान योग के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा डॉ. शर्मा ने विभिन्न योगिक क्रियाएँ करवाईं। **-डॉ. सत्यनारायण शर्मा**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

बीकानेर। शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-9 सेठिया कोटड़ी में एवं पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका श्री कमलप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-11 समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं।

महावीर जन्मकल्याणक पर शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **'जीओ और जीने दो'** के लिए जीवन में पुरुषार्थ हो।

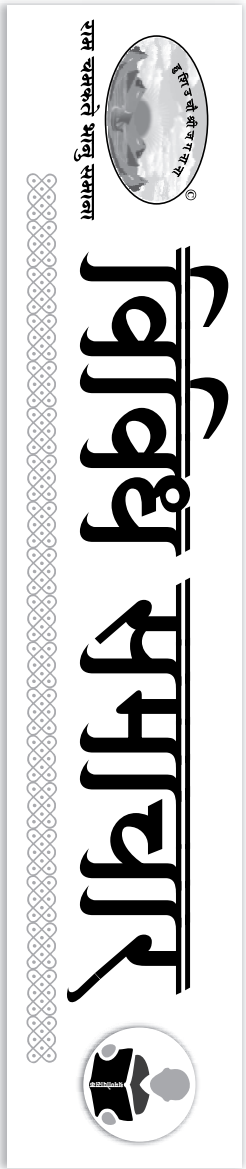
साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. ने भगवान महावीर के पूर्वभवों का विवेचन फरमाया। साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा. ने प्रभु के असीम गुणों में से तीन गुणों सदाचार, सहनशीलता व समता को आचरण में लाने की प्रेरणा दी।

आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर श्री विनय मुनि जी म.सा. ने चैत्र माह में महापुरुषों के कल्याणक एवं जन्म पर विवेचन के साथ चैत्र माह की महत्ता बताई एवं आचार्य भगवन् के गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी।

साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. ने राम गुरु के जीवन से विनय गुण धारण करने की प्रेरणा दी एवं राम गुरु को अप्रमत्त साधक निरूपित करते हुए फरमाया कि धर्म-ध्यान में जो समय लगा वह सार्थक हो गया। राम गुरु गुणों की खान हैं। उनके एक भी गुण को धारण कर लिया तो जन्मदिवस मनाना सार्थक हो जाएगा।

ओली तप में आयंबिल की आराधना के साथ-साथ महत्तम शिखर महोत्सव के तप-त्याग बिंदु के अंतर्गत प्रतिदिन उपवास, एकासन, आयंबिल एवं तेले तप की आराधना चल रही है।

अक्षय तृतीया — दस दिवसीय आदिनाथ अरुणोदय पर श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दान, शील, तप भावना के साथ हमारी भक्ति सहज, सरल, निःस्वार्थी रहे। नसीब को बदलना है तो दान देवें। मोक्ष के लिए दान आवश्यक है। आदिनाथ प्रभु का हम पर बहुत बड़ा उपकार है। उन्होंने असि, मसि, कृषि का ज्ञान देकर 72 कलाएँ सिखाई।



श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. एवं श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. का पदार्पण हुआ। श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे अंदर रासायनिक परिवर्तन आए। प्रवचन सुनने से सम्यक् सकारात्मक परिवर्तन आना जरूरी है, तब ही सुनने का सार है।

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सुख-दुःख आते रहते हैं। द्रष्टा भाव रहे। जन्म, जरा, रोग, मृत्यु का दुःख लगा हुआ है। अतः हम सावधान हो जाएँ। धर्म व गुरु की शरण तारने वाली होती है।

गुणानुवाद सभा — भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के 66 दिवसीय संथारा पूर्ण होने पर आयोजित स्मृति सभा में श्री विनय मुनि जी म.सा. ने संथारे का महत्त्व बताया। साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि महासती जी में रासायनिक परिवर्तन हुए। संसार से संयम में आए, दीक्षा लेकर तीनों मनोरथ पूर्ण कर शासन की भव्य प्रभावना की। अंत में सामूहिक चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धाभाव अर्पित किए गए।

श्रद्धांजलि सभा — कानोड़ में साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा. के देवलोकगमन के समाचार ज्ञात होने पर 21 मई को प्रातः सेठिया कोटड़ी में शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. एवं श्री गौतम मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में श्री सूर्यप्रभ मुनि जी म.सा. ने '**जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए**' भजन के साथ दिवंगत महासती जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जैसा उनका नाम था उसी अनुरूप उन्होंने सम्यक् रूप से जिनशासन की सेवा कर अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब तक आत्मा परमात्मा नहीं बनेगी तब तक जन्म-मरण का क्रम चलता रहेगा। महासती श्री सम्यक् श्री जी म.सा. ने अपनी जीवनचर्या को सम्यक् रूप प्रदान कर शासन की अद्भुत प्रभावना की। उनको धायमातृ पद अलंकृत साध्वी श्री पैप कँवर जी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त हुआ था। सेवा गुण उनमें सम्यक् रूप से भरा था। आपकी अस्वस्थता में सेवा की दृष्टि से साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. कानोड़ ही विराज रहे हैं। उनकी आत्मा जहाँ भी हो, शीघ्र ही मोक्ष का वरण करें।

अन्य अनेक वक्ताओं ने भी अपने भावसुमन अर्पित करते हुए दिवंगत महासती जी का गुणगान किया। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। **-विजयराज गोलछा**

अलाय। भगवान महावीर जन्मकल्याणक दिवस 21 अप्रैल को मनाया गया। कार्यक्रम में भजनों की प्रस्तुति के साथ नवकार मंत्र का जाप, समता शाखा, प्रार्थना आदि धार्मिक क्रियाएँ की गईं। महिला वर्ग ने उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में भाग लिया। इसी क्रम में 22 अप्रैल को परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 72वें जन्मदिवस पर नवकार महामंत्र जाप, रामेश चालीसा, महावीर चालीसा, धम्म सद्धा चालीसा व सायंकालीन प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम समता भवन में हुए। महापुरुषों का गुणगान किया गया। अंत में वंदना एवं मांगलिक श्रवण के साथ कार्यक्रम समापन हुआ। **-समता बोथरा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

जयपुर। 21 अप्रैल को महावीर जयंती के कार्यक्रम में महत्तम महोत्सव की 9 प्रवृत्तियों को नाटिका द्वारा समझाया गया एवं 75 वर्ष से अधिक आयु के श्रावक-श्राविकाओं, मेधावी विद्यार्थियों तथा तपस्वियों का सम्मान किया गया। साथ ही अभिमोक्षम् शिविर के लिए रजिस्ट्रेशन किए एवं प्रत्येक घर में दानपेटी वितरित की गई। पुखराज जी जैन, भानुमति जी जैन, रुचि जी बैद, सोनाली जी बैद ने ओली तप किया।

महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत सामाजिक सेवा प्रकल्प में 27 अप्रैल को निःशुल्क चिकित्सीय जाँच एवं परामर्श शिविर आरोग्यम् का आयोजन किया गया, जिसमें 177 व्यक्तियों को परामर्श सेवाएँ दी गईं एवं 463 जाँचें कीं। **-साधना जैन**

ब्यावर। अभिरामम् आनंदम् पोस्टर का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में महत्तम महोत्सव के संयोजक, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित स्थानीय संघ, महिला मंडल एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का पावन जन्मदिवस समता भवन में श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं शासन दीपिका

साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-11 के सान्निध्य में तप-त्याग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भजन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि राम गुरुवर की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। आपश्री जी इस संघ को उच्चतर बनाने में गतिमान हैं।

श्री शोभन मुनि जी म.सा. भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मनुष्य जन्म में ही मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। वस्तु का स्वभाव धर्म है। हमें अपने आप की पहचान करनी है।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि प्रतिदिन लाखों बच्चों का जन्म होता है, लेकिन उनमें से कुछ ही महत्त्वपूर्ण बन पाते हैं, क्योंकि ऐसे लोग बड़े से बड़ा कष्ट उठाकर भी क्षमा धारण करते हैं। जैसे हमारे आराध्यदेव राम गुरु सरल बन गए हैं।

अन्य वक्ताओं ने आचार्य प्रवर के स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए '**सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे**' प्रार्थना की।

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का संथारे के 66वें दिन पंडितमरण पर समता भवन में 14 मई को चतुर्विध संघ की उपस्थिति में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संथारा मृत्यु को महोत्सव मनाना है। वीर माता कस्तूर बाई ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर जीवन को मोक्षगामी बना लिया।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज हम उस महान् आत्मा की गुणानुवाद सभा कर रहे हैं, जिसने अंत समय में मृत्यु को महोत्सव बना लिया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब तक हमारा शरीर धर्म में सहयोगी नहीं बनेगा तब तक हम संथारा नहीं ले सकते। जैसे शरीर का पोषण भोजन है वैसे ही आत्मा का भोजन धर्म-ध्यान, त्याग-तप है।

साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संथारा साधिका जी ने जीवन के अंतिम पड़ाव में आसक्ति को त्यागकर मृत्यु को महोत्सव में बदल दिया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भी गुणानुवाद किया। अंत में चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

शहादा। भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर 21 अप्रैल को अभिरामम् प्रतियोगिता के पैंपलेट्स का वितरण समता युवा संघ द्वारा किया गया। उपस्थित सभी ने आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के उत्कृष्ट संयमी जीवन की जानकारी देते हुए ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस प्रतियोगिता से जुड़ने की अपील की। इस दौरान इच्छुक प्रतिभागियों का रजिस्ट्रेशन किया गया।

इसी क्रम में 22 अप्रैल को प्रातः समता भवन में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का जन्मदिवस नवकार मंत्र जाप व गुणानुवाद के साथ मनाया गया। संघ के पूर्व मंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने आचार्य भगवन् का गुणगान किया। इस प्रसंग पर स्थानीय संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ के अनेक पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

-दिलीप कोटड़िया

झारड़ा। शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का 15 अप्रैल को मंगल प्रवेश हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रातः प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा व तप-त्याग का ठाठ लगा। भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा. ने धर्मकथा का सुंदर विवेचन फरमाया। साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. ने समता शाखा में अधिकाधिक उपस्थिति के लिए प्रभावना करने हेतु प्रेरणा दी। श्राविकाएँ सामायिक, प्रतिक्रमण एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी सहित नवीन ज्ञानार्जन में उत्साह के साथ संलग्न हैं।

भदेसर में संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. के पंडितमरण का समाचार ज्ञात होने पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जन्म-मरण व्यक्ति के हाथ में नहीं है, लेकिन जीवन कैसे जीया

जाए यह हम साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. से सीख सकते हैं, जिन्होंने जीवन के अंतिम पड़ाव में समभावपूर्वक संथारा-संलेखना के साथ पंडितमरण प्राप्त किया। सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की। **-कुलदीप चौहान**

✧✧✧✧ छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ✧✧✧✧

दल्लीराजहरा। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में छत्तीसगढ़ में धर्म-ध्यान, तप-त्याग का ठाठ लग गया। 13 अप्रैल को यहाँ प्रवेश के पश्चात् आपश्री जी ने श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का अर्थ विवेचन करते हुए वर्तमान परिस्थिति में धर्म कैसे करें विषय प्रवचन फरमाया। रात्रिकालीन धार्मिक गतिविधियों में भाइयों का उत्साह देखने योग्य रहा। 20 अप्रैल को सामायिक आराधना दिवस, 21 अप्रैल को भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं 22 अप्रैल को आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस प्रसंग पर गुणानुवाद किया गया। चारित्रात्माओं के सान्निध्य में धर्म-ध्यान, तप-त्याग का ठाठ लग गया। **-अंकित गुणधर**

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, ✧✧ झारखंड, आंशिक उड़ीसा अंचल ✧✧

रामपुरहाट। भगवान महावीर जन्मकल्याणक दिवस एवं परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का जन्मदिवस धर्माराधना सहित मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक सामायिक, रामेश चालीसा का पाठ एवं महापुरुषों का गुणानुवाद किया गया। आचार्य भगवन् के स्वस्थ्य, यशस्वी एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामना के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। **-सुशील बाँठिया**

✧✧✧✧✧✧✧ पूर्वोत्तर अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

गुवाहाटी। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में 21 एवं 22 अप्रैल को क्रमशः श्रमण भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस सामूहिक सामायिक, प्रार्थना, भजन व धर्माराधना के साथ समता भवन में मनाया गया।

महावीर जयंती के उपलक्ष्य में प्रातः सामूहिक सामायिक एवं समता शाखा में आराधना के पश्चात् अभिरामम् पैंपलेट का विमोचन किया गया। तत्पश्चात् सकल जैन संघ द्वारा आयोजित शोभायात्रा में शामिल हुए। संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ के सदस्यों ने अभिरामम् की प्रभावना कर इससे जुड़ने की प्रेरणा दी।

इसी क्रम में परम पूज्य आचार्य श्री रामेश जन्मदिवस पर प्रातःकालीन धर्मसभा में सामूहिक सामायिक में श्रावक-श्राविकाओं ने सम्मिलित होकर गद्य-पद्य में भावाभिव्यक्ति दी। आचार्य भगवन् के दीर्घायुष्य एवं सुस्वास्थ्य की मंगलकामना की गई। सामूहिक रामेश चालीसा के पाठ के पश्चात् भगवान महावीर एवं आचार्य भगवन् के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी में सभी ने भाग लिया।

महत्तम शिखर महोत्सव के उपलक्ष्य में संघ, महिला मंडल एवं युवा संघ द्वारा निःशुल्क दंत एवं नेत्र जाँच व परामर्श शिविर का आयोजन 28 अप्रैल को फटाशील (हरिजन बस्ती) के महात्मा गाँधी स्कूल में किया गया। शिविर का शुभारंभ सामूहिक नवकार मंत्र जाप से हुआ। नेत्र जाँच में महिंद्रा सेंटर फॉर साइट एवं दंत जाँच में डॉ. नेहा जी बोथरा ने सेवाएँ दीं। शिविर से 210 लोग लाभांवित हुए।

-राजेंद्र दस्सानी, विकास पींचा

होली-फाल्गुनी पर्व धर्माराधना

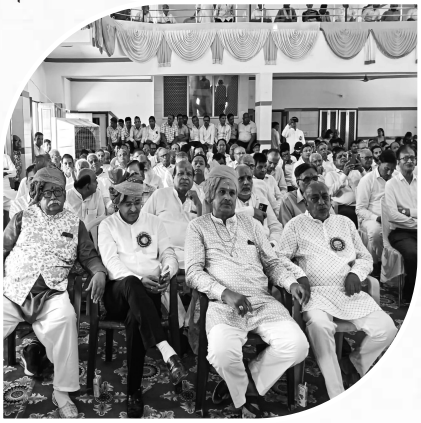
होली-फाल्गुनी पर्व 23-25 मार्च 2024 को मनाया गया। इस दौरान 51 स्थानों पर कुल 103 स्वाध्यायियों ने अपनी अमूल्य सेवाएँ दीं। स्वाध्यायियों के सान्निध्य में सभी स्थानों पर धर्म-ध्यान का ठाठ लग गया। कुछ स्वाध्यायियों ने स्थानीय स्तर पर भी सेवाएँ दी हैं। सभी स्वाध्यायियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-संयोजक मंडल, समता प्रचार संघ, उदयपुर

लूणकरणसर में समता भवन का उद्घाटन संपन्न









लूणकरणसर। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत श्री साधुमार्गी जैन संघ, लूणकरणसर में समता भवन का भव्य उद्घाटन समारोह 12 मई को आयोजित किया गया। महत्तम शिखर महोत्सव में बीकानेर-मारवाड़ अंचल में संपन्न इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं स्वागत समारोह अध्यक्ष अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी थे। संघ के राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं मंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी, वीर माता किस्तूरी बाई गुलगुलिया सहित देश के कोने-कोने व आस-पास के अनेक क्षेत्रों में पधारे संघ प्रमुख महानुभावों की उपस्थिति में नवकार महामंत्र के जाप एवं आचार्य भगवन् की जय-जयकार के साथ केशरीचंद जी भूरा, रायपुर/देशनोक, सुंदरलाल जी बोथरा, मुंबई/नोखा एवं शांति देवी हनुमानमल जी भूरा, लूणकरणसर देशनोक के करकमलों से उद्घाटन संपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में आगत विशिष्ट जनों का स्वागत स्थानीय संघ के अध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री, कोषाध्यक्ष, समता महिला मंडल एवं समता युवा संघ अध्यक्ष, मंत्री द्वारा किया गया। वरिष्ठ सुश्राविका पाना देवी ईश्वरचंद जी भूरा, लूणकरणसर/देशनोक एवं संघ के वयोवृद्ध संरक्षक तिलोकचंद जी धारीवाल ने समारोह में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम के दौरान भवन निर्माण में सहयोगी रहे दानी-मानी महानुभावों का आत्मीय भावों के साथ अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम संचालन महेश जी नाहटा एवं रिया जी राखेचा द्वारा किया गया।

-ओमप्रकाश बरड़िया

तीन दिवसीय जयपुर-ब्यावर अंचल प्रवास संपन्न

जयपुर-ब्यावर अंचल का 11 से 13 अप्रैल तक तीन दिवसीय प्रवास संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जी, दानपेटी योजना के राष्ट्रीय संयोजक जी एवं अंचल के राष्ट्रीय मंत्री की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रवास के विभिन्न स्थानों पर साहित्य संयोजक एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, दानपेटी योजना अंचल प्रभारी व स्थानीय संघों के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

प्रवास के प्रथम दिवस ब्यावर, जेठाना, अजमेर में, द्वितीय दिवस जयपुर, टोंक, काकोड़, अलीगढ़, उखलाना में तथा तृतीय दिवस सवाई माधोपुर, बजरिया (मंडी रोड, आदर्श नगर), हाउसिंग बोर्ड-आलनपुर एवं कोटा में स्थानीय संघ व शाखाओं के साथ बैठक आयोजित की गई। सभी स्थानों पर प्रवासी दल ने संघ प्रवृत्तियों एवं महत्तम शिखर महोत्सव का विवेचन करते हुए संघ प्रवृत्तियों से जुड़ने एवं महत्तम शिखर के कार्यों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी।

प्रवास के दौरान श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-6, शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-11, शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6, शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन, प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

::::: विशेष उपलब्धियाँ :::::

- बजरिया संघ ने संघ आबद्धता ग्रहण की।
- अलीगढ़ संघ को क्षेत्र घोषित किया गया।
- काकोड़, उखलाना, आदर्श नगर-बजरिया, हाउसिंग बोर्ड-आलनपुर नए क्षेत्र घोषित।

श्रीमती राजरानी रजत जी मूथा, जयपुर ने संघ महाप्रभावक सदस्यता हेतु स्वीकृति प्रदान की एवं अन्य अनेक दानदाताओं ने महत्तम महोत्सव हेतु सहयोग प्रदान किया।

-राष्ट्रीय मंत्री

भारत रत्न सम्मान

श्रमणोपासक के 29-30 फरवरी 2024 के अंक में पृष्ठ संख्या 37 पर प्रकाशित भारत रत्न सम्मान समाचार में '**इदं न मम**' के संबंध में उल्लेखित वाक्य ''**ज्ञातव्य है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर ने संघ के श्रावक-श्राविकाओं में दान की प्रवृत्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से इस वाक्य को संघ का आदर्श वाक्य निरूपित किया है**'' का भाव यह कतई नहीं है कि अर्थ का दान देने का भाव बढ़ाया जाए। इसका विहंगम अर्थ है कि श्रावक-श्राविकाओं में ममत्व त्याग का भाव उच्चतर स्तर पर हो, जिससे वे संग्रह प्रवृत्ति का त्याग कर अपरिग्रह की भावना को बढ़ाएँ। यदि इस वाक्य से किसी के भावों को ठेस लगी हो तो हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

-टीम श्रमणोपासक

नो एंड ग्रो के बच्चों ने मनाया महावीर जन्मकल्याणक

नो एंड ग्रो द्वारा अपने सभी केंद्रों पर 1 मार्च से 15 अप्रैल तक अखिल भारतीय '**सामायिक से समकित**' अभियान चलाया। इसे चार श्रेणियों में विभाजित किया गया एवं प्रत्येक श्रेणी में दो स्तर रखे गए। प्रथम स्तर में बच्चे माता-पिता एवं परिवार के बिना एवं द्वितीय स्तर में अपने माता-पिता और परिवार के साथ सामायिक कर सकें। प्रथम स्तर के बच्चों को 15, 35, 50, 72 एवं द्वितीय स्तर के बच्चों को 26, 40, 56 एवं 72 सामायिक का लक्ष्य दिया गया। अनेक उत्साहित बच्चों ने सामायिक के अधिकतम लक्ष्य को पूरा किया। 145 से ज्यादा बच्चों ने इस अभियान से जुड़कर धर्माराधना की। सभी बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप जैनिज्म पर आधारित लूडो बोर्ड गेम दिया गया।

नो एंड ग्रो एक्सक्लूसिव के बच्चों ने भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया। 21 अप्रैल को फिजिकल एवं ऑनलाइन कक्षा की शुरुआत ध्यान से की गई, तत्पश्चात् सभी बच्चों ने नाटिका के माध्यम से वेज-नॉनवेज मिश्रित होटल में खाना खाने की हानियाँ बताईं। बच्चों को प्रमोद भावना, मैत्री भावना, मध्यस्थ भावना, करुणा भावना का विवेचन बताते हुए इन भावनाओं को अपनाकर पाप कर्मों से बचने का मार्गदर्शन किया गया। बच्चों ने वेज-नॉनवेज होटल में खाना नहीं खाने एवं मम्मी-पापा को भी प्रेरित करने का प्रण लिया। सामायिक से समकित पूर्ण करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। जैनिज्म आधारित लूडो गेम से बच्चों एवं अभिभावकों को प्रेरित किया गया।

बच्चों के आध्यात्मिक विकास हेतु हम से संपर्क करें -

नो एंड ग्रो एक्सक्लूसिव

मो.नं. : 9699880735, www.kngex.com

संस्कारों से पोषित भाविक

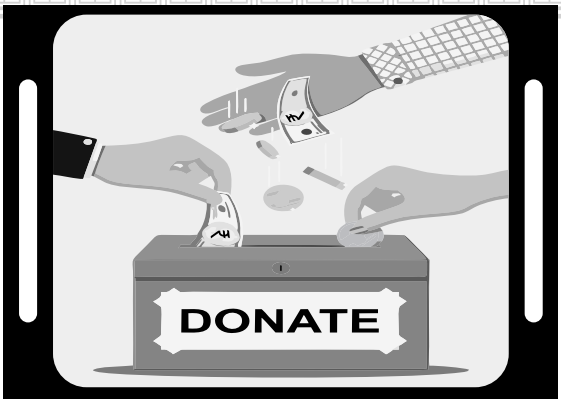
गुवाहाटी के पाँच वर्षीय बालक भाविक सुपौत्र गौतम जी सुराना। इतनी छोटी वय में प्रतिक्रमण के 12 स्थूल सीख रहा है। यह बच्चा पाठशाला में प्रवेश के पश्चात् बिना किसी से बात किए पूर्ण विधि के साथ सामायिक करता है। धार्मिक संस्कारों से पोषित बालक भाविक रात्रि में सोने से पूर्व ही धार्मिक उपकरणों का किट तैयार कर अपनी मम्मी को बोलकर सोता है कि मुझे सवेरे जल्दी उठकर समता संस्कार पाठशाला जाना है। ऐसे नन्हे बालक समाज के लिए उदाहरण हैं। गुरुदेव की असीम कृपा से ऐसा गुदड़ी का लाल गुवाहाटी संघ को प्राप्त हुआ है। हमें भी अपने बच्चों को जैन संस्कार पाठशाला में भेजना चाहिए। होनहार बालक के अभिभावकों को बहुत-बहुत साधुवाद।

-राष्ट्रीय संयोजक, समता समता पाठशाला

विविध भेंट सार्फत

26 मार्च से 30 अप्रैल 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –



संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

5,50,000/- विजय कुमार जी गोलछा (कमला देवी गोलछा), बीकानेर

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

10,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
2,50,000/- मीना देवी आँचलिया, जयपुर
1,25,000/- कमल जी सिपानी, बेंगलुरु
1,11,100/- अजीत जी कांकरिया, सूरत
1,11,000/- पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़
1,11,000/- पारसमल जी खेतपालिया, ब्यावर
1,11,000/- विनोद (श्रेणिक) जी नाहर, ब्यावर
1,01,000/- सुरेश कुमार जी बच्छावत, बीकानेर
51,000/- रतनलाल जी मोहित जी सांखला, अजमेर
21,000/- हेमलता जी चपलोत, उदयपुर
11,000/- मनोज कुमार जी पीपाड़ा, बिरमावल
11,000/- ऋषभ जी पीपाड़ा, बिरमावल
1,000/- मेघल जी इंदरचंद जी पारख, बीकानेर

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

समता भवन, हावड़ा

22,02,000/- समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, नंदुरबार

4,11,111/- अनिल कुमार जी जवेरीलाल जी सुराणा, नंदुरबार
2,00,000/- अरुणा बेन अशोक कुमार सोमानी, नंदुरबार

समता भवन, संगरिया

4,00,000/- सुरेंद्र जी दस्साणी, मुंबई

समता भवन, लूणकरणसर

2,50,000/- केशरीचंद जी भूरा, रायपुर
31,000/- सुशील जी कातेला, देशनोक
21,000/- महेंद्र जी बैद, पंचकूला
21,000/- गुप्तदान, गुरुग्राम
11,000/- मेघराज जी बोथरा (जसकरण जी बोथरा की स्मृति में)
11,000/- कांतिलाल जी दुगड़, सोमेसर
11,000/- संजय जी बोथरा, पंचकुला (श्री पानमल जी बोथरा की पुण्यस्मृति में)
11,000/- बहादुरचंद जी मुणोत, जोधपुर
11,000/- विनीत जी सुनीत जी सुजीत जी सेठिया, कटक
11,000/- गुलाबचंद जी सांखला, जोधपुर

संघ सहयोग

5,000/- रविंद्र जी धनराज जी गाँधी, नागपुर

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

1,26,000/– विजयचंद जी बैद, दिल्ली
1,00,000/– संपत देवी बिमलचंद जी जैन, बेंगलुरु
1,00,000/– राजकरण जी बरड़िया, अहमदाबाद
51,000/– किशोरचंद जी प्रेमचंद जी लोढ़ा, चोपड़ा
22,000/– नवरतन जी ओस्तवाल, ब्यावर
21,000/– मोहनलाल जी जैन, राँची
21,000/– शुभकरण जी बच्छावत, राँची
21,000/– राजमल जी चोरड़िया, जयपुर
21,000/– जुगलकिशोर जी जैन, वापी
11,000/– रतनलाल जी रोशनलाल जी पारख, बेंगलुरु
11,000/– यशोदा बाई देसरला, बेंगलुरु
11,000/– सुरेश कुमार जी बच्छावत, बीकानेर
11,000/– प्रेमचंद जी ढेढ़िया, पाली
11,000/– कंचन देवी जैन, संबलपुर
11,000/– अमरचंद जी रमेशचंद जी चोरड़िया, शहादा
11,000/– मगनमल जी संचेती, सिलापथार
11,000/– नरेश कुमार जी सांखला, तिरुपुर
11,000/– मोहनलाल जी पारख, नोखा
11,000/– कन्हैयालाल जी कोटड़िया, मुंगेली
11,000/– लालचंद जी रांका, पाली
11,000/– गौरव जी पगारिया, सूरत
10,000/– ज्ञानचंद जी डांगी, बड़ीसादड़ी
8,800/– अनोखीलाल जी सिंघवी, रतलाम
6,300/– संजय जी बोथरा, पंचकुला
5,100/– तेजमल जी कांकरिया, नोखा
5,100/– प्रकाशचंद जी प्रदीप जी सोनी, खरियार रोड

5,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सरोज देवी मुणोत, रतलाम, उत्तमचंद जी लोढ़ा, ब्यावर, **सिलचर से–** मंदाक्ष जी गुलगुलिया, लीला देवी गुलगुलिया, अरिहंत जी गुलगुलिया, राजेश जी गुलगुलिया, जीतेंद्र जी बोथरा, सूरत
4,200/– सुशीला जी सांखला, सूरत
4,200/– रजनी जी बूलिया, सूरत

3,300/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पंचकुला से– धीरज जी बोथरा, किशोर जी बोथरा, नवरतन जी बोथरा
3,110/– गुप्तदान, जगदलपुर
3,101/– फतेहलाल जी चांदमल जी हिंगड़, वलसाड़
3,100/– हस्तीमल जी आशा जी सेमरा, कट्टूमन्नारकोइल (तमिलनाडु)/ब्यावर
3,000/– गुप्तदान, रतलाम
3,000/– सुशील कुमार जी बोथरा, कोलकाता
2,500/– प्रेमचंद जी पारख, सूरत

2,200/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– ब्यावर से– मोतीलाल जी कोठारी, मुकेश जी कोठारी, राकेश जी कोठारी, गौतमचंद जी बुरड़, बाबूलाल जी नाबेड़ा, संदेश कुमार जी नाबेड़ा, नीलेश कुमार जी नाबेड़ा, चांदमल जी रांका, सुरेशचंद जी खींचा, सुनील कुमार जी खींचा, अनिल कुमार जी खींचा
2,121/– नवलचंद जी मोतीलाल जी भूरा, बीकानेर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गुप्तदान, दिलीप जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर, राजेंद्र कुमार जी सेठिया, सूरत, महेंद्र जी मेहता, सूरत
2,000/– मूलचंद जी सांखला, सूरत
2,000/– पुष्पेंद्र सिंह जी बूलिया, सूरत
1,500/– धर्मेंद्र जी कातेला, पंचकुला
1,500/– पारसमल जी ओस्तवाल, ब्यावर
1,500/– राजेंद्र जी बम्ब, टोंक

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– बलवंत कुमार जी कविता जी शाह, वलसाड़, **ब्यावर से–** शांतिलाल जी लुणावत, गौतम जी चौधरी, निर्मला जी चौधरी, अभय जी चौधरी, प्रियंका जी चौधरी, अरहम जी चौधरी, पन्नालाल जी कोठारी, ओमप्रकाश जी खींचा, ज्ञानचंद जी सोनी, नरेंद्र जी सोनी, सूरत, विमलेश जी तातेड़, सूरत
1,000/– राजेश जी सुराणा, ब्यावर
1,000/– दिनेश जी बाबेल, ब्यावर

555/– कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा
501/– सुशील कुमार जी शाह, राजनांदगाँव
500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मधु जी भानावत, उदयपुर, समीरमल जी कटारिया, रावटी, **ब्यावर से–** प्रवीण जी चंडालिया, धर्मीचंद जी ओस्तवाल, संपतराज जी बोहरा, अनिल कुमार जी पालदेचा, तेजमल जी मुणोत

दानपेटी योजना

10,000/– प्रकाशचंद जी सरला देवी बेताला, बेंगलुरु
5,000/– जयचंदलाल जी डागा, बेंगलुरु
3,600/– सुरेश कुमार जी अशोक कुमार जी बुरड़, हवली
3,500/– सुनील कुमार जी जैन, गोलूवाला
2,100/– गंगाराम जी लुणावत, हवली
2,100/– श्री जैन पाठशाला, बंबोरा
1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– मेघराज जी धर्मचंद जी बैद, हवली, सुमेरमल जी कमल कुमार जी पुजापत, हवली, शांतिलाल जी मेघराज जी जारोली, बंबोरा, प्रकाशचंद जी शांतिलाल जी जारोली, बंबोरा
1,200/– सिपानी भवन, कोरमंगला
1,155/– हीरालाल जी पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा
1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रकाश जी जवरीलाल जी चोपड़ा, सेलंबा, खींवराज जी जैन, गोलूवाला, **पीलीबंगा से–** मांगीलाल जी कांकरिया, गणेशमल जी दफ्तरी, छगनलाल जी सुराणा, **हवली से–** विनोद कुमार जी बाँठिया, श्रीपाल जी बोथरा, मेघराज जी पुखराज जी गोलछा, विजेंद्र कुमार जी बांठिया, **बंबोरा से–** प्यारचंद जी कदमालिया, पारस कुमार जी मनोज कुमार जी वया, शांतिलाल जी भगवतीलाल जी जारोली
1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सौरभ देवी धर्मपत्नी स्व. श्री देवीलाल जी चपलोत, उदयपुर, गुप्तदान, **बंबोरा से–** पूनमचंद जी शांतिलाल जी वया, रिमझिम जी पितलिया, ज्योति जी सुरेश जी नलवाया
700/– संगीता देवी जितेंद्र जी, बंबोरा
700/– नाथूलाल जी सुनील जी जारोली, बंबोरा
600/– पूजा देवी वीणा देवी पितलिया, बंबोरा
555/– महेंद्र जी पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा
551/– रवि कुमार जी पारस कुमार जी जारोली, बंबोरा
540/– सतीश जी फतेहचंद जी राखेचा, सेलंबा
521/– सुमित्रा देवी अमित जी जारोली, बंबोरा
500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सोहनलाल जी गोलछा, नोखा मंडी, **सेलंबा से–** कंवरलाल जी भंवरलाल जी चोपड़ा, सुनील जी पुखराज जी बुरड़, रमेश जी शांतिलाल जी साबद्रा, नितेश जी पारसमल जी छाजेड़, ताराचंद जी आसकरण जी कोटड़िया, अमृतलाल जी श्रीश्रीमाल भंसाली, **गोलूवाला से–** सत्यपाल जी जैन, रतनलाल जी जैन, ताराचंद जी जैन, मनोहरलाल जी जैन, सुंदरलाल जी जैन, किशनलाल जी जैन, कमलचंद जी जैन, विशाल कुमार जी जैन, **बंबोरा से–** ललित कुमार जी डालचंद जी पितलिया, महावीर कुमार जी डालचंद जी पितलिया, जीवन कुमार जी बक्शीलाल जी जारोली, पुष्पा देवी अशोक जी पितलिया, कालूलाल जी गणेशमल जी जारोली, नरेश कुमार जी कजोड़ीमल जी नागौरी, कैलाश कुमार जी शंकरलाल जी जारोली, घीसूलाल जी बख्शीलाल जी जारोली, ओंकारलाल जी बख्शीलाल जी जारोली, अशोक कुमार जी कालूलाल जी वया, हेमलता देवी प्रकाश जी वया, चंदा देवी पूनमचंद जी जारोली, घीसूलाल जी हीरालाल जी वया, अभिषेक कुमार जी धर्मचंद जी चंडालिया, पंकज कुमार जी मानमल जी नलवाया, ललित कुमार जी बख्शीलाल जी पितलिया, गौतम कुमार जी रोशनलाल जी जारोली, सरिया देवी पारसमल जी जारोली, **कुंथवास से–** बसंतीलाल जी वया, बसंत कुमार जी कोठारी, मनोहरलाल जी पितलिया, मदनलाल जी नाथूलाल जी कोठारी, विजय सिंह जी वया, झमकलाल जी कोठारी, मदनलाल जी पारसमल जी कोठारी, चेतन कुमार जी कोठारी, पुष्पा बाई मोतीलाल जी कोठारी, विमला बाई अशोक जी कोठारी, धर्मचंद जी वया, पूरण कुमार जी कोठारी, पारसमल जी वया,

सोहनलाल जी पितलिया, शांतिलाल जी पितलिया, राजकुमार जी पितलिया, भंवरलाल जी पितलिया, चांदमल जी लसोड़, प्रेम बाई शांतिलाल जी लसोड़, सुरेश कुमार जी कोठारी, सुरेश कुमार जी लसोड़, दीपेश कुमार जी धाकड़, संपतलाल जी पितलिया, बंशीलाल जी पितलिया, उदयलाल जी रमेश कुमार जी लसोड़

जीवदया

21,000/- सुनील जी हनुमानदास जी सिपानी, इंदौर

10,000/- गौतमचंद जी ऊषा देवी साँखला, दुर्ग

5,000/- मोहनलाल जी जैन, रांची (बालचंद जी एवं श्रीमती लाडा देवी पींचा की पुण्यस्मृति में)

5,000/- सुधीर कुमार जी लुणावत, नरसिंहपुर

2,100/- प्रमोद कुमार जी जैन, गंगाशहर (ललिन जी जैन द्वारा नाटिका में महावीर स्वामी की भूमिका निभाने के उपलक्ष्य में)

2,001/- पीयूष जी मांडोत, पुणे

2,000/- रवि जी अशोक कुमार जी जैन, मुंबई

1,000/- सौरभ देवी धर्मपत्नी स्व. श्री देवीलाल जी चपलोत, उदयपुर

999/- मूलचंद जी छाजेड़, साजा

500/- गुप्तदान, बीकानेर

समता प्रचार संघ

1,100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, विसनगर

समता संस्कार पाठशाला

10,000/- सुनील जी हनुमानदास जी सिपानी, इंदौर

1,000/- सौरभ देवी धर्मपत्नी स्व. श्री देवीलाल जी चपलोत, उदयपुर

विहार सेवा सदस्यता

1,00,000/- मूलचंद जी कोटड़िया, कोरबा

1,00,000/- निर्मल कुमार जी पुत्र शांतिलाल जी चपलोत, नागदा

1,00,000/- प्रेमलता जी कांकरिया, नोखा

समता सरिता सेवा/विहार सेवा निधि

21,000/- बिमल कुमार जी संचेती, विशाखापट्टनम्

10,000/- सुनील जी हनुमानदास जी सिपानी, इंदौर

500/- राजेंद्र जी बम्ब, टोंक

समता साहित्य स्टॉल अनुदान राशि

25,000/- जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु

श्रमणोपासक भेंट

2,100/- भंवरलाल जी कोचर, बीकानेर

2,000/- आशा जी सामरा, चेन्नई (श्री बुद्धराज जी एवं चंचल देवी सामरा की पुण्यस्मृति में)

1,100/- प्रकाशचंद जी मेहता, बड़ीसादड़ी

1,100/- बाबूलाल जी तेलीपाड़ा, सवाई माधोपुर (कपिल जी के विवाह के उपलक्ष्य में)

500/- लेहरचंद जी सिपानी, गंगाशहर (प्रशांत जी सिपानी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में)

समता जनकल्याण प्रन्यास

11,000/- गुप्तदान, कोलकाता

10,000/- सुनील जी हनुमानदास जी सिपानी, इंदौर

1,000/- सौरभ देवी धर्मपत्नी स्व. श्री देवीलाल जी चपलोत, उदयपुर

समता संस्कार शिविर

1,000/- सौरभ देवी धर्मपत्नी स्व. श्री देवीलाल जी चपलोत, उदयपुर

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

5,100/- जीवनप्रभा जी धर्मचंद जी बैद, मुंबई

5,000/- गुप्तदान, बीकानेर

1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी डागा, रायपुर

500/- गुप्तदान, रायपुर

छात्रवृत्ति योजना (महिला समिति)

21,000/- श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल, समता बहू मंडल, बीकानेर

11,000/- समता महिला मंडल, गंगाशहर-भीनासर
5,100/- समता महिला मंडल, देशनोक

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-6, साहित्य सदस्यता-3, महिला समिति सदस्यता-6

:: 1 अप्रैल 2024 से 30 अप्रैल 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
03.04.24	12,000/-	UPI मयंक
04.04.24	500/-	नकद
04.04.24	12,000/-	UPI रौनक
04.04.24	7,000/-	UPI रौनक
04.04.24	1,000/-	UPI रविंद्र
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
07.04.24	2,500/-	UPI शरत
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
15.04.24	17,900/-	UPI कांतिलाल
16.04.24	14,050/-	नकद
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
25.04.24	6,000/-	UPI आकाश
29.04.24	3,256/-	UPI राजेश

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

देवताओं और वीतरागों के पथ की बातें अपने स्थानों पर और भक्तों की दृष्टि से सही हैं, परंतु यह भी ध्यान में रखने की बात है कि उनके द्वारा दिखाए गए पथ अथवा मार्ग आदर्श मार्ग हैं। सीमित मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताओं से युक्त सामान्य जन उन्हें इसी रूप में ग्रहण कर उनके अनुसरण का प्रयास करते हैं। वे पूर्णत: उन पर चल पाते हैं या नहीं, यह तो दूसरी बात है। प्रमुख बात है यह देखना कि उनकी उन मार्गों पर चलने की कामना कितनी प्रबल होती है और कितने समर्पित भाव से वे अनुसरण हेतु प्रवृत्त होते हैं। यदि उनकी प्रवृत्ति पूर्ण समर्पित निष्ठा की बनती है तो समझ लिया जाना चाहिए कि उन्हें मंजिल मिल जाएगी। वे कितनी दूर तक चल पाते हैं, कहाँ तक पहुँच पाते हैं और कितने सफल होते हैं, ये बातें तब अर्थहीन हो जाती हैं, क्योंकि मुख्य बात भावना की होती है और उसकी उत्कटता ही मंजिल तक पहुँचाने में सहायक होती है। वर्तमान काल के संत-सती जन इस दृष्टि से उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं। ऐसे जिन समर्पित जनों ने धर्म प्रभावना के मार्ग को आलोकित किया है।

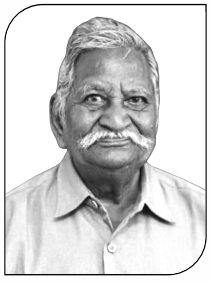
– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विनम्र श्रद्धांजलि

चित्तौड़गढ़। सुश्राविका बसंती देवी धर्मपत्नी मदनलाल जी सरूपरिया का 7 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी महिला थीं। आपने तीन आचार्यों की सेवा का लाभ लिया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।



चित्तौड़गढ़। सुश्रावक मांगीलाल जी भड़कतिया का 95 वर्ष की आयु में 24 अप्रैल को निधन हो गया। आप धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे। निधन पश्चात् परिजनों द्वारा आपके नेत्र दान किए गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।



शहादा। सुश्राविका चंदनबाला जी धर्मपत्नी खुशालचंद जी कोटड़िया का 24 अप्रैल को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा व आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।



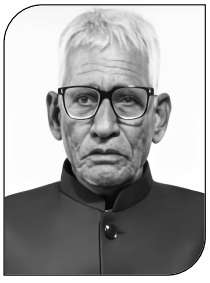
इंदौर। सुश्राविका प्रेम बाई धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेदमल जी गांधी निवासी अजमेर का 91 वर्ष की आयु में 27 अप्रैल को निधन हो गया। आप प्रतिदिन 5-7 सामायिक एवं दोनों समय प्रतिक्रमण का लक्ष्य रखती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति पूर्ण समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।



पाचोरा, जलगाँव। सुश्राविका तारा बाई धर्मसहायिका दीपचंद जी बोथरा का 78 वर्ष की आयु में 29 अप्रैल को निधन हो गया। आप अपने जीवन में अनेक तपस्याओं के साथ निरंतर 30 वर्षों से वर्षीतप आराधना में लीन थीं। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।



चिलेश्वर। सुश्रावक शांतिलाल जी सुपुत्र जोधराज जी काल्या का 70 वर्ष की आयु में 17 मई को निधन हो गया। आपकी भावनानुसार मरणोपरांत आपके नेत्रदान किए गए। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति पूर्ण श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।



सिलचर। सुश्रावक रामलाल जी सुपुत्र स्व. श्री मानमल जी गुलगुलिया का 67 वर्ष की आयु में 19 मई को देहावसान हो गया। आप सरल, मृदुभाषी, सौम्य व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य नानेश व आचार्य रामेश के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा व समर्पणा थी। मरणोपरांत आपके नेत्र दान किए गए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।



66 दिवसीय संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. की अंतिम यात्रा में उमड़ा जनसैलाब

- **राम गुरु शासन में अब तक सबसे बड़ा संथारा**
- **भदेसर बना तीर्थधाम, गुरुवर दो बार दर्शन देने हेतु पधारे**
- **धर्म-ध्यान के साथ शास्त्र पठन व जाप का क्रम अनवरत जारी रहा**

भदेसर। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की महत्ती कृपा से साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने 9 मार्च 2024 को सायं 5:10 बजे शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. के श्रीमुख से तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संथारे पश्चात् आपकी उच्च भावना को देखते हुए आचार्य भगवन् की विशेष आज्ञा से 11 मार्च को आपकी जैन भागवती दीक्षा श्रावक-श्राविकाओं की अपार जनमेदिनी के मध्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. के मुखारविंद से संपन्न हुई। आपका संथारा पूर्ण समाधि एवं सजगता के साथ गतिमान था। इसी बीच 12 मई 2024 को रात्रि 11:45 बजे आपश्री जी को चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. के श्रीमुख से करवाए गए, जो 13 मई को प्रातः 6:15 बजे सीझ गया। संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. ने 66 दिन समभाव, सजगता व समाधि के साथ संथारा धारण कर मृत्यु को महोत्सव बना दिया।



संथारा सीझने के पश्चात् आपकी डोल यात्रा उसी दिन प्रातः 10:00 बजे नानेश-रामेश समता भवन से प्रारंभ हुई, जो जय-जयकारों के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई मोक्षधाम पहुँची। डोल यात्रा में शामिल गुरुभक्त भगवान महावीर, आचार्य श्री रामेश, उपाध्याय प्रवर एवं संथारा साधिका जी की जय-जयकार के साथ केसर व गुलाल उड़ाते हुए तीनों मनोरथ पूर्ण होने की अनुमोदना कर रहे थे। डोल यात्रा में मार्ग के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर जनों ने साध्वीश्री जी के अंतिम दर्शन कर जीवन धन्य बनाया। मोक्षधाम में पारिवारिकजनों के साथ-साथ संघ प्रमुखों ने मुखाग्नि दी। उनकी नश्वर देह पंचतत्त्व में विलीन हो गई।

डोल यात्रा में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालक-बालिका मंडल के साथ आसावरा माता, मंगलवाड़, बड़ीसादड़ी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, नाहरगढ़, मोरवन, भादसोड़ा, लसड़ावन, निकुंभ, चिकारड़ा,

मांगरोल, बानसेन, सावा, कन्नौज, नीमच, नयागाँव, सीतामऊ, पिपलिया मंडी, कपासन, जलोदा, उदयपुर, बेगूँ, फतहनगर, सनवाड़, बोरदिया कलां, मुंबई, भीलवाड़ा, अठाना आदि अनेक क्षेत्रों से गुरुभक्त उपस्थित हुए। भदेसर सहित संघ के इतिहास में साध्वीवर्या द्वारा 66 दिन संथारे की आराधना अपने आपमें कीर्तिमान बन गया। डोल यात्रा के दिन जैन समाज ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे।

दाह-संस्कार पश्चात् आयोजित गुणानुवाद सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, संघ, महिला समिति, समता युवा संघ एवं भदेसर संघ के अनेक वर्तमान व पूर्व पदाधिकारी, वीर परिजन तथा आस-पास व देश के अनेक भागों से पधारे श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

वक्ताओं ने संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. का गुणानुवाद करते हुए शीघ्र चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने की प्रार्थना की। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर भावांजलि अर्पित की गई।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 14 मई 2024 को समता भवन में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ, जिसमें भदेसर संघ के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं संथारा साधिका जी के संसारपक्षीय मोदी परिवार के अनेक सदस्यों ने गुणानुवाद करते हुए आपश्री जी के जीवन को सेवा एवं समर्पणा से ओत-प्रोत बताया।

साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि ऐसा संथारा इस आयु में पहले कभी नहीं देखा। संथारा साधिका साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा. पूर्ण समाधि, शांत भाव व सजगता के साथ अपनी आत्मा को मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ा रहे थे। आपके संथारे व दीक्षा के पश्चात् भदेसर में दो दीक्षाएँ संपन्न हुई। राम गुरु के शासन में अब तक का सबसे बड़ा संथारा आपश्री जी ने ठाया है।

संथारा गतिमान रहते संथारा साधिका जी की संसारपक्षीय पड़दोहित्री का आज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित हुआ एवं दीक्षा प्रसंग संपन्न हुआ। आचार्य भगवन् अपार कृपा का वर्षण करते हुए दो बार संथारा साधिका जी को दर्शन देने हेतु भदेसर पधारे।

आपकी संसारपक्षीय सुपुत्री शासन दीपिका साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. इंदौर से 375 किमी. उग्र विहार कर माता जी म.सा. की सेवा कर माँ के ऋण से ऊऋण होने हेतु उपस्थित हुईं। संथारा और दीक्षा के बाद सैकड़ों महापुरुषों एवं साध्वीरत्नाओं का आपको



दर्शन देने हेतु भदेसर पधारना हुआ। हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने आपके दर्शन कर संथारे की अनुमोदना कर उच्च भावना भाई। संथारा साधिका जी अंतिम समय तक मांगलिक फरमाते थे।

संथारे व दीक्षा के पश्चात् तो जैसे सारी आधि-व्याधि गायब हो गई एवं गुरुकृपा से पूर्ण स्वस्थ हो गए। आयु के अंतिम दशक (95 वर्ष की उम्र) में ऐसा साहसिक कदम विरले ही उठा पाते हैं। देश-विदेश में आपश्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है। महत्तम

महोत्सव में आपने ऐतिहासिक कार्य करके दिखाया है।

आपका जीवन बहुत ही शांत स्वभाव का था। आपके आठ पुत्र व तीन पुत्रियाँ हैं। आप अपने कलेजे के टुकड़े को गुरुचरणों में समर्पित करके वीर माता कहलाई। आपके मन में संयम ग्रहण करने के भाव उमड़ रहे थे। जीवन के अंतिम क्षण में आप संथारा व दीक्षा लेकर धर्म माता बन गईं। आपके वीर पुत्रों ने आपके भावों को समझते हुए आपको संयम मार्ग पर अग्रसर कर ऐतिहासिक कार्य किया। आपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर रामेश शासन, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, भदेसर संघ एवं आपके संसारपक्षीय मोदी परिवार को गौरवान्वित किया है।

-अभय मोदी

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री रामकस्तूर श्री जी म.सा.

सांसारिक नाम :

श्रीमती कस्तूर बाई मोदी

जन्म स्थल :

बानसेन, जिला चित्तौड़गढ़

दीक्षा तिथि व स्थल :

फाल्गुन सुदी 1, संवत् 2080

दिनांक 11 मार्च 2024, भदेसर

परिवार से दीक्षित :

साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय पुत्री)

पारिवारिक परिचय

पति :

स्व. श्री शांतिलाल जी मोदी

माता-पिता :

स्व. श्रीमती पानी बाई-स्व. श्री डालचंद जी लोढ़ा

सास-ससुर :

स्व. श्रीमती टीपू बाई-स्व. श्री पन्नालाल जी मोदी

पुत्र :

मनोहरलाल जी, कन्हैयालाल जी, हिम्मतलाल जी, स्व. श्री राजकुमार जी, स्व. श्री विजय कुमार जी, अभय कुमार जी, संजय कुमार जी, नरेंद्र कुमार जी मोदी

पुत्रियाँ :

कमला बाई चंडालिया, लीला देवी मुरड़िया



ऐतिहासिक शिविर अभिमोक्षम्

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

गगन गूँज रहा जयकारों से, चित्तौड़ संघ बना तत्पर।
पावन सान्निध्य हुक्मसंघ के नवम् नगीने का पाकर।।
उमड़ रहा धार्मिक उल्लास, छाई आश्चर्यजनक हलचल।
अभिमोक्षम् ऐतिहासिक शिविर में, हर पल मंगल ही मंगल।।
16 दिवस के लिए छोड़ आए, माँ-पापा का स्नेह और घर।
ना कूलर, ना ए.सी., ना पंखे, अहो गर्मी भी है बड़ी भयंकर।।
ना जंक फूड, ना फास्ट फूड, ना पावभाजी, पिज्जा, बर्गर।
होटल का खाना नहीं फिर भी, तृप्त सादा खाना खाकर।।
भौतिकता से दूर प्रेरक प्रवचन से, ब्राइट हो रहा फ्यूचर।
गुरुदेव भी चाहते हैं अच्छा हो, बच्चों का जीवन स्तर।।
बाँट रहे सुद्रव्य ज्ञान का, दिव्य खजाने से भर-भर।
संत-सतियों की वाणी में भी, संस्कारों का अमृत झर-झर।।
उदित हुआ सौभाग्य सूर्य, अणु-अणु में ऊर्जा देगा भर।
आत्मा निर्मल और सुखद भविष्य, बनाने का अनुपम अवसर।।
जिनकी पावन पद-रज से, लहलहाए सूखा मरुधर।
बरसाई कृपा निहाल कर दिया, रहो सदा जयवंत गुरुवर।।
सादर सविनय राम चरण में, जीवन का पल-पल अर्पण।
अक्षय गुणनिधि के सागर को, 'प्रतिभा' भाव-भरा वंदन।।

साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा. का देवलोकगमन

कानोड़। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की सान्निध्यवर्तिनी साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा. 20 मई 2024 को सायं 6:35 बजे हो गया। आपकी डोल यात्रा 21 मई को पंचायती नोहरा, गाँधी चौक से प्रातः 9:00 बजे प्रारंभ हुई। डोल यात्रा में शामिल श्रावकगण एवं युवा वर्ग सफेद वस्त्रों में एवं श्राविकाएँ महिला समिति की वेषभूषा में संपूर्ण मार्ग जय-जयकारों से गुंजायमान करते हुए चल रहे थे। मार्ग के दोनों ओर जैन-जैनेतर जन अंतिम दर्शनों हेतु कतारबद्ध खड़े साध्वीवर्या को अंतिम विदाई देते हुए संयमी जीवन की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। कानोड़ के विभिन्न मार्गों से होते हुए डोल यात्रा अंतिम विश्राम स्थल मोक्षधाम पहुँची, जहाँ केंद्रीय एवं स्थानीय संघ के पदाधिकारियों के साथ पारिवारिकजनों ने मुखाग्नि दी।

डोल यात्रा में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल एवं समता बहू मंडल, कानोड़ के सदस्य एवं पदाधिकारियों सहित आस-पास व देश के अनेक स्थानों से पधार गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

जीवन के उत्तरार्द्ध में 78 वर्ष की आयु होने पर भी आप अपने सभी कार्य स्वयं करने का लक्ष्य रखती थी। धर्म-ध्यान, शास्त्र अध्ययन आदि में आपकी विशेष रुचि अपने आप में विशिष्ट थी। आपने लगभग 22 वर्ष तक संयम जीवन का दृढ़तापूर्वक पालन कर भगवान महावीर के शासन की अद्भुत प्रभावना की। आपके संसारपक्षीय परिवार में दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। आप शीघ्र ही सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन अपना चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करें यही शुभेच्छा है।

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा.

सांसारिक नाम :
श्रीमती सुशीला जी पारख
जन्म तिथि व स्थल :
ज्येष्ठ बदी 7, संवत् 2003
दिनांक 15 दिसंबर 1946, नीमच (म.प्र.)
दीक्षा तिथि व स्थल :
वैशाख सुदी 3, संवत् 2059
दिनांक 15 मई 2002, बीकानेर (राज.)
परिवार से दीक्षित :
साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सिद्धप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री तरुलता श्री जी म.सा., साध्वी श्री अंजलि श्री जी म.सा., साध्वी श्री उमा श्री जी म.सा.

दीक्षा प्रदाता :
आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.
पारिवारिक परिचय
पति :
श्री उमरावमल जी पारख
माता-पिता :
श्रीमती चाँद बाई-श्री भंवरलाल जी कांठेड़
पुत्र :
नरेंद्र जी, अरुण जी पारख
पुत्रियाँ :
अनिता जी बाफना, सुनीता जी नवलखा
सांसारिक पता :
महावीर बाजार, पो. ब्यावर जि. अजमेर (राज.)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति



।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

चमन खिलाओ

मन की खटास अंतर के स्नेह को सोख लेती है, नष्ट कर देती है। रहीम दास जी कहते हैं –

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाय।।

जब तक मन मिला रहता है तब तक स्नेह, वात्सल्य भाव वृद्धिगत होता रहता है। उस समय कुछ कहा-सुना हो भी जाता है तो बात आई-गई हो जाती है, पर जब मन फट जाता है तो छोटी से छोटी बात बहुत बड़ी बन जाती है। तिल का ताड़ बन जाता है। यह नतीजा, परिणाम मन की खटास का है।

मन को जहाँ तक हो खटास से बचाना चाहिए। उसे माधुर्य से भरा रखना चाहिए। ऐसा वात्सल्य से संभव है। ऐसा सौहार्द भाव से संभव है। यदि किसी ने कुछ कह भी दिया तो उसे गौण कर देने से मन का माधुर्य रिसता नहीं है। मन में खटास तब पैदा होती है, जब छोटी-छोटी बातों को पकड़कर रखा जाता है और समय-समय पर उन्हें उद्धृत्त किया जाता है। वे बातें जब मन में जमी रहती हैं तो वे धीरे-धीरे अपना असर करने लगती हैं। जिस स्थान पर पानी जमा रहता है, वह भूमि भी प्रायः ऊसर बन जाती है। उस स्थिति में उक्त बातें यदि मन में जमी रहें तो उससे मनोभूमि बंजर बन जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है। मनोभूमि स्निग्ध रहती है तो उससे आत्मविकास की संभावनाएँ बनी रहती हैं। आत्मा गुणोत्कर्ष की दिशा में अग्रसर बनती है। आत्मा में अच्छे-अच्छे गुण विकसित हो आत्मा को चमन बना देते हैं। अतः मनोभूमि को खटास से बचाएँ। उसे स्निग्ध बनाए रखें ताकि चमन खिल सके। (उपांशु)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.



महिला संगठन

स्कूल चलें हम....



संगठन के अंतर्गत '**स्कूल चलें हम**' नामक एक गतिविधि जून में आयोजित करवाई जाएगी। गतिविधि की नियमावली निम्न प्रकार है –

नियमावली :-

- सबसे पहले सभी को पंक्तिबद्ध बैठना।
- दूसरे Period के बाद उपस्थिति के अनुसार टीम बनाना।

::: First Period (15 Minutes) :::

- वंदना, 5 नवकार मंत्र, धम्म सद्धा चालीसा।

::: Second Period (15 Minutes) :::

- **चिंतनमणियाँ :**
  - ❖ मैं अनंत शक्ति-संपन्न हूँ।

- ❖ मैं प्रतिक्षण इस बात के लिए जाग्रत हूँ कि मेरे भीतर लेशमात्र भी संक्लेश भाव नहीं उभरें।
- ❖ मैं किसी भी व्यक्ति, किसी भी वस्तु, किसी भी वातावरण या परिस्थिति के संयोग या वियोग से सर्वथा अप्रभावित रहता हूँ।
- ❖ मैं न सफलता पाने पर किंचित मात्र भी प्रसन्न होता हूँ, न विफलता पाने पर लेशमात्र भी खिन्न होता हूँ, चाहे वो सफलता-विफलता धन, वैभव एवं साधना की ही क्यों न हो।
- ❖ मैं इस बात का बिलकुल भी विचार नहीं करता कि कौन मुझे कैसा समझ रहा है? कौन मेरे प्रति क्या सोचता है? कौन मेरे प्रति क्या कहता है और मेरे प्रति किसका क्या दृष्टिकोण है? बल्कि मैं इस बात के लिए जाग्रत रहता हूँ कि मैं सही कर रहा हूँ या गलत। मैं अच्छे रूप में देखा जाना नहीं चाहता हूँ, लेकिन मैं सचमुच अच्छा रहना चाहता हूँ।
- ❖ मैं लोगों द्वारा मेरे प्रति किए गए अच्छे या बुरे विचारों को, अच्छे या बुरे वचनों को, अच्छी या बुरी प्रवृत्तियों को कभी भी मन में दोहराता नहीं हूँ।
- ❖ साथ ही मैं किसी भी व्यक्ति की गलती या दुर्गुण को बार-बार कहता या सोचता नहीं हूँ।
- ❖ मैं हर परिस्थिति को जीवन विकास का साधन मानता हूँ और उस परिस्थिति में पूर्ण सम्यक्त्व भाव को टिकाए रखने के लिए मानसिक तौर पर उद्यमशील रहता हूँ अर्थात् मैं किसी भी परिस्थिति में प्रसन्न, सुखी एवं सहज रहने के बिंदुओं का अनुसंधान करता रहता हूँ।

- उपरोक्त चिंतनमणियाँ घर से मधुरम गीतम वाली डायरी में लिखकर लाना है। यह आपका Homework है, स्थानक में Classwork में कोई एक खड़े होकर बोले, अन्य सभी दोहराएँ।

::: Third Period (15 Minutes) - Drawing :::

- स्थानक से संबंधित किसी भी विषय पर Drawing बनाएँ, जैसे- जय जिनेंद्र, जय महावीर, निस्सिही निस्सिही बोलकर प्रवेश करना, मत्थएण वंदामि बोलकर प्रवेश करना, स्थानक में खुले मुँह बात नहीं करना।

::: Fourth Period (45 Minutes) :::

- स्थानक के रखरखाव से संबंधित आवश्यकतानुसार निम्न कार्यों की पर्ची बना सकते हैं, जैसे- किताबों, पाट, पाटला, आसन, मच्छरदानी, बिस्तर, डाँडिए आदि का प्रतिलेखन।
- प्रत्येक टीम को एक पर्ची उठाना एवं दिए गए कार्य को यतनापूर्वक संपन्न करना।

::: Lunch Time (15 Minutes) :::

- आपके घर से उस दिन बच्चे जो एवं जितना भोजन लेकर स्कूल गए हैं, वैसा ही आपको भी लाना है।

::: विशेष :::

- सचित्त व जमीकंद का निषेध।

  इसमें उपस्थित रहने वाले सदस्यों को आगे आने वाली गतिविधि में 50 पॉइंट मिलेंगे।

केसरिया कार्यशाला

अप्रैल माह की केसरिया कार्यशाला आचार्य की आठ संपदाओं में से वचन संपदा पर आधारित थी, जिसमें आचार्य की वचनवाणी की विशेषताओं के विषय में समझाकर उदाहरणों सहित विस्तृत जानकारी दी गई।

इस कार्यशाला में वाणी तथा दिमाग के सही संतुलन पर आधारित '**टंग ट्विस्टर**' नामक एक गतिविधि करवाई गई, जो बहुत ही रोचक एवं मनोरंजक थी। सभी आंचलिक व स्थानीय क्षेत्रों की संयोजिकाओं के पुरुषार्थ से इस बार 15 से अधिक नवीन क्षेत्र केसरिया कार्यशाला में अति उत्साह से जुड़े। मार्च-अप्रैल माह तक 1050 से अधिक श्राविकाओं ने इसमें भाग लिया।

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम द्वारा 22 अप्रैल 2024 को धम्म सद्धा चालीसा पर एक ऑनलाइन गतिविधि का आयोजन किया गया था, जिसमें फोरम के प्रतिभागियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई एवं अच्छा प्रदर्शन किया। गतिविधि के अंतर्गत प्रत्येक अंचल से 3 विजेताओं को चुना है, जिनके नाम नीचे उल्लेखित हैं –

:: मेवाड़ अंचल ::
रेखा सहलोत, सपना कोठारी, अंकिता जैन

:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::
मोनिका कोठारी, कोमल जैन, हेमलता सिंघी

:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::
अंजू हिंगड़, नीलम मूथा, चंचल गोलछा

:: मध्यप्रदेश अंचल ::
मनीषा पगारिया, रत्ना समदड़िया, सरोज भानावत

:: छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ::
सूरज चौरड़िया, श्वेता खटोड़, दीक्षा जैन

:: कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल ::
काजल बोथरा, सरोज पुगलिया, श्रद्धा बाफना

:: तमिलनाडु अंचल ::
प्रियंका भुरट, लता वया, ज्योति खिंवसरा

:: मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल ::
मोनिका मिन्नी, निधि बुच्चा, पायल सिंघी

:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::
करुणा चौरड़िया, प्रियंका कोटड़िया, तनु सिंघवी

:: बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल ::
संतोष बैद, रोजी सेठिया, स्नेहलता भूरा

:: पूर्वोत्तर अंचल ::
पूजा दफ्तरी, राखी सेठिया, निशा पारख

:: दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तर प्रदेश अंचल ::
रेखा खिंवसरा, पूजा छाजेड़, ललिता सुराणा

विशेष :- साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम की आगामी गतिविधि '**Sustainable Living - जैन तत्त्व के अपरिग्रह सिद्धांत**' पर आधारित है, जो कि विशेषतः बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक उड़ीसा अंचल के लिए आयोजित की जानी संभावित है।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	तीर्थंकरों का स्वरूप इतिहास	अर्जुंदा	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
2.	आहारक लब्धि, शरीर का आविष्कार, अध्यात्म की जानकारी, समवसरण, बड़ा कौन	दल्लीराजहरा	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
3.	अक्षर ज्ञान	धमतरी	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.
4.	आओ जुड़े सिद्धांतों से, आओ लोक की सैर करें	गुंडरदेही	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
5.	पाँच ज्ञान का थोकड़ा, उपयोग का थोकड़ा, ज्ञान लब्धि का थोकड़ा, सिद्धों का वर्णन, नारकी का वर्णन, लेश्याओं का वर्णन, कालचक्र व आचार्यों का जीवन परिचय, Good Vibes, Define your life in Jainology	खैरागढ़	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
6.	सामायिक सूत्र, आवश्यक सूत्र, जैन सिद्धांत बत्तीसी, बारह व्रत, संथारा, संकल्प सूत्र, नारी शक्ति	राजनांदगाँव	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.
7.	गमक का थोकड़ा	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.
8.	तीर्थंकर के 34 अतिशय	परपोड़ी	साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.
9.	पाँचवें आरे का लक्षण	धमधा	साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.

एक अनूठा प्रयास

ज्ञान-ध्यान को बढ़ाने के लिए **महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल** में जैन सिद्धांत बत्तीसी पर आधारित प्रतियोगी परीक्षा महिला मंडल द्वारा आयोजित की गई, जिसमें 200 के अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वालों को 20 ग्राम चाँदी का सिक्का, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों को 15 ग्राम चाँदी का सिक्का, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को 10 ग्राम चाँदी का सिक्का एवं चतुर्थ से पचासवें स्थान पर रहने वालों को 2 ग्राम चाँदी का सिक्का प्रोत्साहन स्वरूप दिया गया।

अनिर्वचनीय उपकार करने वाले तीर्थंकर भगवान ने अपनी आंतरिक शुद्धि से जो उपदेश प्रदान किया, वह उपदेश आज के भव्य मुमुक्षुओं के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कारण कि वर्तमान में जो जीवन प्राप्त है, उस जीवन की सार्थकता एवं विकासशीलता उस उपदेश से ही उपलब्ध हो सकती है। प्रत्येक आत्मा सुख की अभिलाषिणी है, पर सुख किस रीति से प्राप्त हो सकता है इसका ज्ञान बहुत कम मनुष्यों को है। जैसे पानी-पानी की रट लगाने वाला पानी का स्वरूप न समझने के कारण अन्य घासतेल आदि-आदि तरल पदार्थ यदि पी लेता है तो उससे उसकी प्यास बुझ नहीं सकती। ठीक इसी प्रकार अंतरनाद को मिटाने में यह भौतिकता, पंच विषयों में प्रवृत्ति समर्थ नहीं है। यदि इनसे अंतरलालसा की पूर्ति होती तो फिर मनुष्य सुख की दौड़ में इधर-उधर नहीं भटकता। क्योंकि यह तो आज के युग में प्रचुर है, फिर भी इन भौतिक तत्त्वों से शांति प्राप्त नहीं हो पा रही है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के नेश्रायरत सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची

दिनांक : 15-05-2024

1. मेवाड़ अंचल

क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	ठाणा	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नंबर
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.**	23	नानेश–रामेश समता भवन, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रोशन जी लोढ़ा 9414109331 आदित्य जी सेठिया 9829244305 महेश जी नाहटा 9406201351 7977370892	2	शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेश जी दुग्गड़ 9413045379
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)	9	अरिहंत कंस्ट्रक्शन (संजय जी डूंगरवाल), 395, आई–1 रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)	मुकेश जी पगारिया 9413286163 प्रकाश जी सुराणा 9414166014	4	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. (राजनांदगाँव वाले)	9	निलेश जी सोनगरा का निवास, सैंती, बापू नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990
5	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)	3	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेश जी कुदाल 9414683309 तखतमल जी लसोड़ 9166663441	6	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.	5	RSWM गेस्ट, मंडपम, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676
7	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा.	8	नानेश–रामेश समता भवन, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	कोमल जी रुंगलेचा 9414777428 महेंद्र जी खटोड़ 9414778210	8	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.(देशनोक वाले)	4	समता भवन, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676
9	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.	4	दिवाकर जैन स्थानक भवन, डूंगला, चित्तौड़गढ़ (राज.)	धनराज जी नागौरी 9413045963	10	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा.	6	समता भवन, आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रतनलाल जी पोरवाल 9461273789 सुशील जी नागौरी 9799999595
11	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा.	8	कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारस जी डागा 9413300423 अर्जुन जी लोढ़ा 8949942495	12	शासन दीपिका साध्वी श्री अरूणा श्री जी म.सा.	14	तुलसी 12/2 बी (अनिल जी ईनाणी सत्यनारायण जी ईनाणी), गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	रोशन जी लोढ़ा 9414109331 आदित्य जी सेठिया 9829244305 अनिल जी ईनाणी सत्यनारायण जी ईनाणी 9461930800
13	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा.	4	वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, भूपालसागर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	लक्ष्मीलाल जी बाफना 9468944269	14	साध्वी श्री विरक्ता श्री जी म.सा.	3	हेमराज जी धाकड़ का निवास, सुखवाड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	हेमराज जी धाकड़ 9001202353

15	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा.	3	होटल एयरपोर्ट गेस्ट हाउस, तखतपुरा से 2 किमी. आगे, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676	16	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा.	10	जैन धर्मशाला, स्टेशन के पास, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990
17	शासन दीपिका साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा.	3	जैन उपाश्रय भवन, निनोरा, प्रतापगढ़ (राज.)	भैरूलाल जी जैन 7568648422	18	शासन दीपिका साध्वी श्री पावन श्री जी म.सा.	3	मांगीबाई का निवास, तखतपुरा, भीलवाड़ा (राज.)	मांगीबाई 9079975911 दीपक जी बेताला 9462595676
19	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. (चिकारड़ा वाले)	4	शुभ लक्ष्मी मील, गठिलाखेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंत सिंह जी रांका 9829178431 धनपत जी नाहर 9414262235 दीपक जी बेताला 9462595676	20	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.	24	मदनलाल जी श्रीश्रीमाल का निवास, सेक्टर–4, गाँधी नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बलवंत जी बाघमार 9414395990
2. बीकानेर-मारवाड़ अंचल									
1	शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.	4	बोथरा निवास, सुराणा मोहल्ला, करणी माता मंदिर के पास, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	2	शासन दीपक श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा.	9	सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मोहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
3	शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा.	3	जैन जवाहर भवन, जैन चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789	4	शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा.	2	सुप्रीम एग्रो फैक्ट्री में, खारा, बीकानेर (राज.)	सुरेंद्र जी सेठिया 8302383399
5	शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा.	2	एस.एस. जैन सभा भवन, अबोहर, फाजिल्का (पंजाब)	पूनमचंद जी सुराणा 9351092281	6	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी म.सा.	11	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगडी चौक, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178
7	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा.	5	रामलाल जी बोथरा का निवास, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	8	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा.	3	समता भवन केंद्रीय कार्यालय, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
9	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्री जी म.सा.	9	समता भवन, बायतू, बाड़मेर (राज.)	महेंद्र जी चौपड़ा 9414756748	10	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.	3	श्री देव ढाबा, अर्पिया बोड़, पाली (राज.)	लक्ष्मण जी गुर्जर 9001140286 ललित जी कुकड़ा 6375127390 9414610121

11	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.	4	पीरदान जी कांतिलाल जी पटवा का निवास, भीनासर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673	12	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा.	3	रूपचंद जी मालू का निवास, पारख गेस्ट हाऊस के पास, भूरा चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	मदनलाल जी लूणिया 9413968297 बाबूलाल जी कांकरिया 9460452789
13	साध्वी श्री चितरंजना श्री जी म.सा.	6	महिला भवन, मरोठी सेठिया मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	राजेंद्र कुमार जी गोलछा 9571840310 मनोज जी पारख 9829131178	14	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री प्रभात श्री जी म.सा.	4	समता भवन, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)	अरूण जी चौपड़ा 9828426000
15	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री मैनासुंदरी श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री अभिप्सा श्री जी म.सा.	4	कोठारी भवन, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)	अरूण जी चौपड़ा 9828426000	16	शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.	4	रामेश रत्नम्, बोथरा चौक–2, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशल जी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमल जी सेठिया 9460172673
3. जयपुर-ब्यावर अंचल									
1	पर्यायज्येष्ठ श्री नरेंद्र मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री हेमगिरी मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. पर्यायज्येष्ठ श्री प्राणेश मुनि जी म.सा. शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा.	9	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477	2	शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा.	2	दीनदयाल जी नामा का निवास, नयागाँव भरनी, टोंक (राज.)	सुनील जी बम्ब 9414227645
3	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा.	3	कृष्णा रेजीडेंसी, फ्लैट नं. 205, जीआर–1, सुंदर सिंह भंडारी नगर, स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा.	7	कांकरिया डेलान, नयाबास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	विनयचंद जी रांका 9414008974 उत्तमचंद जी लोढ़ा 9352772477
5	शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा श्री जी म.सा.	3	प्राज्ञ भवन, बापू नगर, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	6	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)	3	पोरवाल भवन, हाउसिंग बोर्ड, सवाई माधोपुर (राज.)	पदम जी जैन 9667006756
7	साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा.	3	महावीर भवन, बारह गणगौर का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)	ज्ञानचंद जी मूथा 9414054971 अभय जी नाहर 9829165897 मुकेश जी जारोली 9351149600	8	साध्वी श्री चंद्रकला श्री जी म.सा.	5	जैन स्थानक भवन, नीमाज, ब्यावर, अजमेर (राज.)	महावीर जी कोठारी 9460821478

4. मध्य प्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, काटजू नगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	2	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूर कँवर जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (पिपलिया मंडी)	7	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली नं. 2, नई आबादी, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)	3	116, शांतिलाल जी कांठेड़ का निवास, टीचर्स कॉलोनी, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345	4	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा.	4	सागर नमकीन वालों का निवास, वेद व्यास कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717
5	शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा.	7	वर्धमान जैन स्थानक भवन, मोड़ी, नीमच (म.प्र.)	पीयूष जी नपावलिया 9900307121	6	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता जी म.सा.	19	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमार जी तातेड़ 9826033624 ललित जी दुग्गड़ 9827013200
7	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.	4	वर्धमान जैन स्थानक भवन, झारड़ा, मंदसौर (म.प्र.)	नरेंद्र जी जैन 9174063177	8	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले)	3	समता भवन, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
9	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा श्री जी म.सा.	4	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शन जी पिरोदिया 9425103697 दशरथ जी बाफना 9425103717	10	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.	4	डॉ. निर्मल जी जैन का निवास, बलवाड़ी, बड़वानी (म.प्र.)	डॉ. निर्मल जी जैन 9424054624
11	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभा श्री जी म.सा.	6	अर्पित जी कासलीवाल का निवास, गुजरी, धार (म.प्र.)	अर्पित जी कासलीवाल 9977771000	12	शासन दीपिका साध्वी श्री साधना श्री जी म.सा.	4	नाथूलाल जी पाटीदार का निवास, कनावटी, नीमच (म.प्र.)	नाथुलाल जी पाटीदार 9827095911
13	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला श्री जी म.सा.	5	समता भवन, जवाहर पथ, जावरा, रतलाम (म.प्र.)	अशोक जी छजलाणी 9424591173 मनीष जी पोखरना 9893482863	14	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा.	3	महावीर भवन, जामुनियाकलां, नीमच (म.प्र.)	कमलेश जी नागौरी 8815305253
15	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (छत्तीसगढ़ वाले)	4	महावीर भवन, जमुनिया कलां, नीमच (म.प्र.)	कमलेश जी नागौरी 8815305253	16	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा.	3	प्रदीप जी बोड़ावत का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकिन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोक जी मोगरा 9329444345
17	शासन दीपिका साध्वी श्री करूणा श्री जी म.सा.	4	महावीर भवन, सरवानिया महाराज, नीमच (म.प्र.)	जतनलाल जी फाफरिया 7898794927	18	साध्वी श्री चारित्रप्रभा श्री जी म.सा.	3	शेखर जी डूंगरवाल का निवास, कालाखेत, मंदसौर (म.प्र.)	बाबूलाल जी पितलिया 9425369562 नरेंद्र कुमार जी चौधरी 9425369547

19	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा.	3	ताराचंद जी यादव का निवास, बकवाड़ी, बड़वानी (म.प्र.)	प्रेमचंद जी सुराणा 8839314235 प्रमोद जी यादव 6260976001	20	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.	3	शासकीय माध्यमिक विद्यालय, तांदलादरा, झाबुआ (म.प्र.)	राजेश जी मेहता 9425972776
21	शासन दीपिका साध्वी श्री सुऋद्धि श्री जी म.सा.	3	जैन दिवाकर भवन, ढोढर, रतलाम (म.प्र.)	यतिंद्र जी बरमेचा 9039716957	22	साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा.	3	जैन मंदिर उपाश्रय भवन, चापड़ा, देवास (म.प्र.)	ललित जी जैन 9893983433
5. छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.	2	धूलसिंह जी साहू का निवास, मोखा, बालोद (छ.ग.)	धूलसिंह जी साहू 9977562195 विजय जी मिश्रा 9826660982	2	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.	2	समता भवन, कंलगपुर, बालोद (छ.ग.)	अमित जी देशलहरा 8435210000
3	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.	10	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	राजेंद्र जी श्रीश्रीमाल 9300330075 प्रदीप जी बोथरा 9424119340	4	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.	4	कैवल्यधाम जैन मंदिर, कुम्हारी, रायपुर (छ.ग.)	संजय जी चौपड़ा 9827144296
5	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा श्री जी म.सा.	4	पुखराज जी ओमप्रकाश जी कांकरिया का निवास, कांकरिया सदन, कैलाश नगर, राजनांदगाँव (छ.ग.)	मदनजी पारख 9425240291 9770352550	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.	5	जैन स्थानक भवन, सदर बाजार, धमतरी (छ.ग.)	दिनेश जी कोटड़िया 9329699236
6. कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	2	नवरतन जी गांधी का निवास, नाचाराम, हैदराबाद (तेलंगाना)	विकास जी पितलिया 9246296435 विजय जी कटारिया 9848027457	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा.	4	आराधना भवन, केशवपुरम्, हुबली (कर्ना.)	संजय जी कटारिया 9880538484 प्रकाश जी कटारिया 9448061288
3	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.	4	समता भवन, विजयनगर, बेंगलुरु (कर्ना.)	सोहनलाल जी सिपानी 8884710687	4	साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.	4	सरकारी स्कूल, देवलापुर, बीजापुर (कर्ना.)	सुरेश जी बड़ीगेर 9620340565 आनंद जी बोरा 9448802170
5	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.	4	दिल्ली पब्लिक स्कूल, नाचाराम सिकंदराबाद, हैदराबाद (तेलं.)	विकास जी पितलिया 9246296435 विजय जी कटारिया 9848027457					
7. तमिलनाडु अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.	3	जैन स्थानक भवन, अशोक नगर, टी.नगर, चेन्नई (तमि.)	विकास जी कांकरिया 9941209097					
8. मुंबई-गुजरात अंचल									
1	शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा.	3	समता भवन, वजीरा नाका, ओस्तवाल टॉवर, बोरीवली (वेस्ट), मुंबई (महा.)	शकेंद्र जी छाजेड़ 9869651177	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	8	3-ए, नवयुग सोसायटी, अम्बावाड़ी, अहमदाबाद (गुज.)	मोहन जी बोथरा 9825581229 विकास जी ललवानी 9327715892

3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा.	4	बद्रीलाल जी पितलिया का निवास, आनंद महल रोड, अड़ाजन, सूरत (गुज.)	बद्रीलाल जी पितलिया 9374711931 9898698250					
9. महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल									
1	शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा.	2	जैन स्थानक भवन, अमलनेर, जलगांव (महा.)	जितेंद्र जी पारख 9422281359	2	शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा.	2	प्रकाश जी सकलेचा का निवास, वल्लभ नगर, धुलिया (महा.)	रमेश जी सकलेचा 9822197130
3	शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा.	2	माली का निवास, उंटावद, धुलिया (महा.)	निलेश जी जैन 9881059522	4	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा श्री जी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.	3	महावीर भवन, मंडाना, नंदुरबार (महा.)	प्रेमकुमार जी बाफना 7272007474 संचालाल जी कोठारी 9421614258
5	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.	3	जैन उपाश्रय भवन, सावनेर, नागपुर (महा.)	दीपक जी सोनी 9822471907	6	शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.	4	महावीर भवन, विटनेर, जलगाँव (महा.)	विजय जी जैन 8855881188
7	शासन दीपिका श्री समीक्षणा श्री जी म.सा.	3	पंचायत भवन, नीपाणा, बुलढाणा (महा.)	मंजू जी ओस्तवाल 8329929544	8	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.	3	सोपीनाथ महाराज संस्थान, अटाली, बुलढाणा (महा.)	नितिन जी झांबड़ 8888515458 अमरचंद जी बेगानी 9823525756
9	शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.	3	स्वाध्याय भवन, गणपति नगर, जलगाँव (महा.)	निलेश जी पगारिया 9329421008	10	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमेरु श्री जी म.सा.	3	विहार धाम परिसर, कोलारी, बुलढाणा (महा.)	नितिन जी झांबड़ 8888515458 अमरचंद जी बेगानी 9823525756
10. बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.	4	गणपति पैलेस, बी–ब्लॉक, लेक टाउन, कोलकाता (प.बं.)	विनोद जी डागा 9331018261	2	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.	4	पंचायत भवन, नयाहाट, धुबड़ी (असम)	हंसराज जी लुणावत 9913692416 चंपालाल जी चौरड़िया 7002424536
12. दिल्ली-पंजाब-हरियाणा एवं उत्तरी अंचल									
1	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.	4	ए–2, साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली	सुजीत जी पारख 9818876355	2	शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.	3	जैन मंदिर परिसर, जैननगर, प्रेमपुरी, मेरठ (उ.प्र.)	प्रवीण जी जैन 9634224651 अमित जी जैन 8909813757

आत्मा भले ही स्खलित होकर कर्मों से आवेष्टित हो गई है, पर यदि शक्ति का ऊर्ध्वारोहण हो जाए तो आत्मा पाप कर्मों से मुक्त हो सकती है। सिद्धांत की यह बात व्यवहार में लाकर देखें तो स्वत: ही विश्वास हो जाएगा। संतों के आदर्श इसे प्रमाणित करते हैं। गुरु के सान्निध्य का लाभ मिले तो बहुत अच्छी बात है अन्यथा तन्मय योग का सहारा लिया जा सकता है। व्यक्ति और आत्मा के कल्याण का इससे अच्छा अन्य कोई मार्ग नहीं है। **– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

श्रमणोपासक के लिए कोरियर सुविधा प्रारंभ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक डाक द्वारा प्राप्त नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने की शिकायतें अनवरत प्राप्त हो रही हैं। इस समस्या के निवारण हेतु सभी सर्किल के पोस्ट मास्टर जनरल तक कार्यालय द्वारा शिकायतें दर्ज करवाई गईं, फिर भी डाक विभाग द्वारा उचित समाधान नहीं हो पा रहा है। इस असुविधा को ध्यान में रखते हुए संघ द्वारा पाठकों के हित में कोरियर सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। जो भी सदस्य इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं, वे **WhatsApp No. 9799061990** पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं अथवा QR Code स्कैन कर अपनी जानकारी Google Form द्वारा भरकर हमें भिजवाने का कष्ट करें।

-श्रमणोपासक टीम

सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र '**श्रमणोपासक**' का प्रकाशन विगत 61 वर्षों से निरंतर हो रहा है। पाठकों के सहयोग व पूर्वाचार्यों के आशीर्वाद से हजारों की तादाद में प्रतियाँ पूरे भारतवर्ष में ज्ञानार्जन हेतु पाठकों के पास पहुँचाई जाती हैं। विभिन्न अवसरों पर दी जाने वाली भेंट श्रमणोपासक में कलर और ब्लैक एंड व्हाइट में प्रकाशित की जाती है। समय की आवश्यकता को देखते हुए भेंट दरों में कुछ वृद्धि की गई है, जिसकी जानकारी केंद्रीय कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। 1 अप्रैल 2024 से प्रारंभ होने वाले आगामी वित्तीय वर्ष से नवीन दरें लागू होंगी। आप सभी पाठकों का सहयोग अपेक्षित है।

-श्रमणोपासक टीम

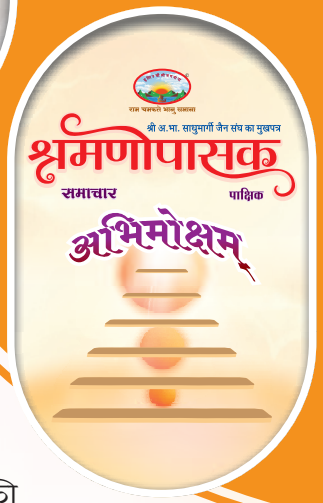
साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी एवं अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 से अधिक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन एवं मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ पर जाकर एवं मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

रचनाएँ आमंत्रित





आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम उद्देश्य'** विषय पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

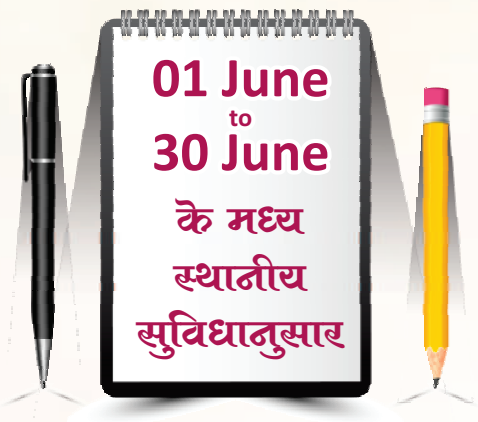




स्कूल चलें हम...

आओ परस्पर प्रेम बढ़ाएँ।
यतना से स्थानक सजाएँ।।

- वंदना
- 5 नवकार मंत्र
- धम्म सद्धा चालीसा
- Four Periods
- Lunch



घर में उपलब्ध सामान जो साथ ला सकते हैं।

:: स्कूल बेग ::

आसन, मुँहपत्ती, पूँजनी, पेन, स्केल, रबर, पेंसिल, ड्रॉइंग कलर व शीट्स, होमवर्क डायरी (जिसमें मधुरम गीतम के 8 भजन लिखे थे)।

:: स्कूल बोतल ::

गरम या धोवन पानी।

:: स्कूल टिफिन ::

विद्यार्थी जितना भोजन लेकर जाता है।



Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1



सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2



सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS



WWW.SIPANIMARBLES.COM

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh